

Recommended for Matriculation classes
by the Patna University.

# प्रवेशिका-हिन्दी-व्याकरण ।



लेखक—
रामदहिन मिश्र ।

C Hind

G.H

सुबोध-ग्रन्थमाला—ग्रन्थ ५

# प्रवेशिका-हिन्दी-व्याकरण ।

[ प्रचलित अंग्रेजी व्याकरण के ढंग पर ।

लेखक

पं० रामदहिन मिश्र ।

प्रकाशक

ग्रन्थमाला-कार्यालय

बाँकीपुर ।



द्वितीय संस्करण ] १९१८ [ मूल्य १) रुपया ।

Printed by G. K. Gurjar, at Sri Lakshmi Narayan
Press, Jata[illegible]r Benares City.

# वक्तव्य ।

उच्च कक्षा के स्कूलों में पठन-पाठन के लिये एक हिन्दी-व्याकरण की बड़ी आवश्यकता थी। क्योंकि आजकल हिन्दी के छोटे बड़े जितने व्याकरण प्रचलित हैं उनका पढ़ाना प्राइमरी स्कूलों में समाप्त होजाता है। अतः मैंने प्रवेशिकादि-परीक्षार्थियों के लिये यह व्याकरण लिखकर प्रस्तुत किया है। मैं कह नहीं सकता कि इससे कहाँ तक उपर्युक्त आवश्यकता की पूर्ति होगी।

बहुत से लोग इसे देखकर यह कह सकते हैं कि इसमें तो वे ही पुराने विषय लिखे गये हैं जो और और व्याकरणों में भी हैं। ऐसे उदार महाशयों से मेरा नम्रनिवेदन यह है कि कोई ऐसा व्याकरण नहीं हो सकता जिसमें एकदम सभी विषय नये ही हों। छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा कोई व्याकरण क्यों न हो, उसमें विषय एक ही से रहेंगे। किन्तु, उनके प्रकार और विचार नये हो सकते हैं। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो इसमें भी नवीनता और विशेषता अवश्य दीख पड़ेगी।

मैंने प्रारम्भिक पाठशालाओं की नूतन-पाठ्य-प्रणाली पर एक छोटा सा हिन्दी-व्याकरण लिखा है जिसे विहार की टेक्स्टबुक कमीटी ने पाठ्य-पुस्तकों में निर्वाचित किया है।

Printed by G. K. Gurjar, at Sri Lakshmi Narayan
Press, Jata[illegible]r Benares City.

# वक्तव्य ।

उच्च कक्षा के स्कूलों में पठन-पाठन के लिये एक हिन्दी-व्याकरण की बड़ी आवश्यकता थी। क्योंकि आजकल हिन्दी के छोटे बड़े जितने व्याकरण प्रचलित हैं उनका पढ़ाना प्राइमरी स्कूलों में समाप्त होजाता है। अतः मैंने प्रवेशिकादि-परीक्षार्थियों के लिये यह व्याकरण लिखकर प्रस्तुत किया है। मैं कह नहीं सकता कि इससे कहाँ तक उपर्युक्त आवश्यकता की पूर्ति होगी।

बहुत से लोग इसे देखकर यह कह सकते हैं कि इसमें तो वे ही पुराने विषय लिखे गये हैं जो और और व्याकरणों में भी हैं। ऐसे उदार महाशयों से मेरा नम्रनिवेदन यह है कि कोई ऐसा व्याकरण नहीं हो सकता जिसमें एकदम सभी विषय नये ही हों। छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा कोई व्याकरण क्यों न हो, उसमें विषय एक ही से रहेंगे। किन्तु, उनके प्रकार और विचार नये हो सकते हैं। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो इसमें भी नवीनता और विशेषता अवश्य दीख पड़ेगी।

मैंने प्रारम्भिक पाठशालाओं की नूतन-पाठ्य-प्रणाली पर एक छोटा सा हिन्दी-व्याकरण लिखा है जिसे विहार की टेक्स्टबुक कमीटी ने पाठ्य-पुस्तकों में निर्वाचित किया है।

बहुतों का विचार था कि इसी ढंग पर हिन्दी का बड़ा व्याकरण लिखा जाय, पर वह ढंग मुझे पसन्द नहीं आया। क्योंकि बच्चों के लिये जैसा वह ढंग उपयुक्त है वैसा मेरे विचार से बड़ों के लिये नहीं। और, पुराना भी ढंग मुझे पसन्द नहीं आया। इस से मैंने इसे प्रचलित अंग्रेजी व्याकरण के ढंग पर लिखा है। हिन्दी में यह मेरा ढंग कोई नया नहीं है। इस तरह की भी एक दो छोटी हिन्दी व्याकरण की पुस्तकें निकल चुकी हैं।

यों तो इस व्याकरण के सभी विषय सामयिक प्रचलित सभी व्याकरणों की अपेक्षा विस्तार के साथ लिखे गये हैं तथापि विभक्तियों के प्रयोग, वाक्यरचना, कृदन्त, समास, तद्धित आदि के प्रकरण कुछ बढ़ा करके लिखे गये हैं। इसमें प्रत्येक विषय के नीचे अभ्यास दिये हुए हैं। यदि अध्यापक अभ्यासगत प्रश्नों को लड़कों से पूछें और उनसे उचित उत्तर पाने की चेष्टा करें तो प्रत्येक विषय का सहज में बोध होना बहुत सम्भव है। अध्ययनशील विद्यार्थी भी स्वयं यह काम कर सकता है। इसके छन्दप्रकरण में प्रायः प्रचलित सब प्रकार के सोदाहरण छन्द आगये हैं। इस में जहाँ कहीं मुख्यतः मतभेद है वहाँ भिन्न २ व्याकरणों के मत उद्धृत कर दिये गये हैं। उदाहरणवाले अधिकांश वाक्य भी जहाँ तहाँ से उद्धृत ही हैं।

हिन्दीशब्दों के साधुत्व में बड़ी गड़बड़ है। एक व्याकरण में 'बनावट' शब्द कृदन्त और तद्धित दोनों के उदाहरण में है और दोनों में 'वट' प्रत्यय से ही बनाया गया है। यदि बनना धातु से 'वट' प्रत्यय करके यह शब्द बनाया जाय तो कृदन्त हो सकता है पर तद्धितान्त नहीं। क्योंकि 'बना'

कोई व्यवहृत शब्द नहीं जिससे 'वट' प्रत्यय कर के तद्धितान्त शब्द बनाया जा सके। पर तद्धितान्त बनाने के लिये कोई २ वैयाकरण 'बनाव' शब्द से 'ट' प्रत्यय करते हैं। कितने वैयाकरण कसेरा, सुनार आदि शब्दों को कांस्यकार, स्वर्णकार आदि के अपभ्रंश मानते हैं और कितने काँसा और सोना शब्द से 'रा' और 'र' प्रत्यय कर के तद्धितान्त शब्द बनाते हैं। ऐसे मत-भेद-बहुल विषयों में मैंने प्राचीनों का ही पथानुसरण किया है।

मैंने इस पुस्तक के लिखने के पूर्व आज तक के प्रायःसभी छोटे बड़े हिन्दी व्याकरणों को देखा है। कई वर्षों के अपने अनुभव और साधन-संग्रह से भी काम लिया है। पं० केशवराम भट्ट कृत हिन्दी-व्याकरण, भाषाभास्कर, भाषाप्रभाकर, भाषा-वाक्य-पृथक्करण आदि व्याकरणों से मुझे बड़ी सहायता मिली है। अंग्रेजी में लिखे हुए हिन्दी के एक दो व्याकरणों और अंग्रेजी बँगला के भी एक दो व्याकरणों को उपयोग में लाया हूँ। एतदर्थ इन व्याकरणों के लेखकों का मैं बड़ा ही ऋणी हूँ।

मुझे जहाँ तक विदित है, अब तक इतना बड़ा हिन्दी का व्याकरण हिन्दी में नहीं निकला है। यह कहना मेरे अधिकार के बाहर की बात है कि यह व्याकरण जैसा आकार में बड़ा है वैसा ही गुण में भी गुण का विचार अध्यापक मण्डली पर ही निर्भर है। छपने के समय पुस्तक पढ़ कर एक दो विद्वानों ने जो उदार विचार प्रकट किया है उससे विदित होता है कि इसमें कुछ गुण की भी बू-बास है। मैं केवल यह कह सकता हूँ कि शीघ्रता में इस व्याकरण को सुगम और उत्तम बनाने की यथाशक्य पूरी चेष्टा की गयी है।

पुस्तक के छपाने का का काम बड़ी शीघ्रता में हुआ है। इससे कई तरह की त्रुटियों का इसमें रह जाना बहुत सम्भव है। साधारण अशुद्धियों के लिये एक छोटा सा संशोधन पत्र लगा दिया गया है। कुछ त्रुटियों का निराकरण संशोधन-पत्र में नहीं हो सका है। इसके द्वितीय संस्करण में आवश्यक हेर फेर के साथ सारी त्रुटियों को दूर कर देने की पूरी पूरी चेष्टा की जायगी। किमधिकं विज्ञेषु।

ग्रन्थमाला-मालाकार,—

राम दहिन मिश्र।

## द्वितीय संस्करण।

इस संस्करण में पुस्तक का सपरिश्रम संशोधन और यथास्थान परिवर्द्धन और परिवर्तन भी कर दिया गया है। इस बार पुस्तक के सारे दोषों को दूर करने की पूरी २ चेष्टा की गयी है। इत्यलम्।

राम दहिन मिश्र।

# सूचीपत्र ।

[ प्रत्येक विषय के नीचे अभ्यास दिया हुआ है। ]

विषय पृष्ठाङ्क

॥ श्रीः ॥

# प्रवेशिका-हिन्दी-व्याकरण।

## परिचय।

'भाषा'[1] उसे कहते हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के विचारों को स्पष्ट रूप से प्रकाश करता है।

अपने विचार दो[2] प्रकार से प्रकाशित किये जा सकते हैं— एक तो 'बोलकर' और दूसरे 'लिखकर'।

बोलने की भाषा या बोली ध्वनि ( आवाज ) से बनती है और लिखने की भाषा या लिपि ( लिखना ) 'अक्षरों' से बनती है।

ध्वनि और अक्षरों से 'शब्द' बनते हैं और दो चार शब्दों ( पद और क्रिया ) के पूर्णार्थ-बोधक होने से 'वाक्य'[3]।

---

१ 'भाषा' शब्द से मतलब यहाँ हिन्दी भाषा से है। क्योंकि, भाषा शब्द हिन्दी में रूढ़ समझा गया है इसीसे अन्यान्य बोली जानेवाली अंगरेजी आदि भाषायें भाषा होने पर भी केवल भाषा शब्द से नहीं जानी जातीं।

२ संकेत वा इशारे से भी अपने विचार प्रकाशित किये जा सकते हैं जैसे कि गूँगे करते हैं। पर, उनका विचार स्पष्ट प्रकट नहीं होता। इसकी गणना व्याकरण में नहीं है।

३ यहाँ यह भी जान लेना चाहिये कि जिन पदों के जोड़ने से

व्याकरण के बिना जाने किसी भाषा का शुद्ध २ बोलना या लिखना अच्छी तरह नहीं आ सकता ।

'व्याकरण' उस विद्या को कहते हैं जिसके जानने से भाषा के शुद्ध अशुद्ध होने का ज्ञान होता है ।

हिन्दी भाषा के व्याकरण से हिन्दी का शुद्ध २ लिखना और बोलना आता है ।

व्याकरण के मुख्य तीन[1] विभाग हैं—वर्ण-विचार, शब्द-विचार और वाक्य-विचार[2] ।

( क ) 'वर्णविचार' में अक्षरों के आकार, उच्चारण और मिलाने की रीति बताई जाती है ।

( ख ) 'शब्दविचार' में शब्दों के भेद, अवस्था और बनावट का वर्णन रहता है ।

( ग ) 'वाक्यविचार' में शब्दों से वाक्य बनाने का ढंग सिखलाया जाता है ।

---

वाक्य बनता है उनमें एक क्रिया रहना जरूरी है और उन पदों में उचित सम्बन्ध, आकांक्षा (परस्पर का लगाव) और आसक्ति (समीप सम्बन्ध) भी आवश्यक है ।

१ अंगरेजी में छन्द–विचार (Prosody) भी व्याकरण का चौथा भाग माना जाता है, पर संस्कृत में नहीं । हिन्दी व्याकरण में छन्द–विचार लिखने की चाल है । पर, व्याकरण-भाग में उसकी गणना नहीं होती ।

२ व्याकरण का व्युत्पत्त्यर्थ "जिससे शब्द सिद्ध किये जाँय" यह अर्थ होता है । किन्तु यहां व्याकरण शब्द का प्रयोग उस अर्थ में नहीं है ।

अभ्यास।

भाषा किसे कहते हैं ? अपने विचार दूसरों पर कैसे प्रकाशित किये जा सकते हैं ? व्याकरण किसे कहते हैं ? हिन्दी-व्याकरण पढ़ने से क्या लाभ है ? व्याकरण के मुख्य भाग कितने हैं ? वर्ण-विचार किसे कहते हैं ? शब्द-विचार जानने से क्या लाभ होता है ?

---

# वर्णविचार (Orthography)

'वर्ण' या 'अक्षर' शब्द के उस टुकड़े का नाम है जिसका और टुकड़ा नहीं हो सकता। जैसे 'धन' का ध्+अ=ध, न्+अ=न विवरण है। इसमें अब ध्, न् या अ् का टुकड़ा हो नहीं सकता।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं—स्वर या व्यञ्जन। इन्हीं दोनों के समूह वा श्रेणी को 'वर्णमाला' कहते हैं। हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है उन्हें 'देवनागरी' हिन्दी वा नागरी कहते हैं।

हिन्दी वर्णमाला में ४४ मूल अक्षर हैं। इसमें ११ स्वर और ३३ व्यञ्जन हैं।

जो अक्षर अपने से अर्थात् बिना सहायता के बोले जा सकते हैं वे 'स्वर' कहे जाते हैं। जैसे अ, इ, उ, इत्यादि।

जो अक्षर स्वर की सहायता के बिना नहीं बोले जा सकते अर्थात् जिनके पीछे या आगे स्वर अवश्य होना चाहिये, उन्हें 'व्यञ्जन' कहते हैं। जैसे—क्+अ=क, ध्+अ+व्=धव् इत्यादि। यदि 'क' में से 'अ' निकाल लिया जाय तो केवल

'क्' का और 'धव्' में से 'ध' निकाल लेने से स्वरहीन 'व्' का उच्चारण नहीं हो सकता।

व्यञ्जनों का स्पष्ट उच्चारण स्वर के योग से होता है। जो व्यञ्जन स्वरसहित रहते हैं उन्हें 'सस्वर' और जो व्यञ्जन स्वरहीन रहते हैं उन्हें हल् या खण्डित कहते हैं। हल् का चिह्न ् ऐसा होता है जो अक्षर के साथ रहता है। सब व्यञ्जन हलन्त हैं। हल् व्यञ्जन के आगे कोई स्वर या सस्वर व्यञ्जन हो तो हल् प्रायः उसके साथ मिल जाता है।

वर्णों के आगे "कार" प्रत्यय जोड़ने से खास उसी अक्षर का बोध होता है। जैसे—'अकार' 'मकार' इत्यादि।

वर्ण-विचार में प्रधानतः स्वर, व्यञ्जन और सन्धि का विचार होता है।

अभ्यास।

अक्षर किसे कहते हैं ? वर्णमाला क्या है ? स्वर और व्यञ्जन की पहचान क्या है ? सस्वर और हल् वर्ण कौन कहाते हैं ? वर्ण-विचार में कौन २ विचार हैं।

## स्वर। (Vowels)

हिन्दी में 'मूलस्वर' अ, इ, उ, ऋ चार हैं और 'दीर्घस्वर' आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ये सात हैं। इन सात दीर्घ स्वरों में दो दो मात्रायें मिली हुई हैं, इससे इन्हें 'संयुक्त-स्वर' और 'सन्ध्यक्षर' भी कहते हैं। जैसे—अ+अ=आ, अ+इ=ए इत्यादि। आ, ई, ऊ इनमें समान स्वर और ए, ऐ, ओ, औ में विभिन्न स्वर हैं। ॠ, ऌ, ॡ इन तीन स्वरों का हिन्दी में प्रायः व्यवहार नहीं होता।

'अ'कार के बोलने में जितना समय लगता है उसे ही 'मात्रा' कहते हैं। मात्रा का अर्थ परिमाण ( अन्दाज़ा ) है।

जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा होवे उसे 'ह्रस्व' वा 'एकमात्रिक' कहते हैं। जैसे, अ, इ, उ, ऋ।

जिस स्वर के बोलने में एक मात्रा का दूना काल लगे उसे 'द्विमात्रिक' या 'दीर्घ' कहते हैं। जैसे, आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ।

जिस स्वर के उच्चारण में ह्रस्व के उच्चारण से तिगुना काल लगे उसे 'त्रिमात्रिक' वा 'प्लुत' कहते हैं। हिन्दी में इसका व्यवहार बहुत कम होता है। चिल्लाने या पुकारने में प्लुत बोला जाता है। जैसे बाप रे बाप! मोहना रे!

जब स्वर व्यञ्जनों में मिलाये जाते हैं तब उनके असली रूपों का लोप हो जाता है और उनके स्थान में भिन्न २ चिन्ह बन जाते हैं। अकार के मिलने से व्यञ्जन में कोई परिवर्तन नहीं होता। उनका केवल हल् उड़ जाता है। जैसे—

| आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ | ॠ | ए | ऐ | ओ | औ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ा | ि | ी | ु | ू | ृ | ॄ | े | ै | ो | ौ |

### अभ्यास।

मूल स्वर और दीर्घ स्वर कितने हैं और सब मिल कर कितने? किन स्वरों का प्रायः हिन्दी में प्रयोग नहीं होता? मात्रा किसे कहते हैं? ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों में क्या भेद है?

## व्यञ्जन। ( Consonants )

सब व्यञ्जन मुख्यतः 'स्पर्श', 'अन्तस्थ' और 'ऊष्म' तीन भागों में बँटे हैं। स्पर्श व्यञ्जनों के पाँच वर्ग हैं। 'कवर्ग' आदि के कहने से उस वर्ग के पाँचों वर्णों का बोध होता है। ऐसे ही अन्तस्थ और ऊष्म के भी। जैसेः—

क ख ग घ ङ—कवर्ग । ⎫
च छ ज झ ञ – चवर्ग । ⎪
ट ठ ड ढ ण—टवर्ग । ⎬ स्पर्श
त थ द ध न—तवर्ग । ⎪
प फ ब भ म—पवर्ग । ⎭
य र ल व —अन्तस्थ
श ष स ह – ऊष्म

व्यञ्जनों के दो भेद और हैं—एक सानुनासिक और दूसरा निरनुनासिक ।

मुख और नासिका से जिनका उच्चारण होता है उन्हें 'सानुनासिक' और जो केवल मुख से बोले जाते हैं उन्हें 'निरनुनासिक' कहते हैं ।

प्रत्येक वर्ग के पाँचवें वर्ण ङ ञ ण न म सानुनासिक कहाते हैं । सानुनासिक के चिन्ह ं ँ हैं पर निरनुनासिक का कोई चिन्ह नहीं है ।

अनुस्वार, अर्द्धानुस्वार वा चन्द्रबिन्दु और विसर्ग भी एक प्रकार के व्यञ्जन हैं । अनुस्वार (ँ) का उच्चारण प्रायः हल् मकार या नकार के समान सौर विसर्ग का (:) उच्चारण हकार के समान होता है । जैसे—हंस, दुःख इत्यादि । इनको कोई २ वैयाकरण स्वर और कोई २ व्यञ्जन मानते हैं । पर यथार्थतः ये दोनों ही नहीं हैं । संस्कृत में अयोगवाद कहलाते हैं ।

क्ष त्र ज्ञ ये संयुक्ताक्षर हैं, क्योंकि क्+ष् के संयोग से क्ष, त्+र् के संयोग से त्र, और ज्+ञ् के संयोग से ज्ञ होता है। परन्तु लिखावट में इनकी मिलावट ऐसी होती है कि इनका कुछ भी रूप दिखाई नहीं पड़ता । इसीलिये कितने लोग इन्हें भी वर्णमाला ही में गिनते हैं ।

व्यञ्जनों में 'र' की लिखावट बड़ी विचित्र होती है। जब 'र' उ ऊ के साथ मिलता है तब उसका रूप 'रु' 'रू' के ऐसा, जब किसी व्यञ्जन के साथ वह मिलता है तब उसका रूप ત્ર, प्र के ऐसा और जब वह रेफ हो कर किसीके साथ मिलता है तब उसका रूप 'सूर्य' ऐसा हो जाता है। कितने मूल अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाने से भिन्न २ अक्षर बनते हैं। जैसे, ड़, ढ़, अरबी फारसी आदि शब्दों के ठीक २ उच्चारण के लिये भी अक्षरों के नीचे बिन्दी लगाते हैं। जैसे, अज़्दहा, तक़दीर, बग़ावत, इन्साफ़। इनका उच्चारण जान लेना चाहिये।

अभ्यास।

व्यञ्जनों के मुख्य कै भेद हैं? वर्ग कितने हैं? अन्तस्थ और उष्म वर्ण कौन २ हैं? व्यंजनों के दूसरे प्रकार के भेद कौन २ हैं? सानुनासिक वर्ण कौन २ हैं? अनुस्वार और विसर्ग के उच्चारण किन अक्षरों के समान होते हैं? क्ष, त्र, ज्ञ, किन २ अक्षरों के संयोग से बने हैं? 'र' की लिखावट कितने प्रकार की होती है?

## संयुक्त व्यञ्जन।

जब दो अक्षरों के बीच में कोई स्वर नहीं रहता तब उनका संयोग होता है। जैसे-लम्बा, थप्पड़, आदि।

हिन्दी भाषा में भी संयुक्ताक्षर बहुत लिखे जाते हैं। बहुधा दो ही अक्षर संयुक्त होते हैं, परन्तु कभी २ तीन अक्षर भी संयुक्त होते हैं। जैसे—चक्र, किन्तु, मन्त्र आदि।

संयोग में जो अक्षर पहले बोले जाते हैं वे पहले और जिनका उच्चारण पीछे होता है उन्हें पीछे लिखते हैं। पहले के अक्षर आधे और अन्त के अक्षर पूरे लिखे जाते हैं। जैसे

प्यास, स्वर, कम्बल आदि। कुछ अक्षरों के उत्तरार्द्ध आधे लिखे से जान पड़ते हैं जैसे कन्हैया, ब्राह्मण, पकान्न, भद्दा आदि।

ङ छ ट ठ ड ढ ये छ व्यञ्जन ऐसे हैं जो संयोग के आदि में होने पर भी पूरे ही पूरे लिखे जाते हैं। जैसे गट्टर, टिड्डी हड्डा, आदि।

सानुनासिक[1] व्यञ्जन अपने ही वर्ग के अक्षरों से युक्त रहते हैं और दूसरे वर्गों के अक्षरों के साथ प्रायः उनका अनुस्वार हो जाता है। जैसे पङ्कज, चञ्चल, घण्ट, सन्त, महन्थ, पम्पासर, संयम, संहार इत्यादि।

कितने अक्षर संयुक्त होने पर नीचे ऊपर लिखे जाते हैं। जैसे, छक्का, बच्चा, गफ्फा आदि। कितने अक्षर संयुक्त होने पर संकेत मात्र के रह जाते हैं। जैसे—महत्त्व, गद्दा, जर्राह, अक्षुण, वक्र, वक्त आदि। कितने अक्षर संयुक्त होने पर विकल्प से लिखे जाते हैं। जैसे—खन्ना, इल्ला, हल्ला, रत्ती, रन्ती, आदि।

### अभ्यास।

अक्षरों का संयोग कब होता है? तीन संयुक्त अक्षर वाले चार शब्द कहो। ऐसे तीन शब्द बतलाओ जिनमें छ, ठ ढ ये अक्षर संयुक्त हों। सानुनासिक वर्ण कब कैसे लिखे जाते हैं। कौन २ से अक्षर संयुक्त होने पर भिन्न २ आकार के हो जाते हैं?

## उच्चारण-स्थान।

मुख के जिस भाग से जिस अक्षर का उच्चारण होता है उसी भाग को उस अक्षर का उच्चारण-स्थान कहते हैं।

---

१—एक दो विद्वानों का विचार है कि वर्गों के पञ्चम वर्ण के हिन्दी में प्रयोग करने का कोई वैसा प्रयोजन नहीं है। वे सब जगह अनुस्वार ही से काम चलाना चाहते हैं।

अ, आ, कवर्ग, ह और विसर्ग का उच्चारण स्थान कण्ठ, है, इससे ये कण्ठ्य कहाते हैं।

इ, ई चवर्ग, य और श का तालु स्थान है, इससे ये तालव्य हैं। अर्थात् तालु पर जीभ सटाने से ये वर्ण बोले जाते हैं।

ऋ, ॠ, टवर्ग, र और ष का मूर्धा स्थान है। अर्थात् तालु से भी ऊपर जीभ सटाने से ये अक्षर बोले जाते हैं। इससे ये मूर्द्धन्य कहाते हैं।

ऌ, तवर्ग, ल और स का स्थान दाँत है। अर्थात् दाँत में जीभ सटाने से ये वर्ण बोले जाते हैं, इससे ये दन्त्य कहाते हैं।

उ, ऊ, पवर्ग ये ओठों से बोले जाते हैं, इससे ओष्ठ्य कहाते हैं। ए ऐ के उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु तथा ओ औ के उच्चारण स्थान कण्ठ और ओष्ठ हैं, इसलिये ये क्रमशः कण्ठतालव्य और कण्ठौष्ठ्य कहाते हैं।

व दाँत और ओठ से बोला जाता है, इससे यह दन्तौष्ठ्य कहाता है।

ङ, ञ, ण, न, म, ये अपने २ वर्गों के उच्चारण स्थान से और नासिका से भी बोले जाते हैं। अनुस्वार का भी नासिका से ही उच्चारण होता है, इससे ये सब सानुनासिक कहे जाते हैं।

## अभ्यास।

उच्चारण-स्थान से क्या मतलब है ? कवर्ग चवर्ग आदि से क्या समझते हो ? ए ऐ और ओ औ के उच्चारण स्थान क्या हैं ? नासिका से कौन २ अक्षर बोले जाते हैं ? कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, कण्ठौष्ठ्य से क्या समझते हो ?

---

१—ड ढ का उच्चारण नीचे बिन्दी देने से बदल जाता है। ड़ ढ़ का उच्चारण जीभ उलट कर तालु से भी ऊपर जीभ लगाने से होता है।

# सन्धि-विचार।

हिन्दी भाषा में संस्कृत के ऐसे बहुत से शब्द आते हैं जिनमें सन्धि रहती है। ऐसे शब्दों के अर्थ और उनकी बनावट जानने के लिये सन्धिज्ञान होना बहुत आवश्यक है।

दो अक्षरों की, स्वर हों चाहे व्यञ्जन, मिलावट को सन्धि कहते हैं। सन्धि में कहीं २ दोनों अक्षरों में परिवर्तन होता है और कहीं २ एक ही में; कहीं २ दोनों के बदले एक तीसरा ही अक्षर हो जाता है।

सन्धि तीन प्रकार की होती है—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि।

## स्वरसन्धि।

स्वर के साथ जो स्वर का विकार होता है उसे स्वरसन्धि कहते हैं।

स्वरसन्धि के पाँच भाग होते हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् और अयादि-चतुष्टय।

### दीर्घ।

जब ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ ऋ के बाद क्रम से ह्रस्व वा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आवें तो दोनों मिल कर उसी क्रम से दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं। जैसे, परम + अर्थ = परमार्थ, पुस्तक + आलय=पुस्तकालय, विद्या + अर्थी=विद्यार्थी, विद्या + आलय = विद्यालय, गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र, विधु + उदय = विधूदय और मातृ + ऋण = मातॄण इत्यादि।

### गुण।

ह्रस्व या दीर्घ अकार के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ उ ऋ रहे तो ह्रस्व या दीर्घ अ + इ मिल कर ए, अ + उ मिल कर ओ, और

अ + ऋ मिल कर अर् गुण हो जाता है। जैसे, गज + इन्द्र = गजेन्द्र, परम + ईश्वर = परमेश्वर, महा + इन्द्र = महेन्द्र। महा + ईश्वर = महेश्वर। धर्म + उपदेश = धर्मोपदेश। महा + ऋषि = महर्षि। परम + ऋद्धि = परमर्द्धि इत्यादि।

वृद्धि।

यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार से परे ए वा ऐ, ओ वा औ रहे तो अ + ए वा ऐ मिल कर ऐ और अ + ओ वा औ मिल कर औ वृद्धि हो जाती है। जैसे, एक + एक = एकैक। परम + ऐश्वर्य्य = परमैश्वर्य्य। तथा + एव = तथैव। महा + ऐश्वर्य्य = महैश्वर्य। शुद्ध + ओदन = शुद्धोदन,। गङ्गा + ओघ = गङ्गौघ। महा + औषधि = महौषधि इत्यादि।

यण्।

ह्रस्व वा दीर्घ इकार, उकार, ऋकार से परे किसी भिन्न स्वर के रहने पर इ, उ, ऋ के क्रमशः य, व, र हो जाते हैं और आगे के स्वर से मिल जाते हैं। जैसे, यदि + अपि=यद्यपि; प्रति + उपकार = प्रत्युपकार; प्रति + एक = प्रत्येक; पार्वती + आराधन=पार्वत्याराधन; अनु + अय=अन्वय; बहु + ऐश्वर्य्य= बह्वैश्वर्य्य; पितृ + अर्थ=पित्रर्थ; मातृ + आनन्द = मात्रानन्द, इत्यादि।

अयादि।

अकारादि स्वर परे रहने पर ए का अय्, ओ का अव्, ऐ का आय्, और औ का आव् होता है। जैसे—ने + अन= नयन; पो + अन=पवन; नै + अक = नायक; पौ + अक = पावक। सन्धि में आगे के स्वर या स्वरान्त व्यञ्जन से हलन्त अक्षर मिल जाते हैं।

## अभ्यास।

स्वरसन्धि किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की है ? प्रत्येक प्रकार के दो दो उदाहरण बताओ। नीचे लिखे वाक्यों में कहाँ कहाँ कौन २ सन्धि हुई है और उनके नियम क्या हैं ?

महात्मा प्रत्युपकारी होते हैं। महेश दयालु हैं। प्रत्येक मनुष्य को हितोपदेश में परमानन्द लाभ करना चाहिये।

## व्यञ्जन-सन्धि।

स्वर अथवा व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का जो संयोग होता है उसे व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

संस्कृत व्याकरण में व्यञ्जनसन्धि का बहुत विचार है। पर, हिन्दी में जानने योग्य जो आवश्यक नियम हैं वे लिखे जाते हैं।

यदि त् और द् के आगे च वा छ हों तो उनके स्थान में च्, ज वा झ हों तो ज्, ट वा ठ हों तो ट्; ड वा ढ हों तो ड् आदेश होते हैं। जैसे—उत्+चारण=उच्चारण; उत्+छिन्न=उच्छिन्न; उत्+ज्वल=उज्ज्वल; विपद्+जाल=विपज्जाल; तत्+टीका=तट्टीका; उत्+डयन=उड्डयन इत्यादि।

यदि पद के अन्त में त् वा द् से परे तालव्य श हो तो त् द् के स्थान में च् और श के स्थान में छ और यदि पदान्त में त् वा द् से परे ह हो तो त् द् के स्थान में द् और ह का ध होता है। जैसे, उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट; तद्+शरीर=तच्छरीर; उत्+हार=उद्धार; तद्+हित=तद्धित; उत्+हत=उद्धत इत्यादि।

यदि स्वर वर्ण वा वर्ग के तृतीय चतुर्थ वर्ण अथवा य, र, ल, व, आगे रहें तो पद के अन्तस्थित क्, च्, ट्, प्, के

स्थान में क्रमशः ग्, ज्, ड्, व्, हो जाते हैं। जैसे, दिक्+अम्बर=दिगम्बर; दिक्+जग=दिग्गज; वाक्+जाल=वाग्जाल; वाक्+दान=वाग्दान; दिक्+भाग=दिग्भाग; वाक्+रोध=वाग्रोध; धिक्+याचना=धिग्याचना; दिक्+हस्ती=दिग्हस्ती; अच्+अन्त=अजन्त; षट्+दर्शन=षडदर्शन; षट्+रिपु=षड्रिपु; अप्+ज=अब्ज इत्यादि।

यदि स्वरवर्ण अथवा ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व, परे हों तो पदान्त त् के स्थान में द् होता है। जैसे जगत्+ईश=जगदीश; सत्+आचार=सदाचार; उत्+गमन=उद्गमन; उत्+घाटन=उद्घाटन; तत्+धन=तद्धन; जगत्+बन्धु=जगद्बन्धु; सत्+वंश=सद्वंश; उत्+योग=उद्योग इत्यादि।

यदि पदान्त म् के परे स्पर्श वर्ण हों तो म् का अनुस्वार अथवा जिस वर्ग का वर्ण आगे हो उसीका पञ्चम वर्ण हो जाता है। और, यदि अन्तस्थ और उष्म वर्ण परे हों तो म् का केवल अनुस्वार ही हो जाता है। जैसे, सम्+कल्प=संकल्प, सङ्कल्प; मृत्युम्+जय=मृत्युञ्जय, मृत्युंजय; सम्+धि=संधि, सन्धि; सम्+गम=सङ्गम, संगम; सम्+योग=संयोग; सम्+वत्=संवत् इत्यादि। स्वर परे रहने से म् स्वर में मिल जाता है। जैसे सम्+आचार=समाचार, इत्यादि।

वर्गों के प्रथम वर्ण के आगे सानुनासिक वर्ण रहें तो प्रथम वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का सानुनासिक वर्ण होगा। जैसे, वाक्+मय=वाङ्मय; जगत्+नाथ=जगन्नाथ; दिक्+नाग=दिङनाग; उत्त+मत्त=उन्मत्त इत्यादि।

ह्रस्व स्वर के परे छ होवे तो छ के साथ च् मिल जाता है। दीर्घ स्वर के आगे कहीं होता है और कहीं नहीं। जैसे,

परि + छद = परिच्छद; वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया; लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया इत्यादि।

यदि च् अथवा ज् के परे दन्त्य न हो तो न के स्थान में ञ् हो जाता है। जैसे, याच् + ना = याच्ञा, यज् + न = यज्ञ इत्यादि।

मूर्द्धन्य ष् के आगे त् रहने से त् के स्थान में ट् और थ के स्थान में ठ होता है। जैसे, आकृष् + त = आकृष्ट; उत्कृष् + त = उत्कृष्ट; षष् + थ = षष्ठ इत्यादि।

यदि त् द् और न् के आगे ल रहे तो उनके स्थान में ल हो जाता है और न के स्थान में अनुस्वार भी होता है। जैसे, उत् + लेख = उल्लेख; उत् + लंघन = उल्लंघन; तत् + लीला = तल्लीला; महान् + लाभ = महाँल्लाभ इत्यादि।

अभ्यास।

नीचे लिखे पदों में सन्धि करो और उनके नियम बतावो— वाक् + ईश, परि+छेद, प्राक् + मुख, अप् + भाग, तत् + गत, सत् + शास्त्र, सत् + जाति, सम्+गम, सम्+बन्ध, सम् + ताप, सम् + हार, सत् + चिदानन्द, चित् + मय।

## विसर्गसन्धि।

स्वर और व्यञ्जन के साथ मिलने पर विसर्ग का जो विकार होता है उसे विसर्गसन्धि कहते हैं।

यदि विसर्ग के आगे च वा छ हो तो विसर्ग का तालव्य श, यदि उसके आगे त, थ वा स हो तो दन्त्य स और यदि ट वा ठ परे हो तो मूर्द्धन्य ष होता है। जैसे, निः + चय = निश्चय; निः + चिन्त = निश्चिन्त; निः + छल = निश्छल; धनुः + टंकार = धनुष्टङ्कार; दुः + तर = दुस्तर; निः + सार = निस्सार इत्यादि।

यदि विसर्ग से परे क वा ख, प वा फ हो और उसके पहले इ उ रहे तो प्रायः विसर्ग का मूर्द्धन्य ष हो जाता है और स्थानों में विसर्ग ही बना रहता है। जैसे, निः+फल= निष्फल; निः+कारण=निष्कारण; निः+पाप=निष्पाप; दुः+ कर=दुष्कर हो जाता है, इत्यादि।

यदि वर्ग का तीसरा चौथा वा पाँचवा अथवा य, र, ल, व, ह आगे हो और पूर्व में अकार हो तो विसर्ग सहित अ के स्थान में ओ हो जाता है। जैसे, मनः+हर=मनोहर, मनः+रथ=मनोरथ; तेजः+मय=तेजोमय; सरः+ज= सरोज; पयः+द=पयोद; मनः+योग=मनोयोग, मनः+ भाव=मनोभाव इत्यादि।

यदि अकार-पूर्वक विसर्ग के परे अकार हो तो तीनों मिल कर ओकार हो जाता है और यदि परे अभिन्न कोई दूसरा स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे, मनः+ अवधान=मनोऽवधान; यशः+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी; तेजः+आभास; तेज आभास, यशः+इच्छा, यश इच्छा इत्यादि।

यदि विसर्ग के पूर्व अ आ छोड़ कर कोई दूसरा स्वर हो और आगे स्वरवर्ण वा वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण अथवा य, र, ल, व, ह हो तो विसर्ग के स्थान में र हो जाता है। जैसे, निः+धन=निर्धन; बहिः+देश=बहिर्देश; दुः+ नीति=दुर्नीति; बहिः+योग=बहिर्योग; निः+आधार= निराधार; निः+उद्देश=निरुद्देश इत्यादि। कहीं २ आकार-पूर्वक विसर्ग का भी र् हो जाता है। जैसे, पुनः+अपि= पुनरपि इत्यादि।

र् के परे र हो तो पूर्व र का लोप हो जाता है और उसके पूर्व के स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे, पुनर्+रचना=

पुनारचना; निर्+रोग=निरोग; निर्‌रस+नीरस इत्यादि।

अभ्यास।

नीचे लिखे हुए शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो—

निष्काम, निस्तार, मनोनीत, निर्बल, निर्मूल, नीरन्ध्र, निरुपाय, दुश्चल, निश्शरण, दुर्विवाद, यशोविजय, मनोगत इत्यादि।

---

## शब्दविचार। ( Etymology )

कान से जो सुन पड़े उसे शब्द कहते हैं।

शब्द दो प्रकार के हैं—'सार्थक' और 'निरर्थक'। जिसका कुछ अर्थ होता है वह सार्थक और जिसका कुछ अर्थ नहीं होता वह निरर्थक है। सार्थक शब्द राम, नाम आदि हैं, और निरर्थक आँय बाँय आदि। व्याकरण में सार्थक शब्दों का ही वर्णन रहता है।

हिन्दी में व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द चार प्रकार के होते हैं। तत्सम—राजा भ्राता आदि; तद्भव—राम, भाई आदि, देशज—पनडुब्बी, पैनी; विदेशज—रेल, किरानी रोज इत्यादि।

शब्द धातु और प्रत्ययों से बनते हैं।

अर्थ भी दो प्रकार के हैं-'वाच्य' और 'लक्ष्य'। जिस शब्द का जो अर्थ नियत है यदि उसी अर्थ में वह शब्द बोला जाता है तो वह अर्थ 'वाच्य' कहलाता है। जैसे, सिंह एक जानवर है। यहाँ सिंह शब्द अपने नियत अर्थ में आया है; इससे यह वाच्य अर्थ हुआ।

जब शब्द का नियत अर्थ बोध न हो बल्कि उसके गुण का बोध हो तब वह अर्थ 'लक्ष्य' कहा जाता है। जैसे, वह आदमी सिंह है। यहाँ सिंह अपने नियत अर्थ में नहीं आया है।

क्योंकि, आदमी कभी चार पैर वाला दुमदार सिंह नहीं हो सकता। यहाँ इस शब्द से यह बोध होता है कि सिंह जिस प्रकार पराक्रमी तथा वीर है वैसा ही वह आदमी भी पराक्रमी तथा वीर है। ऐसा ही अर्थ लक्ष्य कहा जाता है।

शब्द आठ प्रकार के होते हैं। शब्दों के इन आठ प्रकारों को वाक्यखण्ड (Parts of Speech) कहते हैं। वे ये हैं:—

* १ संज्ञा, २ विशेषण, ३ सर्वनाम, ४ क्रिया ५ क्रिया-विशेषण, ६ सम्बन्धबोधक अव्यय, ७ समुच्चयबोधक अव्यय, और ८ विस्मयादिबोधक अव्यय।

संज्ञा (Noun)—वस्तु-मात्र के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे, लड़का, काशी, मोहन, पहाड़, पेड़ आदि।

विशेषण (Adjective)—जो संज्ञाओं के गुण-दोष, और संख्या आदि का वर्णन करते हैं वे विशेषण हैं। जैसे, भला, बुरा, चार, बड़ा, काला इत्यादि।

सर्वनाम (Pronoun)—संज्ञाओं के बदले में जिनका प्रयोग किया जाय वे सर्वनाम हैं। जैसे, मोहन अच्छा लड़का है 'उसको' पुस्तक दो। वह, मैं, तू आदि।

---

* कितने वैयाकरण सार्थक शब्द के पाँच भेद मानते हैं - संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय। इनके मत में क्रिया-विशेषण वगैरह अव्ययही में शामिल हैं। कितने तीन ही भेद मानते हैं-संज्ञा, क्रिया और अव्यय। इनके मत में सर्वनाम और विशेषण संज्ञा में और क्रिया-विशेषण आदि अव्यय में सम्मिलित हैं। अव्यय वह है जिसमें लिङ्ग वचन के कारण कुछ विकार न हो। जैसे, ऊपर, नीचे, जब, पर इत्यादि।

क्रिया (Verb)—जिससे किसी बात का करना या होना पाया जाय उसे क्रिया कहते हैं। जैसे, जाता है; खाऊँगा; कर चुका, इत्यादि।

क्रियाविशेषण ( Adverb )—जो शब्द क्रिया, विशेषण अथवा और किसी क्रियाविशेषण के विशेष काल, भाव वा रीति को प्रकट करे उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे, 'साफ' २ लिखो। वह 'अत्यन्त' बुद्धिमान् है। 'बहुत' 'जल्दी' मत करो। कब, कहाँ, ठीक, कुछ इत्यादि।

सम्बन्धबोधक (Preposition)—जो अव्यय वाक्य में एक दूसरे के साथ सम्बन्ध बताते हैं उन्हें सम्बन्धबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे भीतर, ऊपर, आगे, पीछे, नीचे, बीच, जो इत्यादि।

समुच्चायक (Conjunction)—जो पद और वाक्यों को जोड़ते हैं या अलग करते हैं उन्हें समुच्चायक अव्यय कहते हैं। जैसे—और, किन्तु आदि।

विस्मयादिबोधक (Interjection)—जिनसे बोलने वाले के मन के आकस्मिक भाव जाने जायँ उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे, ओ हो, अरे! हाय हाय!! वाह वाह!! शाबाश, धन्य धन्य इत्यादि।

## अभ्यास।

शब्द किसे कहते हैं? अर्थभेद से और शब्दभेद से शब्द कितने प्रकार के होते हैं? अर्थ कितने प्रकार के हैं? उनके सोदाहरण लक्षण कहो। आठों प्रकार के शब्दों के लक्षण और उदाहरण बतावो। व्याकरण में अल्ल बल्ल इत्यादि शब्दों का विचार क्यों नहीं होता?

## संज्ञा। (Noun)

कह आये हैं कि संज्ञा वस्तु-मात्र के नाम को कहते हैं, वह वस्तु सजीव हो चाहे निर्जीव।

व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञायें तीन प्रकार की होती हैं। रूढ़ि, (Primitive) यौगिक (Derivative) और योगरूढ़ि।

रूढ़ि संज्ञा वह है जिसके खण्ड का कुछ अर्थ न हो सके। जैसे, घर। इसके टुकड़े नहीं हो सकते। यदि घ र अलग अलग करें तो उनका कुछ अर्थ नहीं हो सकता वह समूचा एक अर्थ का बोधक है। ऐसी संज्ञायें रूढ़ि कहलाती हैं।

यौगिक संज्ञा वह है जो प्रकृति-प्रत्यय अथवा शब्दों के योग से बनी हो। जैसे बुद्धिमान्, पाठशाला इत्यादि। ये दोनों संज्ञायें बुद्धि + मान् और पाठ + शाला, इनके योग से बनी हैं। इन खण्डों का अलग २ भी अर्थ होता है। ऐसी संज्ञायें योग से बनने के कारण यौगिक कहलाती हैं!

योगरूढ़ि संज्ञा वह कहाती है कि जो यौगिक संज्ञा के समान बनी तो हो, पर सामान्य अर्थ को छोड़ विशेषार्थ को प्रकाश करे। जैसे, पङ्कज। इस शब्द का अर्थ है 'पङ्क से उत्पन्न होने वाला'; पर पङ्क से उत्पन्न होने वाली घोंघी, सेवार आदि बहुत सी चीजें हैं, किन्तु उनका इस शब्द से बोध नहीं होता। बोध होता है केवल 'कमल' शब्द का। ऐसी संज्ञायें योगरूढ़ि कहलाती हैं।

इन तीनों के संक्षिप्त लक्षण यों भी हो सकते हैं:—

जिनके अवयव का कुछ अर्थ न हो वे रूढ़ि; जिनके अवयव का कुछ अर्थ हो वे यौगिक और जिनके अवयवार्थ न हो कर विशेषार्थ हों वे योगरूढ़ि संज्ञायें हैं।

अर्थविचार से संज्ञा के पाँच भेद होते हैं,—जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समुदायवाचक और द्रव्यवाचक।

जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)—वह है जिससे सामान्यतः उसी वस्तु का ज्ञान होता है। जैसे, मनुष्य, पुस्तक, वृक्ष इत्यादि। यहाँ इनसे किसी खास मनुष्य, पुस्तक या वृक्ष का बोध नहीं होता, बल्कि सब के सब मनुष्य आदि का। ऐसी संज्ञायें जातिवाचक कहलाती हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)—वह कहलाती है जिससे किसी खास एक मनुष्य वा चीज का बोध होता है। जैसे, मोहन, श्याम, काशी, हिमालय, भारत, गंगा, भारत-समुद्र इत्यादि।

भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)—उसका नाम है जिसके कहने से पदार्थ का धर्म, गुण वा स्वभाव जाना जाता है। जैसे, उँचाई, चौड़ाई, दौड़, धूप, मिठास, ठंढक, प्रभाव, खेल, सुजनता इत्यादि।

भाववाचक शब्द तीन तरह से बनते हैं। जैसे, विशेषण से—बुद्धिमान, बुद्धिमानी; आलसी, आलस्य आदि। संज्ञा से-मित्र, मित्रता; चोर, चोरी आदि। क्रिया से—शोचना, शोक; मारना, मार आदि।

समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)—उसे कहते हैं जिससे बहुत से पदार्थों के समूह का बोध हो। जैसे, भीड़, मेला, झुंड, फौज इत्यादि।

द्रव्यवाचक संज्ञा (Material Noun)—वह है जिससे द्रव्यों के नाम का ज्ञान होता है। जैसे—पत्थर, लोहा, चाँदी सोना, लकड़ी इत्यादि।

## अभ्यास।

संज्ञा किसे कहते हैं? व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञायें कितने प्रकार की हैं? उनके नाम और लक्षण बतावो। पाँच प्रकार की संज्ञायें कौन २ हैं? उनके सोदाहरण लक्षण बतावो।

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं को बतावो और उनके नाम कहो।

लड़के पाठशाला जाते हैं। महादेव को प्रणाम करो। पीताम्बर उत्तम कपड़ा है। इंग्लैंड एक प्रसिद्ध देश है। झुंड के झुंड सिपाही जाते हैं। बरसात में नदी के जल की पाट बड़ी हो जाती है। चीनी से नमक का आदर बहुत है।

## संज्ञा के हेरफेर (Inflections of Nouns)

प्रत्येक संज्ञा के रूप और अर्थ में लिङ्ग (Gender) वचन (Number) और कारक (Case) के कारण कुछ हेरफेर हुआ करता है।

लिङ्ग से संज्ञा का पुँस्त्व और स्त्रीत्व, तथा वचन से एकत्व और अनेकत्व जाना जाता है और कारक से संज्ञा की अवस्था का ज्ञान होता है।

रूप में हेरफेर के कारण कुछ संज्ञायें विकृत हो जाती हैं और कुछ अविकृत अर्थात् ज्यों की त्यों रह जाती हैं। जैसे—लड़का जाता है। लड़के ने कहा। राजा गये। राजा ने कहा। इनमें लड़का विकृत है और राजा अविकृत। क्योंकि, विभक्ति आने के कारण 'लड़का' शब्द के आकार का एकार हो गया है और 'राजा' का आकार ज्यों का त्यों रह गया है। कुछ अविकृत शब्द नीचे लिखे जाते हैं:—

(क) संस्कृत के अन् प्रत्ययान्त और ऋकारान्त शब्द से बने हुए प्रथमान्त एकवचन के रूप। जैसे, राजन्-राजा,

आत्मन्-आत्मा, ब्रह्मन्-ब्रह्मा, पितृ-पिता, मातृ-माता, भ्रातृ-भ्राता, युवन्-युवा इत्यादि ।

(ख) संस्कृत की आ प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञायें। जैसे-पूजा, माला, रमा, उमा, कान्ता, कृपा. आज्ञा, लता, ललना इत्यादि ।

(ग) फारसी अरबी के शब्द । जैसे-दुलहा, ख़फ़ा, खुदा, जुदा, पैदा, बला, हवा, दवा, वफ़ा, सज़ा, कज़ा, वगैरह। ज़रा, अदना, आला वगैरह में हेरफेर होता है और नहीं भी होता ।

(घ) सम्बन्धवाचक आकारान्त शब्द । जैसे; काका, चाचा, नाना, नाना, बाबा, दादा आदि ।

(ङ) व्यक्तिवाचक और स्थानवाचक आकारान्त शब्द । जैसे, मोहना, महँगुआ, धरिछना और एशिया, आफ्रिका, अमेरिका, गया आदि। कई एक नगरवाचक आकारान्त शब्द विकल्प से विकृत और अविकृत होते हैं। जैसे-पटने से आता हूँ। पटना से आता हूँ। कलकत्ते में, कलकत्ता में इत्यादि । *

(च) एकारान्त, ओकारान्त, अकारान्त शब्द भी विकृत और अविकृत दोनों हैं । जैसे, चौबे, कोदो, बात आदि। इनके अतिरिक्त प्रायः सब संज्ञायें विकृत हैं ।

## अभ्यास ।

संज्ञा में हेरफेर किस २ कारण से होते हैं? संस्कृत में किस प्रकार के बने हुए आकारान्त शब्द अविकृत हैं? लिङ्ग, वचन और कारक से क्या प्रयोजन है? फारसी

* कई एक नगर वाचक आकारान्त शब्द विकल्प से विकृत और अविकृत होते हैं। जैसे, पटने से आता हूँ। पटना से आता हूँ। कलकत्ते में, कलकत्ता में इत्यादि।

अरबी के अविकृत आकारान्त शब्दों के नाम लो। विकल्प से विकृत होनेवाले कुछ आकारान्त शब्दों को बतलावो।

## लिङ्ग ( Gender )

लिङ्ग संज्ञा का वह चिन्ह है जिससे उसकी जाति जानी जाती है। वह जाति दो हैं-पुंजाति और स्त्री-जाति अर्थात् नर और मादा। प्रत्येक संज्ञा में कोई न कोई लिङ्ग अवश्य रहता है।

हिन्दी भाषा में लिङ्ग दो हैं—पुल्लिङ्ग ( Masculine Gender ) और स्त्रीलिङ्ग (Feminine Gender)। पुंजाति के शब्दों के नाम पुल्लिङ्ग और स्त्रीजाति के शब्दों के नाम स्त्रीलिङ्ग कहाते हैं। नपुंसक लिङ्ग ( Neuter Gender ) के मधु, वन, भवन ( पुं ) पुस्तक, वस्तु ( स्त्री ) आदि शब्द इन्हीं दोनों में व्यवहार के अनुसार चले आते हैं।

जिन सजीव पदार्थों के जोड़े होते हैं उनके लिङ्ग सहज ही जाने जा सकते हैं। उनमें जिस नाम से नर का बोध हो वह पुल्लिङ्ग और जिस नाम से स्त्री का बोध हो वह स्त्रीलिङ्ग है। जैसे—बाप, भाई, घोड़ा, कुत्ता पुल्लिङ्ग और मा, भौजाई, घोड़ी, कुत्ती आदि स्त्रीलिङ्ग हैं।

संस्कृत के जो शब्द पुल्लिङ्ग और जो शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं वे हिन्दी में भी प्रायः वैसे ही रहते हैं। पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग के दुःख, जल, मनुष्य, सूर्य, देश, आदि संस्कृत शब्द और स्त्रीलिङ्ग के गुणिनी रूपवती, बालिका सुन्दरता, श्रीमती, प्रिया, आशा, लता, रमा, गौरी, धात्री, आदि संस्कृत शब्द हिन्दी में भी पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग समझे और बोले जाते हैं। नपुंसक लिङ्ग के अधिकांश शब्द पुल्लिङ्ग ही में आ जाते हैं।

## प्राणिवाचक संज्ञाओं का लिङ्गभेद ।

अकारान्त और आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग प्रायः ई प्रत्यय जोड़ने से बनता है । जैसेः—

| पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । | पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । |
|---|---|---|---|
| देव | देवी | घोड़ा | घोड़ी |
| नर | नारी | काला | काली |
| दास | दासी | मेरा | मेरी |
| ब्राह्मण | ब्राह्मणी | मुर्गा | मुर्गी |
| सुन्दर | सुन्दरी | भाँजा | भाँजी |

व्यापारवाची पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त्यस्वर के स्थान पर इन् प्रत्यय करने से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं । जैसेः—

| पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । | पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । |
|---|---|---|---|
| कुँजड़ा | कुँजड़िन | लोहार | लोहारिन |
| ठठेरा | ठठेरिन | तमोली | तमोलिन |
| तेली | तेलिन | कसेरा | कसेरिन |

पशु-पक्षी-वाचक प्रायः अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों से नी प्रत्यय लगा कर स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं । जसेः—

| पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । | पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । |
|---|---|---|---|
| ऊँट | ऊँटनी | मोर | मोरनी |
| बाघ | बाघनी | सिंह | सिंहनी |
| शेर | शेरनी | सियार | सियारनी |

प्रायः उपनामवाची शब्दों के अन्त में आइन लगा कर स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं । जैसेः—

| पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । | पुल्लिङ्ग । | स्त्रीलिङ्ग । |
|---|---|---|---|
| ओझा | ओझाइन | दूबे | दूबाइन |
| मिसिर | मिसिराइन | चौबे | चौबाइन |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ठाकुर | ठकुराइन | पंडा | पँडाइन |
| पाठक | पठकाइन | तेवारी | तेवराइन |

कुछ शब्दों में आनी प्रत्यय लगा कर स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं जैसेः—

| पुल्लिङ्ग। | स्त्रीलिङ्ग। | पुल्लिङ्ग। | स्त्रीलिङ्ग। |
|---|---|---|---|
| खतरी | खतरानी | जेठ | जेठानी |
| मेहतर | मेहतरानी | मामा | ममानी |
| देवर | देवरानी | गुरु | गुरुआनी |

बहुतेरे पुलिङ्ग शब्दों के स्त्रीलिङ्ग शब्द दूसरे ही होते हैं। जैसेः—

| पुल्लिङ्ग। | स्त्रीलिङ्ग। | पुल्लिङ्ग। | स्त्रीलिङ्ग। |
|---|---|---|---|
| पिता | माता | पुरुष | स्त्री |
| बैल | गाय | राजा | रानी |
| भाई | भाभी | बेटा | बहू, पतोहू |
| ससुर | सास | साहेब | बीबी |

ऊपर जो नियम लिखे गये हैं वे सामान्य रूप से हैं न कि विशेष-रूप से। क्योंकि उनके विपरीत भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग रूप होते हैं। जैसे - प्रिय, प्रिया। ऊँट, ऊँटिन। बाघ. बाघिन। बछड़ा, बछिया। दुलहा, दुलहिन। फकीर, फकीरिन। हाथी, हथिनी। बहनोई, बहन। नन्दोई, ननद। दामाद, बेटी। भैंसा-भैस। राँड-रंडा इत्यादि।

बहुतेरी संज्ञाओं के केवल पुल्लिङ्ग ही रूप होते हैं। जैसेः— कौआ, काग, झिंगुर, चीता, चमगादड़, पिल्लू, झिंगा आदि।

बहुतेरी संज्ञाओं के केवल स्त्रीलिङ्ग ही रूप होते हैं। जैसेः—

चील, मैना, भेड़, मछली, मक्खी, कोयल, जूँ इत्यादि।

प्राणिवाचक शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप जानने के लिये प्रायः व्यवहार और प्रचलन पर ही ध्यान देना आवश्यक है। क्यों कि नियम से सिद्ध किये गये रूपों के विपरीत भी अन्यान्य रूप बोले जाते हैं। ऐसी जगह व्याकरण को हार माननी पड़ती है और बोल-चाल के शब्द ही प्रबल हो जाते हैं। जैसे, लोग 'लोहारिन' को 'लोहइन' भी बोलते हैं।

### अप्राणिवाचक संज्ञाओं का लिङ्ग-भेद।

आकारान्त संज्ञायें प्रायः पुल्लिङ्ग होती हैं, पर इसके अपवाद-रूप से कुछ शब्द स्त्रीलिङ्ग भी होते हैं। जैसे—

| पुल्लिङ्ग। | | अपवाद-स्त्रीलिङ्ग | |
|---|---|---|---|
| सोना | तकिया | आत्मा | दवा |
| शीशा | पहिया | महिमा | हवा |
| मजा | घोड़ा | अंगिया | दुनिया |
| नफा | बेटा | डिबिया | सजा |
| लोहा | तोता | चिड़िया | बला |
| बुढ़ापा | ओसारा | नरिया | पिढ़िया |
| इत्यादि | | इत्यादि | |

तकारान्त संज्ञायें प्रायः स्त्रीलिङ्ग होती हैं, पर अपवादरूप से कुछ संज्ञाओं का पुल्लिङ्ग व्यवहार भी होता है। जैसेः—

| स्त्रीलिङ्ग। | अपवाद-पुल्लिङ्ग। |
|---|---|
| रात, लात | भात, सौगात |
| बात, छत | सूत, दाँत |
| गत, दौत | गात, गोत |
| नौबत, पत | दस्तखत, शर्बत |
| इत्यादि | इत्यादि |

दीर्घ ईकारान्त संज्ञाएँ प्रायः स्त्रीलिङ्ग होती हैं। पर कुछ अपवाद-रूप से पुल्लिङ्ग भी हैं। जैसेः—

| स्त्रीलिङ्ग। | अपवाद-पुल्लिङ्ग। |
| --- | --- |
| नदी, चीठी | पानी, मोती |
| रोटी, टोपी | घी, दही |
| नदी, नवेली | जी, चीनी |
| कुर्सी, डिक्श्नरी | मोती, हाथी |
| इत्यादि | इत्यादि |

ईकारान्त पुरुषवाची शब्द पुल्लिङ्ग ही बोले जाते हैं। जैसे-तेली, नाई, तमोली, क्षत्री, भाई, मोदी, बढ़ई, किरानी, साँई, इत्यादि।

संस्कृत के कुछ ऐसे शब्द जो स्त्रीलिङ्ग न होने पर भी हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग व्यवहृत हैं। जैसे-ऋतु, राशि, विधि, वस्तु, किरण, वायु, जय, पुस्तक, मृत्यु, वनस्पति, कालिमा, उपाधि, वलि, आयु, इन्द्रिय, शपथ, गन्ध, देह, तान, तरङ्ग, समाधि आदि।

जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आई, वट, हट आदि रहे वे सब शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे भलाई, चतुराई, बुराई, बनावट, सजावट, चिकनाहट, चिल्लाहट आदि।

भाववाचक नकारान्त और सकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—रहन-सहन, चाल-चलन, कतरन, मिठास, प्यास, बकवास इत्यादि।

आव् भागान्त संज्ञायें प्रायः पुल्लिङ्ग होती हैं। जैसे-गुलाब, जुलाब, पेशाब, हिसाब, इत्यादि। अपवाद—शराब, किताब, मिहराब, ये स्त्रीलिङ्ग हैं।

कुछ भाववाचक शब्द भी स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे, चमक, हलचल, धूमधाम, पकड़ आदि।

कुछ शब्द स्त्रीलिङ्ग-पुल्लिङ्ग दोनों बोले जाते हैं। जैसे, कुशल, पवन, समाज, सामर्थ्य, विजय, आय, अग्नि, फिक्र, बाहु, औषधि, साँस इत्यादि।

जिस शब्द के लिङ्ग में सन्देह हो उसे पुल्लिङ्ग व्यवहार करना चाहिये।

## अभ्यास।

लिंग और जाति किसे कहते हैं? इनके कितने भेद हैं? जीवधारियों के नामों के लिंग पहचानने की क्या रीति है? हिन्दी में संस्कृत शब्दों के लिंग कैसे जाने जाते हैं? स्त्रीलिंग बनाने के कितने प्रत्यय हैं? प्रत्येक के नाम उदाहरण सहित बतावो। जिन संज्ञाओं के केवल स्त्रीलिंग और पुल्लिंग ही रूप होते हैं उनके नाम लो। हिन्दी में जिनके भिन्न २ पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूप होते हैं वे संज्ञायें कौन कौन हैं? पाँच आकारान्त, पाँच तकारान्त और पाँच ईकारान्त पुल्लिंग शब्द कहो। कौन कौन सी संज्ञायें पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में व्यवहृत होती हैं? संस्कृत की दस ऐसी संज्ञाओं के नाम लो, जो हिन्दी में स्त्रीलिंग व्यवहृत होती हैं? कौन कौन सी संज्ञायें दोनों लिगों में व्यवहृत होती हैं? चेला, नगर, अहीर, बहनोई, भाई, पण्डित, इन शब्दों के स्त्रीलिंग बतावो। सखी, गाय, नारी, बुढ़िया, पंडाइन, इन शब्दों के पुल्लिंग शब्द बतावो। मोमबत्ती, आवश्यकता, दया, खटास, कड़ा, गन्ध, भात, मचिया, खटिया, चिराग, दीवाल, इन शब्दों के लिंग बतावो।

## वचन (Number)

जिसके द्वारा शब्द की संख्या मालूम हो वह वचन है। हिन्दी में वचन दो ही हैं—एकवचन और बहुवचन। जिस शब्द से एक ही पदार्थ का बोध हो वह एक वचन और जिससे एक से अधिक का ज्ञान हो वह बहुवचन है। जैसे—लड़का

जाता है। लड़के जाते हैं। पहले वाक्य में लड़का एकवचन और दूसरे में वह बहुवचन है।

जहाँ किसी खास संख्या से मतलब होता है वहाँ तद्वाची संख्या ही को रखते हैं। जैसे—दो लड़के जाते हैं। चार लड़के आये। इनमें 'दो' 'चार' संख्या-बोधक शब्द ही रख दिये गये हैं।

आदर के लिये और अपने लिये एकवचन के स्थान पर भी बहुवचन रख सकते हैं। जैसे—गुरु जी आये। हम गये।

किसी किसी शब्द के एकवचन और बहुवचन, दोनों में एक से रूप होते हैं। वहाँ बहुवचन बोध कराने के लिये 'लोग' 'गण' 'सब' इत्यादि शब्द लगा देते हैं। जैसे विद्यार्थी आया। विद्यार्थी आये। दूसरे वाक्य के स्थान पर 'विद्यार्थी सब आये'। ऐसा भी बहुवचन बोध के लिये बोलते हैं। किन्तु ऐसी जगह बिना इन शब्दों के जोड़े भी क्रिया से ही बहुवचन का बोध हो सकता है

जातिवाचक शब्दों के बहुवचन में भी एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे, कुत्ता स्वामिभक्त होता है। यदि, कुत्ते स्वामिभक्त होते हैं, ऐसा भी कहें तो कोई हर्ज नहीं है।

अब बहुवचन बनाने के लिये कुछ नियम लिखे जाते हैं:—

(क) आकारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं को छोड़ बाकी जितनी पुल्लिङ्ग संज्ञायें होती हैं उनके निर्विभक्तिक कर्ता के रूप एकवचन और बहुवचन में एक समान ही होते हैं।

(ख) आकारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं का अन्तिम "आ" कर्ता कारक के बहुवचन में "ए" हो जाता है। जैसे - घोड़ा, घोड़े, अण्डा, अण्डे इत्यादि।

(ग) अकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के अन्तम 'अ' को 'एँ' कर

देने से निर्विभक्तिक कर्त्ताकारक के बहुवचन के रूप बन जाते हैं। जैसे—बात, बातें; घात, घातें; भीड़, भीड़ें इत्यादि।

(घ) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के अन्त में 'यें' अथवा 'एं' जोड़ देने से निर्विभक्तिक कर्ता के बहुवचन के रूप बन जाते हैं। जैसे—सभा, सभायें; लता, लताएँ; माला, मालायें इत्यादि।

(ङ) इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के अन्त में 'याँ' जोड़ देने और दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार कर देने से निर्विभक्तिक कर्ता के रूप बन जाते हैं। जैसे—मति, मतियाँ; नदी, नदियाँ इत्यादि।

(च) उकारान्त, ऊकारान्त, ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के कर्ताकारक के एकवचन और बहुवचन में एक समान ही रूप होते हैं। जैसे, बहू, बहू; सरसो, सरसों। कितने ह्रस्व उकारान्त शब्दों में 'यें' जोड़ते हैं। जैसे—ऋतु, ऋतुयें इत्यादि।

सविभक्तिक संज्ञाओं के बहुवचन बनाने में नीचे लिखे परिवर्तन होते हैं। जैसे—

(क) अकारान्त संज्ञाओं के दोनों लिङ्गों में 'अ' को 'ओं' करने से। जैसे—नर, नरों ने, नरों को, नरों से। बात, बातों ने, बातों को, बातों से इत्यादि।

(ख) आकारान्त पुल्लिङ्ग संज्ञाओं के 'आ' को 'ओं' करने से। जैसे—लड़का, लड़कों ने, लड़कों से इत्यादि।

(ग) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के साथ 'ओं' जोड़ने से। जैसे—माला, मालाओं ने, मालाओं को, मालाओं से इ०।

(घ) इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं के दोनों लिङ्गों में 'यों' जोड़ने और दीर्घ ईकार को ह्रस्व करने से।

जैसे— पुल्लिङ्ग। स्त्रीलिङ्ग।

पति, पतियों ने, पतियों को। मति, मतियों ने, मतियों को।
माली, मालियों ने, मालियों को। नदी, नदियों ने, नदियों को।

(ङ) उकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त और ओकारान्त संज्ञाओं के दोनों लिङ्गों में 'ओं' जोड़ने और दीर्घ ऊकार को ह्रस्व करने से। जैसे—

पुल्लिङ्ग। स्त्रीलिङ्ग।

साधु, साधुओं ने, साधुओं को; ऋतु, ऋतुओं ने, ऋतुओं को,
डाकू, डाकुओं ने, डाकुओं को; बहू, बहुओं ने, बहुओं को,
पांड़े, पांड़ेओं ने, पांड़ेओं को; एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द नहीं है।
कोदो, कोदोओंने; कोदोओंको; सरसों, सरसोंओंने, सरसोंओंसे।

सम्बोधन में संज्ञाओं के बहुवचन में पूर्वोक्त नियमानुसार अन्तिम स्वर का 'ओ' होता है और 'ओ' तथा 'यो' जोड़ा जाता है। जैसे—हे नरो, हे लड़को, हे मालियो, हे बहुओ इत्यादि।

आप और कोई शब्द का बहुवचन नहीं होता। पर संज्ञा के तौर पर निज-सूचक होकर आवे तो उसका बहुवचन आकारान्त शब्द के ऐसा हो सकता है। जैसे, 'अपनो' से हुआ यह कुछ बेगानों से क्या होता।

## अभ्यास।

वचन किसे कहते हैं? वचन से क्या मालूम होता है? द्विवचन का बोध कैसे किया जाता है? कहाँ २ एकवचन में भी बहुवचन का प्रयोग होता है? बहुवचन-बोधक शब्द कौन २ हैं? आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के बहुवचन कैसे बनते हैं? निर्वि-

भक्तिक आकारान्त, ईकारान्त और उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन कैसे बनते हैं? विभक्ति आने पर पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन बनने में क्या २ हेरफेर होते हैं?

## कारक (Case)

कारक उसे कहते हैं जिसके द्वारा वाक्य में विशेषतः क्रिया और सामान्यतः अन्यान्य संज्ञाओं के साथ संज्ञाओं का ठीक २ सम्बन्ध सूचित होता है।

* हिन्दी भाषा में कारक आठ माने जाते हैं:—कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण और सम्बोधन।

कर्ता (Nominative) उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार को करे। जैसे—लड़का हँसता है। लड़की रोती है। इन वाक्यों में लड़का हँसने का और लड़की रोने का काम करती है, इससे ये कर्ता हुए।

क्रिया के लिङ्ग, वचन जिस कर्ता के अनुसार होते हैं वह उक्त या प्रधान कहलाता है। जैसे, ऊपर के दोनों वाक्यों में 'रोता है' 'रोती है' ये दोनों पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग क्रियायें लड़का और लड़की के अनुसार आयी हैं। इससे ये दोनों कर्ता उक्त और प्रधान हुए।

वाक्य में अप्रधान-रूप से भी कर्ता आते हैं। जैसे, राम ने रोटी खायी। स्त्री ने नौकर से काम कराये। इन दोनों वाक्यों में 'खायी' 'और कराये' वे दोनों क्रियायें 'राम' और 'स्त्री' के अनुसार नहीं हैं। इससे इन दोनों वाक्यों के कर्ता अनुक्त या

* कितने वैयाकरण छ ही कारक मानते हैं। उनके मत में क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध न होने के कारण सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं हैं। कितने कर्ता और कर्म इन्हीं दोनों को कारक मानते हैं।

अप्रधान कहे जाते हैं। ये क्रियायें कर्म के अनुसार हैं, इससे इन वाक्यों के कर्म ही उक्त हैं।

दो प्रकार से और भी अप्रधान कर्ता होते हैं। जैसे, 'मोहन से' पूड़ी खायी गयी। तू 'उससे' काम कराता है। इन दोनों वाक्यों में एक कर्ता कर्मवाच्य और दूसरा प्रयोज्य है। 'खायी गयी' क्रिया पूड़ी के अनुसार है। अतः 'मोहन से' यह अप्रधान कर्ता हुआ। दूसरे में 'उससे' प्रयोज्य कर्ता है। क्योंकि, 'उससे' काम प्रेरित करके कराया जाता है और 'तू' प्रधान कर्ता होता है। अतः 'मोहन से' और 'उससे' ये दोनों अप्रधान कर्ता हुए।

इस प्रकार कर्ता वाक्य में तीन प्रकार से आये। एक विना विभक्ति के, दूसरा 'ने' के साथ और तीसरा 'से' के साथ।*

कर्म ( Objective ) उसे कहते हैं जिस पर कर्ता के व्यापार का फल हो। जैसे, मोहन आम खाता है। कोतवाल चोर को पीटता है। इन दोनों वाक्यों में 'खाना' और 'पीटना' क्रिया है। 'खाने' और 'पीटने' के काम 'मोहन' और 'कोतवाल' करते हैं और उन दोनों का फल 'आम' और 'चोर' पर पड़ता है।

कर्म भी उक्त और अनुक्त होते हैं। इन दोनों वाक्यों के कर्म अनुक्त हैं क्योंकि इनमें कर्ता के अनुसार क्रियायें हैं और ऊपर के 'ने' तथा 'से' के उदाहरण वाले वाक्यों में कर्म उक्त है। क्योंकि उनमें कर्म ही के अनुसार क्रियायें आयी हैं।

---

* हिन्दी कौमुदीकार 'मुझे' खाना है, 'उसे' जाना चाहिये इन वाक्यों में 'मुझको' और 'उसको' के स्थान पर आये हुए 'मुझे' और 'उसे' भी कर्ता ही कहते हैं और उनमें दूसरी विभक्ति मानते हैं।

द्विकर्मक धातु के दो कर्म होते हैं—एक प्रधान और दूसरा अप्रधान। जैसे, मैं गाय को पानी पिलाता हूँ। चोर ने मालिक को लाठी मारी। इन वाक्यों में 'पानी' और 'लाठी' प्रधान तथा 'गाय को' और 'मालिक को' अप्रधान कर्म हैं। प्रायः प्राणिवाचक अप्रधान और अप्राणिवाचक प्रधान कर्म होते हैं।

यद्यपि अकर्मक धातु के कर्म नहीं होते तथापि उसीकी जाति का, उसीसे निकला हुआ, वैसा ही कर्म कभी २ बोल दिया करते हैं। ऐसे कर्म को सजातीय ( Cognate ) कर्म कहते हैं। जैसे, वह अच्छी लड़ाई लड़ा। वह लम्बी दौड़ दौड़ा।

करण ( Instrumental )-उसे कहते हैं जिसके द्वारा क्रिया सिद्ध होती है। जैसे,—लड़का हाथ से भात खाता है। यहाँ खाने की क्रिया हाथ से सिद्ध होती है, इससे हाथ करण कारक हुआ।

कितने वैयाकरण 'के हेतु', 'के द्वारा', 'के कारण', 'करके' भी करण कारक में प्रयोग करते हैं। जैसे, आलस्य 'के हेतु' घर जा न सका। वृष्टि 'के कारण' बाहर निकलना बन्द हो गया। ज्ञान 'के द्वारा' मोक्ष होता है। फूट 'करके' मैंने काम बिगाड़ा। हेतु और कारण के साथ कभी २ 'से' भी लाते हैं।

सम्प्रदान ( Dative ) कारक वह कहाता है जिसके निमित्त कर्त्ता क्रिया का व्यापार करता है। जैसे, चेले ने गुरु को पूजा दी। इसमें पूजा देने का व्यापार चेला गुरु के लिये करता है, इससे 'गुरु को' सम्प्रदानकारक हुआ।

'को' के अतिरिक्त 'के लिये' 'के वास्ते' 'के अर्थ' 'के निमित्त' आदि भी शब्द सम्प्रदान में आते हैं। जैसे—ज्ञान 'के

वास्ते' विद्या पढ़ता हूँ। धन 'के लिये' व्यापार करना है। परोपकार 'के अर्थ' सज्जनों की सम्पत्ति है। दान 'के निमित्त' धन सञ्चय करो।

अपादान ( Ablative ) वह है जिसके द्वारा एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अलग होना प्रकट हो। जैसे, वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। इस वाक्य में 'वृक्ष से' अपादानकारक है। क्यों-कि पत्ते उससे अलग होते हैं।

दुहना, जाचना, पकाना आदि दो कर्म वाले जो धातु हैं उनके प्रयोग में दो प्रकार के वाक्य बोले जाते हैं। जैसे, हम गाय से दूध दुहते हैं। दरिद्र धनी से धन जाचते हैं। और हम गाय को दुहते हैं। दरिद्र धनी को जाचते हैं। इन वाक्यों में जब प्रधान कर्म 'दूध' और 'धन' शब्द रहते हैं तो अप्रधान कर्म में 'से' आता है नहीं तो वह 'को' में बदल जाता है।

सम्बन्ध (Genitive) वह है जिससे स्वत्व (अपनापन) सम्बन्ध आदि प्रकाशित होता है। जैसे, मोहन के घोड़े दौड़ते हैं। श्याम का पत्र आया। मन की शक्ति बड़ी प्रबल है।

सम्बन्ध कई प्रकार के हैं। जैसे, कर्तृ-कर्मभाव सम्बन्ध, जन्य-जनकभाव सम्बन्ध, स्व-स्वामिभाव सम्बन्ध, कार्य-कारण-भाव सम्बन्ध, अङ्गाङ्गिभाव सम्बन्ध, सेव्य-सेवकभाव सम्बन्ध आदि। इनके क्रमशः ये उदाहरण हैं। पाणिनि का व्याकरण, राम का पुत्र, राजा का नौकर, सोने के कड़े, हाँथ की उँगली, भगवान् का भक्त, इत्यादि।

अधिकरण (Locative) वह है जिसके आश्रय से कर्ता व्यापार करे। जैसे, वह घर में रहता है। तू घोड़े पर चढ़ता

है। इनमें रहने और चढ़ने का व्यापार 'घर' और 'घोड़े' ही के आश्रय से सिद्ध होता है।

आधार तीन प्रकार के हैं—औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक।

जिस आधार के किसी अवयव के साथ संयोग रहता है वह औपश्लेषिक; जिस आधार से बिषय का बोध हो वह वैषयिक; और जिस आधार में आधेय (रहनेवाला पदार्थ) सम्पूर्ण-रूप से व्याप्त हो वह अभिव्यापक है। जैसे, पेड़ पर बन्दर है। भोजन में इच्छा है। तिल में तेल है। पहले वाक्य में औपश्लेषिक आधार है। क्योंकि, बन्दर वृक्ष के किसी एक भाग में है। दूसरे वाक्य में वैषयिक आधार है। क्योंकि, इच्छा का विषय भोजन है। और, तीसरे वाक्य में अभिव्यापक आधार है। क्योंकि, तेल तिल के सर्वांश में व्याप्त है।

सम्बोधन (Vocative) उसे कहते हैं जिसके द्वारा पुकार कर या चिता कर किसीको अपने सन्मुख किया जाता है। जैसे, हे महाराज! पाण्डे जी! आइये।

सम्बोधन के दो प्रकार के चिह्न हैं—एक आदर-सूचक और दूसरा अनादर-सूचक। जैसे, हे राम, अहो कृष्ण, अयि सुन्दरि, अबे पाजी, अरे लड़के, अरे पगली, हा राम! इत्यादि।

इस प्रकार प्रत्येक संज्ञा की आठ अवस्थायें हुई और उनके सूचक चिन्ह भी आठ ही हुए। वे नीचे लिखे जाते हैं। इन्हीं चिन्हों को * विभक्ति कहते हैं। सम्बोधन के चिन्ह विभक्ति में परिगणित नहीं होते।

---

* विभक्तियों के सम्बन्ध में वैयाकरणों के भिन्न २ मत हैं। कोई २ पहले रूप के लिये कोई विभक्ति नहीं मानते। कोई २ 'ने' के बदले 'से' मानते हैं और कोई २ इन्हें अलग ही मानते हैं। कितने को, से, का, में या पर इन्हें ही विभक्ति के चिन्ह मानते हैं और कितने को, ने, से और में को।

| कारक | विभक्तियाँ | कारक | विभक्तियाँ |
|---|---|---|---|
| कर्ता | ने, से, | अपादान | से |
| कर्म | को | सम्बोधन | का, के, की |
| करण | से, कर के | अधिकरण | में, पर |
| सम्प्रदान | को, के लिये, | सम्बोधन | हे, अरे आदि |

कर्ता आदि सात कारकों को क्रमशः प्रथम कारक, द्वितीय कारक, तृतीय कारक, चतुर्थ कारक, पञ्चम कारक, षष्ठ कारक और सप्तम कारक कहते हैं। और, इनमें आनेवाली विभक्तियाँ प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी कहलाती हैं। सम्बोधन का रूप प्रथम कारक सा होता है।

## अभ्यास।

कारक किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं? कर्ता क्या है? उक्त और अनुक्त किस २ को कहते हैं? कर्ताकारक की कौन २ विभक्तियाँ हैं और वे कहाँ २ आती हैं? कर्मकारक कौन कहाता है? प्रधान और अप्रधान कर्म कैसे होते हैं? अकर्मक धातु का कर्म कैसे हो सकता है? करण और सम्प्रदान कारक में कौन २ चिन्ह हो सकते हैं? इन दोनों के लक्षण क्या हैं? अपादान का लक्षण क्या है? द्विकर्मक धातुओं में कर्म कैसे प्रयोग किये जाते हैं? सम्बन्ध और अधिकरण के लक्षण क्या हैं? इन दोनों के कितने भेद हैं? उनके नाम बतावो और उदाहरण देकर समझावो। सम्बोधन किसे कहते हैं? इसके कितने चिन्ह हैं? आठों कारकों के चिन्ह कौन२ हैं? अपादान तथा सम्प्रदान कौन कारक कहलाते हैं? इनकी कौन २ विभक्तियाँ हैं?

## शब्द-रूपावली।

लिङ्ग, वचन और कारकों के भेद से संज्ञा के रूपों में जो भेद होते हैं उन्हें कारक-रचना कहते हैं। नीचे कुछ शब्दों की कारक-रचना के अनुसार शब्दरूपावली दी जाती है।

अकारान्त पुल्लिङ्ग बालक शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | बालक, बालक ने | बालक, बालकों ने |
| कर्म | बालक को | बालकों को |
| करण | बालक से | बालकों से |
| सम्प्रदान | बालक को, के लिये | बालकों को, के लिये |
| अपादान | बालक से | बालकों से |
| सम्बन्ध | बालक का, के, की | बालकों का, के, की |
| अधिकरण | बालक में, पर | बालकों में, पर |
| सम्बोधन | हे बालक | हे बालको |

अन्यान्य अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

अकरान्त स्त्री-लिङ्ग बात शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | बात, बात ने | बातें, बातों ने |
| कर्म | बात को | बातों को |

आगे के शेष रूप बालक शब्द के समान होते हैं। अन्यान्य अकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्दों के रूप भी इसी प्रकार होते हैं।

आकारान्त पुल्लिङ्ग घोड़ा शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | घोड़ा, घोड़े ने | घोड़े, घोड़ों ने |
| कर्म | घोड़े को | घोड़ों को |
| करण | घोड़े से | घोड़ों से |
| सम्प्रदान | घोड़े को, के लिये | घोड़ों को, के लिये |
| अपादान | घोड़े से | घोड़ों से |
| सम्बन्ध | घोड़े का, के, की | घोड़ों का, के, की |

| | | |
|---|---|---|
| अधिकरण | घोड़े में, पर | घोड़ों में, पर |
| सम्बोधन | हे घोड़े, | हे घोड़ो, |

अन्यान्य आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

आकारान्त स्त्री-लिङ्ग माला शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | माला, माला ने | मालायें, मालाओं ने |
| कर्म | माला को | मालाओं को |
| करण | माला से | मालाओं से |
| सम्प्रदान | माला को, के लिये | मालाओं को, के लिये |
| अपादान | माला से | मालाओं से |
| सम्बन्ध | माला का, के, की | मालाओं का, के, की |
| अधिकरण | माला में, पर | मालाओं में, पर |
| सम्बोधन | हे माला | हे मालाओ |

अन्यान्य आकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्दों के रूप भी ऐसे ही होते हैं।

आकारान्त पुल्लिङ्ग संस्कृतसिद्ध राजा शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | राजा, राजा ने | राजा ने, राजाओं ने |
| कर्म | राजा को | राजाओं को |
| करण | राजा से | राजाओं से |
| सम्प्रदान | राजा को, के लिये | राजाओं को, के लिये |
| अपादान | राजा से | राजाओं से |
| सम्बन्ध | राजा का, के, की | राजाओं का, के, की |
| अधिकरण | राजा में, पर | राजाओं में, पर |
| सम्बोधन | हे राजा | हे राजाओ |

अन्यान्य आकारान्त बने हुए संस्कृत आत्मा, पिता, आदि

शब्दों के रूप भी ऐसे ही होते हैं। व्यक्तिवाचक मन्ना, मोहना आदि और सम्बन्धवाचक काका, मामा, फूफा आदि शब्दों के रूप भी राजा शब्द के समान होते हैं।

इकारान्त पुल्लिङ्ग पति शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | पति, पति ने | पति, पतियों ने |
| कर्म | पति को | पतियों को |
| करण | पति से | पतियों से |
| सम्प्रदान | पति को, के लिये | पतियों को, के लिये |
| अपादान | पति से | पतियों से |
| सम्बन्ध | पति का, के, की | पतियों का, के, की |
| अधिकरण | पति में, पर | पतियों में, पर |
| सम्बोधन | हे पति | हे पतियो |

अन्यान्य इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

इकारान्त स्त्री-लिङ्ग मति शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | मति, मति ने | मतियाँ; मतियों ने |
| कर्म | मति को, | मतियों को |

आगे के शेष अन्यान्य रूप पति शब्द के समान होते हैं। अन्यान्य इकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

ईकारान्त पुल्लिङ्ग माली शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | माली, माली ने | माली, मालियों ने |
| कर्म | माली को | मालियों को |
| करण | माली से | मालियों से |
| सम्प्रदान | माली को, के लिये | मालियों को, के लिये |

| | | |
|---|---|---|
| अपादान | माली से | मालियों से |
| सम्बन्ध | माली का, के, की | मालियों का, के, की |
| अधिकरण | माली में, पर | मालियों में, |
| सम्बोधन | हे माली | हे मालियो |

अन्यान्य ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

ईकारान्त स्त्री-लिङ्ग नदी शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | नदी, नदी ने | नदियाँ, नदियों ने |
| कर्म | नदी को | नदियों को |

आगे के शेष अन्याय रूप माली शब्द के समान होते हैं। अन्यान्य ईकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

उकारान्त पुल्लिङ्ग साधु-शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | साधु, साधु ने | साधु, साधुओं ने |
| कर्म | साधु को | साधुओं को |
| करण | साधु से | साधुओं से |
| सम्प्रदान | साधु को, के लिये | साधुओं को, के लिये |
| अपादान | साधु से | साधुओं से |
| सम्बन्ध | साधु का, के, की | साधुओं का, के, की |
| अधिकरण | साधु में, पर | साधुओं में, पर |
| सम्बोधन | हे साधु | हे साधुओ |

अन्यान्य उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग वस्तु शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | वस्तु, वस्तु ने | वस्तुयें, वस्तुओं ने |

| | | |
|---|---|---|
| कर्म | वस्तु को | वस्तुओं को |

आगे के शेष अन्यान्य रूप साधु शब्द के समान होते हैं। अन्यान्य उकारान्त स्त्री-लिङ्ग ऋतु आदि शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग भालू शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | भालू, भालू ने | भालू, भालुओं ने |
| कर्म | भालू को | भालुओं को |
| करण | भालू से | भालुओं से |
| सम्प्रदान | भालू को, के लिये | भालुओं को. के लिये |
| अपादान | भालू से | भालुओं से |
| सम्बन्ध | भालू का, के, की | भालुओं का, के, की |
| अधिकरण | भालू में, पर | भालुओं में, पर |
| सम्बोधन | हे भालू | हे भालुओ |

अन्यान्य ऊकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं। स्त्रीलिङ्ग ऊकारन्त जोड़ू, बहू आदि शब्दों के भी रूप भालू शब्द के ही समान होते हैं।

एकारान्त पुलिङ्ग चौबे शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | चौबे, चौबे ने | चौबे, चौबेओं ने |
| कर्म | चौबे को | चौबेओं को |
| करण | चौबे से | चौबेओं से |
| सम्प्रदान | चौबे को, के लिये | चौबेओं को, के लिये |
| अपादान | चौबे से | चौबेओं से |
| सम्बन्ध | चौबे का, के, की | चौबेओं का, के, की |

| | | |
|---|---|---|
| अधिकरण | चौबे में, पर | चौबेओं में, पर |
| सम्बोधन | हे चौबे | हे चौबेओ |

अन्यान्य एकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं।

ओकारान्त पुलिङ्ग कोदो शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | कोदो, कोदो ने | कोदो, कोदोओं ने |
| कर्म | कोदो को | कोदोओं को |
| करण | कोदो से | कोदोओं से |
| सम्प्रदान | कोदो को, के लिये | कोदोओं को, के लिये |
| अपादान | कोदो से | कोदोओं से |
| सम्बन्ध | कोदो का, के, की | कोदोओं का, के, की |
| अधिकरण | कोदो में, पर | कोदोओं में, पर |
| सम्बोधन | हे कोदो | कोदोओ |

अन्यान्य ओकारात पुल्लिङ्ग शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

ओकारान्त स्त्री-लिङ्ग सरसों शब्द।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | सरसों, सरसों ने | सरसों, सरसोंओं ने |
| कर्म | सरसों को | सरसोंओं को |

आगे के शेष अन्यान्य रूप कोदो शब्द के समान होते हैं। अन्यान्य ओकारान्त स्त्री-लिङ्ग शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं।

अभ्यास।

बात, आज्ञा, पिता, मति, बहू, नदी, सरसों शब्द के सब रूप ले जावो।

## शाब्दबोध (Parsing)

वाक्य में शब्दों के भेद, परिचय तथा दूसरे २ शब्दों से उनका सम्बन्ध बताने को शब्दबोध या पदपरिचय कहते हैं।

संज्ञा के शाब्दबोध में ( क ) प्रकार ( जातिवाचक, व्यक्तिवाचक इत्यादि ) ( ख ) लिङ्ग ( स्त्रीलिङ्ग या पुल्लिङ्ग ); ( ग ) वचन ( एकवचन बहुवचन इत्यादि ); ( घ ) कारक (कर्ता, कर्म आदि) और (ङ) भिन्न २ शब्दों के साथ सम्बन्ध बताना चाहिये। जैसे—

राम एक किताब लाया।

राम—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिङ्ग, एकवचन, कर्ता कारक, 'लाया' इस क्रिया का कर्ता।

किताब—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, कर्म-कारक 'लाया' इस क्रिया का कर्म।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों की संज्ञाओं का शब्दबोध लिखो:—

राजा राजगद्दी पर बैठे। मोहन की बहन सोहन की स्त्री है। आरा एक जिला है। बच्चों की बुद्धिमानी बड़ाई के लायक है। पण्डितजी आये। राम ने हाते में एक बाग लगवाया है। नमक और मिट्टी के तेल की दर आज कल बहुत चढ़ी है। मेले में झुंड के झुंड स्त्री-पुरुष दीख पड़ते हैं। नदी की बड़ी गहराई है।

## विशेषण (Adjective)

कह आये हैं कि विशेषण वह है जो संज्ञा के गुण प्रकट करे। जिस संज्ञा का गुण प्रकट किया जाता है वह विशेष्य कहलाता है। जैसे, वे सज्जन पुरुष हैं। इस वाक्य में 'सज्जन' शब्द विशेषण है, क्योंकि पुरुष शब्द का वह गुण प्रकट करता है और पुरुष विशेष्य है, क्योंकि इसी शब्द का गुण प्रकट किया जाता है।

विशेष्य की जब अतिशयता प्रकट करनी होती है तो प्रायः विशेषण दुहरा दिये जाते हैं। जैसे, वे 'लाल लाल'

आँख दिखा कर बोले। 'ठंढी ठंढी' हवा ने मन को मस्त कर दिया, इत्यादि।

जब विशेषण की भी विशेषता प्रकट करनी होती है तो विशेषण के भी विशेषण आते हैं। जैसे स्वामी जी ने 'बहुत' ही अच्छी बात कही। वे 'बड़े' जबर्दस्त आदमी हैं।

## १—विशेषण की रचना।

विशेषण के लिङ्ग, वचन और कारक विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे, भोले भाले लड़के खेलते हैं। भोली भाली लड़कियाँ गाती हैं। भला आदमी दयालु होता है। भले आदमी को (भले को) भला ही सूझता है। भले घर (में) बायन दिया, इत्यादि।

यदि आकारान्त विशेषण हो तो पुल्लिङ्ग में निर्विभक्तिक एकवचन विशेष्य के साथ वह ज्यों का त्यों रहता है और नहीं तो एकार हो जाता है। अर्थात् सविभक्तिक और बहुवचन विशेष्य होने से आकार का एकार हो जाता है। स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त विशेषण सदा ईकारान्त हो जाते हैं। जैसे, अच्छा लड़का मन से पढ़ता है। दूसरा लड़का मेहनती है। ऊँचे पेड़ पर मत चढ़ो। देहाती सीधे सादे होते हैं। पहले लड़के को बुलावो। ऊँचा पेड़ देखो। पीले कपड़े लावो। लचकीली लता सलोनी होती है। गोरी स्त्री पीली साड़ी पहने हुई है। रूखी सूखी बात बड़ी कड़वी होती है। वह लम्बी २ डगों (से) चलता है। छुठी लड़की से पूछो। जैसा काम वैसा नाम। जैसी करनी तैसी भरनी।

अकारान्त विशेषणों में विशेष्य के कारण कोई हेर फेर नहीं होता। जैसे, चौकस आदमी, चौकस स्त्री, चतुर लड़का, चतुर लड़की, कोमल कलियाँ, कोमल पत्ते इत्यादि।

कितने वैयाकरण संस्कृत के विशेषणों को भी पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग विशेष्य के अनुसार पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं। जैसे, सुन्दरी स्त्री, सुन्दर पुरुष।

संस्कृत विशेषणों के लिङ्ग-परिवर्तन के सम्बन्ध में हिन्दी के लिये यह सिद्धान्त उत्तम समझ पड़ता है कि जिन विशेषणों में स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग के कारण विशेष परिवर्तन प्रत्यक्ष है और विशेष्य के साथ संयोग होने में जो विशेषण कुछ खटकते हैं उनके तो लिङ्ग के कारण परिवर्तित रूप ही विशेष्य के साथ अच्छे होंगे। जैसे, श्रीमान् पुरुष, श्रीमती स्त्री, गुणवान् राजा, गुणवती रानी इत्यादि। और जो किसी रूप में खटकते नहीं वे दोनों रूप में लिखे जा सकते हैं। जैसे सुन्दर स्त्री वा सुन्दरी स्त्री और सुन्दर पुरुष।

बहुत से वैयाकरणों का विचार है कि का-विभक्ति लगा शब्द सम्बन्ध-विशेषण और सा-प्रत्यय लगा शब्द सादृश्य-वाचक विशेषण कहलाता है। जैसे-राम का घोड़ा, मोहन की गाय और श्याम के कपड़े अच्छे हैं। श्याम का सा लड़का, देवकन्या की सी लड़कियों और सिंह के से लड़कों के साथ खेलता है। इन वाक्यों में पहला सम्बन्ध-विशेषण और दूसरा सादृश्यवाचक विशेषण है। सर्वनाम में का, के, की के स्थान पर रा, रे, री समझना चाहिये।

यदि संख्यावाचक विशेषण में निश्चय प्रकट करना हो तो उसके साथ कहीं सानुनासिक और कहीं निरनुनासिक ओ जोड़ देते हैं। जैसे, वे चारों लड़के वेद पढ़ गये हैं। दोनों लड़के गुणी थे।

संख्यावाचक विशेषणों तथा यह, वह, जो, सो, कै, कई, कोई विशेषणों में लिङ्ग-भेद नहीं होता।

यदि समुदाय से दो चार व्यक्ति लिये जाँय तो संख्यावाचक शब्दों ही में विभक्ति जोड़ते हैं। जैसे—मैं सब लड़कों में से केवल दश से ही पूछना चाहता हूँ। ऐसे ही सब समझना चाहिये। इसमें संख्यावाचक 'दश' में ही 'से' विभक्ति लगी है।

कभी २ विशेषण विशेष्य के बिना ही जातिवाचक और व्यक्तिवाचक होकर आते हैं। जैसे, पण्डित जी आये। भलेमानसों को प्रपञ्च से क्या काम? इन वाक्यों में पण्डित जी व्यक्तिवाचक और भलेमानस जातिवाचक के समान हैं। क्योंकि पण्डित से किसी खास पण्डित का और भलेमानस से भलेमानस मात्र का मतलब है। ऐसे ही 'झूठ बोलना पण्डितों को उचित नहीं' इत्यादि वाक्य होते हैं।

जब विशेष्य नहीं आता तब विशेषण ही में विशेष्य के सब कार्य होते हैं। जैसे, भूखों को खिलावो। दीनों को दान दो। भले को भला, बुरे को बुरा। विद्यार्थियों को सहायता दो। विरागियों को घर से क्या काम? इत्यादि।

कर्तृवाचक, कर्मवाचक और क्रियाद्योतक संज्ञा भी विशेषण हो कर के आती हैं। जैसे, 'लिखनेवाले' लड़के को कलम दो। 'खानेवाले को' भात परोसो। 'मरा हुआ घोड़ा' भी दाना खाता है। 'जाना पहचाना' आदमी भी भूल सकता है। 'डूबती हुई नाव' से दो आदमी बच आये। 'हिलती डाल' से पके फल टपक पड़े। इन छ वाक्यों में ऊपर के कहे हुए तीनों विशेषणों के क्रमशः दो २ उदाहरण दिये हुए हैं।

### अभ्यास।

विशेष विशेषण के लक्षण क्या हैं? कब विशेषण दुहराये जाते हैं और कब विशेषण के भी विशेषण आते हैं? लिङ्ग और वचन के कारण कैसे विशेषणों में परिवर्तन होते हैं? संस्कृत विशेषणों में परिवर्तन का कैसा नियम है? सादृश्य-वाचक और

सम्बन्धी विशेषण कैसे होते हैं ? जाति-वाचक और व्यक्ति-वाचक विशेषण कैसे होते हैं ? कब और कैसे विशेषणों में कारक आदि आते हैं ? कर्तृवाचक, कर्मवाचक और क्रिया-द्योतक विशेषणों के दो दो उदाहरण कहो। मैली धोती, दुबले लड़के, पतली छड़ी, इन तीनों विशेषणों में ईकार, और एकार क्यों आये हैं ?

## ( २ ) विशेषण के भेद।

विशेषण चार प्रकार के हैं—गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक और सर्वनाम-सम्बन्धी।

'गुणवाचक विशेषण' उसे कहते हैं जो पदार्थ के गुण, अवस्था और दशा को प्रकट करता है। जैसे, सज्जन मनुष्य, बीमार आदमी, ऊँची दीवार आदि।

'परिमाणवाचक' विशेषण वे हैं जिनसे कोई परिमाण प्रकट हो। जैसे, थोड़ा, बहुत, सब, आधा, कुछ, बड़ा, छोटा आदि।

'संख्यावाचक विशेषण' उसे कहते हैं जो वस्तु का परिमाण अथवा संख्या दिखावे। जैसे, थोड़ा, बहुत, सभी, तीन, चौथा, सैकड़ों, आदि।

संख्यावाचक के तीन भेद हैं। जैसे—निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक और पार्थक्यसूचक।

( १ ) 'निश्चयवाचक विशेषण' वे हैं, जिनसे कोई निश्चित संख्या जानी जाती है। जैसे—चारो, दोनों, पाँचवाँ, छठा, दुगुना, तिगुना, इत्यादि।

निश्चयवाचक के भी तीन प्रकार हैं—निश्चित-संख्या-सूचक, अनुक्रमार्थक और आवृत्ति-वाचक।

( क ) 'निश्चित-संख्या-सूचक' वे हैं जिनसे पूर्ण संख्या जानी जाय। जैसे, दश, पाँच, चारो, सौ, हज़ार, इत्यादि।

(ख) 'अनुक्रमार्थक' वे हैं जिनसे क्रम का बोध हो। जैसे—पहला, दूसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा, दशवाँ, इत्यादि।

(ग) आवृत्ति-सूचक वे हैं जिनसे आवृत्ति जानी जाय। जैसे—दुगुना, तिगुना, दशगुना सौगुना, हजारगुना।

(२) 'अनिश्चयवाचक' विशेषण वे हैं जिनसे कोई निश्चित संख्या नहीं जानी जाता। जैसे—सब, बहुतेरे, थोड़े, अधिक, कुछ इत्यादि। इसमें और परिमाण-वाचक विशेषण में सादृश्य है।

(३) 'पार्थक्य-सूचक' विशेषण वे हैं जिनसे अलगाव प्रकट होता है। जैसे—हर एक, प्रत्येक, दूसरे, कई, इत्यादि।

(४) 'सर्वनाम-सम्बन्धी' विशेषण उसे कहते हैं जो सर्वनाम हो कर अपने विशेष्य का गुण बतलाता है। जैसे—'यह' किसकी किताब है? कल्ह 'कौन' आया था? 'जो' वस्तु चाहो 'सो' (वस्तु) लो। 'मेरा' घर यहाँ नहीं है? इस काम को 'कोई' आदमी नहीं कर सकता। 'वह' नर चोर है। 'हम' गरीब को कौन जानता है। इन वाक्यों में घेरे हुए शब्द सर्वनाम-सम्बन्धी विशेषण हैं। 'यह' 'वह' कही गयी संज्ञा के बतलाने के कारण 'दर्शक-विशेषण' भी कहे जाते हैं। जैसे—'यह' घर, 'वह' आदमी, इत्यादि।

## (३) तुलना (Comparison)

दो संज्ञाओं के गुणों के मिलान करने को तुलना कहते हैं। हिन्दी में इसके दो चिन्ह हैं 'सा' और 'से'। समानता में 'सा' का और न्यूनता या अधिकता में 'से' का प्रयोग होता है। जैसे, मोहन 'सा' सोहन धनी है। विद्या में वह

मुझ 'से' उतर कर है। दरिद्र 'से' धनी सुखी है। वह सब 'से' बली है।

कभी २ संस्कृत के ढंग पर तर और तम प्रत्यय लगा कर भी तुलना करते हैं। जैसे—वह मेरा प्रिय है। वह दोनों में प्रियतर है। वह सब में प्रियतम है। विशेषणवाचक शब्दों में जब दो के साथ तुलना होती है तब 'तर' और दो से अधिक के लिये तुलना में 'तम' आता है।

अभ्यास।

विशेषण के कितने प्रकार हैं? प्रत्येक का लक्षण सोदाहरण कहो। संख्यावाचक के मुख्य २ भेद और अवान्तर भेद कितने हैं? प्रत्येक के लक्षण और उदाहरण बतावो। तुलना किसे कहते हैं और वह कितने प्रकार से की जाती है?

## शाब्दबोध।

प्रायः संज्ञा ही के समान विशेषण का भी शाब्दबोध होता है। इसमें केवल संज्ञा के स्थान पर विशेषण के प्रकार आदि बताये जाते हैं। जैसे—

सज्जन मनुष्य बहुत बातें नहीं बनाते।

सज्जन—विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिग, बहुवचन, कर्ता-कारक, इसका विशेष्य 'मनुष्य' है।

बहुत—विशेषण, परिमाणवाचक, अनिश्चय-वाचक, स्त्री-लिंग, बहुवचन, 'बातें' इसका विशेष्य है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों के विशेषणों का शब्दबोध करोः—

वह आदमी मोटा है। मैं थोड़ा बहुत खाता हूँ। जो आदमी जैसा करेगा वह वैसा ही फल पावेगा। चारो चोरों को बुलावो। लाल कपड़ा उजले कपड़े से चटकदार होता है। मेरा पहला लड़का छठे क्लास में है। वह दाम की दुगनी रकम माँगता है। कोई दे या न दे वह तो जरूर देगा। मेरा प्रियतम भारत सब देशों से न्यारा है।

## सर्वनाम (Pronoun)

संज्ञा के बदले में सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। इससे लाभ यह होता है कि एक ही संज्ञा का बार २ वाक्य में प्रयोग नहीं करना पड़ता। जैसे— "मोहन कहाँ है? उसे मैं देर से ढूंढ रहा हूँ।" इस वाक्य में 'उसे' मोहन के स्थान पर आया है; इससे वह सर्वनाम है।

सर्वनाम का कोई लिंग नियत नहीं है। वे जिन संज्ञाओं के स्थान में आते हैं उनके ही अनुसार उनका भी लिंग समझा जाता है। जैसे—मोहन ने कहा कि मैं काम न करूँगा। स्त्री ने कहा कि मैं यह काम जरूर करूँगी।

सर्वनाम के पाँच भेद हैं। पुरुषवाचक—जैसे, मैं, तू, वह। निश्चयवाचक—जैसे–यह, ये; वह, वे। अनिश्चयवाचक—जैसे–कोई। आदर-सूचक—जैसे, आप। सम्बन्धवाचक—जैसे, जो, सो; और प्रश्नवाचक—जैसे, कौन?

## पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

मैं* तू और वह पुरुषवाची सर्वनाम इसलिये कहाते हैं कि ये उन पुरुषों के स्थान में आते हैं जो, जिससे, जिसके विषय में कहते हैं। अर्थात्, ये जो कहनेवाले, जो सुननेवाले, और जिसके विषय में कुछ कहा गया हो उसकी ओर निर्देश करते हैं।

---

* पुरुषवाची सर्वनाम के उपर्युक्त लक्षण ठीक नहीं है। क्योंकि 'वह तेरी बात मुझ से' कहाता है। यहाँ कहने वाला अन्य पुरुष, सुनने वाला उत्तम पुरुष और जिसके विषय में कहा जाता है वह मध्यम पुरुष हो गया। इससे मैं को प्रथम, तू को मध्यम और शेष संज्ञाओं को अन्य पुरुष कहना ठीक है। तथापि साधारणतः प्रायः सभी लोग उपर्युक्त लक्षण ही लिखते हैं।

( क ) प्रथम या उत्तम पुरुष वे हैं जो कहनेवाले की ओर निर्देश करते हैं। जैसे—मैं और हम।

( ख ) द्वितीय पुरुष वे हैं जो सुननेवाले की ओर निर्देश करते हैं। जैसे—तू, तुम और आप।

( ग ) तृतीय वा अन्य पुरुष वे हैं जो सुननेवाले की ओर निर्देश करते हैं। जैसे—यह, ये, वह वे; तथा शेष सब संज्ञायें।

## 'मैं' और 'तू' की कारक-रचना।

कर्ता कारक के एकवचन में 'मैं' और 'तू' सदा ज्यों का त्यों रहता है और बहुवचन में 'मैं' को 'हम' और 'तू' को 'तुम' हो जाता है।

सम्बन्ध-कारक को छोड़ कर्म-कारक से अधिकरण-कारक तक एकवचन में 'मैं' को 'मुझ' 'तू' को 'तुझ' और बहुवचन में 'मैं' को 'हम' और 'तू' को 'तुम' आदेश हो जाता है।

सम्प्रदान और सम्बन्ध के एकवचन में 'तू' को 'ते' और 'मैं' को 'मे' और बहुवचन में 'मैं' को 'हमा' और 'तू' को 'तुम्हा' हो जाता है और जहाँ 'क' रहता है वहाँ 'र' हो जाता है।

सम्प्रदान और कर्म-कारक में विकल्प से एकवचन और बहुवचन में 'को' के स्थान पर यथाक्रम 'ए' और 'एं' होता है।

### उत्तम पुरुष 'मैं' सर्वनाम के रूप।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | मैं, मैंने | हम, हमने |
| कर्म | मुझ को, मुझे | हमको, हमें |
| करण | मुझ से | हम से |

| | | |
|---|---|---|
| सम्प्रदान | मेरे लिये, मुझे | हमारे लिये, हमें |
| अपादान | मुझ से | हम से |
| सम्बन्ध | मेरा, रे, री | हमारा, रे, री |
| अधिकरण | मुझ पर, में | हम पर, में |

सर्वनाम का सम्बोधन नहीं होता। यह सब जगह समझना चाहिये।

### मध्यम पुरुष 'तू' सर्वनाम के रूप।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | तू, तूने | तुम, तुमने |
| कर्म | तुझ को, तुझे | तुमको,* तुम्हें |
| करण | तुझसे | तुमसे |
| सम्प्रदान | तेरे लिये, तुझे | तुम्हारे लिये, तुम्हें |
| अपादान | तुझ से | तुम से |
| सम्बन्ध | तेरा, रे, री | तुम्हारा, रे, री |
| अधिकरण | तुझ पर, में | तुम पर, में |

### अन्यपुरुष सर्वनाम।

तृतीय वा अन्यपुरुष सर्वनाम दो प्रकार का होता है। एक निश्चयवाचक और दूसरा अनिश्चयवाचक।

निश्चयवाचक सर्वनाम वह है जिसके द्वारा कोई निश्चित पदार्थ बताया जाय। जैसे—यह, वह। जब ये केवल रहते हैं तो निर्देशार्थक सर्वनाम होते हैं। जैसे—यह लावो, वह दो, यह करो, इत्यादि।

---

* कर्म और सम्प्रदान में 'तुमे' के स्थान पर 'तुम्हें' ही अधिकांश बोला जाता है।

निश्चयवाचक भी दो प्रकार का होता है—निकटवर्ती के लिये 'यह' और दूरवर्ती के लिये 'वह'। जब इन दोनों के साथ कोई संज्ञा लगा दी जाती है तो ये दर्शक विशेषण से होजाते हैं। जैसे, यह आदमी, वह पुस्तक इत्यादि। जब संज्ञा के साथ कारक के चिन्ह का योग हो जाता है तो अन्यपुरुष से उसी संज्ञा का निश्चय विशेष-रूप से होता है। जैसे, उस घोड़े पर चढ़ो। इसमें 'उस' शब्द से 'घोड़े' का ही निश्चित बोध होता है न कि अन्यपुरुष सम्बन्धी वस्तु का। ऐसा ही सर्वत्र समझो।

निश्चयवाचक 'यह' और 'वह' की कारक-रचना।

सविभक्तिक कर्ता कारक से लेकर अधिकरण कारक तक सब विभक्तियों के एकवचन में 'यह' का 'इस' और 'वह' का 'उस' तथा बहुवचन में 'यह' का 'इन' वा इन्ह और 'वह' का 'उन' वा 'उन्ह' आदेश कर देते हैं। निर्विभक्तिक कर्ता कारक के एकवचन में ये ज्यों का त्यों रहते हैं और बहुवचन में 'यह' का 'ये' और 'वह' का 'वे' होजाता है।

'इन्ह' वा 'उन्ह' इन दोनों रूपों का सब विभक्तियों में अब प्रायः व्यवहार नहीं होता। सम्प्रदान और कर्म कारक के इन रूपों में 'को' के स्थान पर एकवचन और बहुवचन में यथाक्रम 'ए' और 'एं' होता है तथा ये ही रूप व्यवहार में आते हैं।

'ही' लगाकर जब निश्चय प्रकाश करना होता है तब इन दो सर्वनामों के साथ 'ही' न लगाकर प्रायः दीर्घ ईकार ही लगाते हैं। इसके लिये भी बहुवचन में सर्वत्र उपर्युक्त दोनों रूपों का प्रयोजन होता है। जैसे, इस ही को चाहते हैं—इसी को चाहते हैं, उन ही को बुलावो—उन्हीं को बुलाओ। इन ही को जाने दो, इन्हीं को जाने दो, इत्यादि। इनमें अन्तिम वाक्य ही प्रायः बोले जाते हैं।

अन्य पुरुष निश्चयवाचक 'यह' सर्वनाम के रूप।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
| --- | --- | --- |
| कर्ता | यह, इसने | ये, इनने |
| कर्म | इसको, इसे | इनको, इन्हें |
| करण | इससे | इनसे |
| सम्प्रदान | इसके लिये, इसे | इनके लिये, इन्हें |
| अपादान | इससे | इनसे |
| सबन्ध | इसका, के, की | इनका, के, की |
| अधिकरण | इसमें, पर | इनमें, पर |

अन्य पुरुष निश्चयवाचक 'वह' सर्वनाम के रूप।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
| --- | --- | --- |
| कर्ता | वह, उसने | वे, उनमें |
| कर्म | उसको, उसे | उनको, उन्हें |
| करण | उससे | उनसे |
| सम्प्रदान | उसके लिये, उसे | उनके लिये, उन्हें |
| अपादान | उससे | उनसे |
| सम्बन्ध | उसका, के, की | उनका, के, की |
| अधिकरण | उसमें, पर | उनमें, पर |

बहुत से लोग 'वे' और 'ये' के स्थान पर भी 'यह' 'वह' एकवचन ही का रूप व्यवहार में लाते हैं। जैसे—यह दोनों भाई, यह सब लोग इत्यादि।

संज्ञा ही के समान इन सर्वनामों में भी आदर के लिये एकवचन में भी बहुवचन तथा बहुत्व के निश्चयार्थ लोग, सब, इत्यादि लगा देते हैं। जैसे—तुम क्या कहते हो? हम लोग नहीं जानते। वे सब नहीं आये, इत्यादि।

कभी २ पुरुषवाची सर्वनामों के साथ अपने तईं, आप ही

आप, निज, स्वतः, स्वयं, अपने आप, इत्यादि शब्द जोड़े जाते हैं। ये 'स्ववाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। इनसे वाक्यार्थ जोरदार हो जाता है। जैसे—तुम 'स्वतः' इसे करो। वे 'स्वयं' यह कर लेंगे। लड़के यह सब 'अपने आप' बना लेंगे। मैं 'आप ही आप' इसे करूँगा। यह मेरी 'निज' की पुस्तक है। तुम 'अपने तईं' उसे सम्हालो, इत्यादि।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कोई' शब्द।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जिसके द्वारा कोई निश्चित पदार्थ न जाना जाय। जैसे, 'कोई' शब्द।

'कोई' शब्द के बहुवचन में रूप नहीं होते। परन्तु दो बार कहने से बहुवचन समझा जाता है। जैसे - कोई कोई कहते हैं, इत्यादि।

निर्विभक्तिक कर्ता कारक में 'कोई' शब्द ज्यों का त्यों रहता है पर शेष कारकों में 'कोई' शब्द का 'किसी' आदेश हो जाता है। ऐसे ही बहुवचन में भी 'कोई २' का 'किसी २' हो जाता है।

अनिश्चयवाचक 'कोई' शब्द के रूप।

| कारक | एकवचन |
|---|---|
| कर्ता | कोई, किसी ने |
| कर्म | किसी को |
| करण | किसी से |
| सम्प्रदान | किसी के लिये |
| अपादान | किसी से |
| सम्बन्ध | किसी का, के, की |
| अधिकरण | किसी में, पर |

'कोई' शब्द के समान एक दो और भी शब्द हैं जिनकी

कारक-रचना अव्यय के समान होने के कारण नहीं होती। जैसे, कुछ, कई, बहुतेरे आदि। इनका प्रयोग संख्या की अनिश्चयता में होता है। और ये अनिश्चयवाचक विशेषण के समान आते हैं। जैसे, कई लोग, कुछ रुपये, बहुतेरे आदमी।

जब वाक्य में इन अनिश्चयवाचक विशेषणों के विशेष्य नहीं रहते तब इनका प्रयोग सर्वनाम के समान होता है। जैसे, उस भीड़ में बहुत से आदमी थे; जिनमें 'कुछ' भले और 'कुछ' बुरे भी थे। सब लोग एक समान नहीं होते; 'बहुतेरे' विद्वान् होते हैं और 'बहुतेरे' मूर्ख। एक साथ ही बहुत लोग गंगा में कूदे; उनमें 'कई' डूब गये और 'कई' अधमुए हो निकले।

कभी २ ऐसे शब्दों के साथ मुहावरे के रूप में विभक्ति भी आ जाती है। जैसे—पहले का जमाना दूसरा था; अब 'कुछ का कुछ' हो गया।

पुरुषबोधक, आदर-सूचक सर्वनाम 'आप' शब्द।

विशेषतः आदर के लिये मध्यम पुरुष में तू और तुम के स्थान पर 'आप' सर्वनाम आता है। इसीसे इसकी क्रिया सर्वदा बहुवचनान्त होती है। जैसे—आप कहते हैं, आप आइये, इत्यादि।

आप शब्द के साथ बहुवचन के चिह्न नहीं जोड़े जाते। जहाँ बहुत्व प्रकट करना होता है वहाँ बहुत्ववाचक शब्द जोड़ देते हैं। जैसे—आप लोगों ने किया। यह सब काम आप लोगों का है। आप लोग जानें, इत्यादि।

आदरसूचक 'आप' सर्वनाम मध्यम पुरुष के अतिरिक्त अन्य पुरुष के निमित्त भी कभी २ आता है। अन्य पुरुष के विद्यमान रहने पर उसकी ओर संकेत करने से उसका बोध होता है। जैसे—रमेश दिनेश की ओर संकेत करके गणेश से

कहता है कि 'आप' बड़े विद्वान् हैं। ऐसे वाक्यों से समझा जाता है कि, मध्यम पुरुष की नहीं, अन्य पुरुष की चर्चा हो रही है।

आप शब्द की कारकरचना अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द की भाँति होती है। जैसे—

आदरसूचक आप शब्द के रूप।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | आप, आपने | आप लोग, आप लोगों ने |
| कर्म | आप को | आप लोगों को |
| करण | आप से | आप लोगों से |
| सम्प्रदान | आप के लिये | आप लोगों के लिये, |
| अपादान | आप से | आप लोगों से |
| सम्बन्ध | आप का, के, की | आप लोगों का, के, की |
| अधिकरण | आप में, पर | आप लोगों में, पर |

'आप' शब्द निजवाचक भी होकर संज्ञाओं के साथ आता है। जैसे, मैं 'आप' कहूँगा। तुम 'आप' कहो। लड़के 'आप' कहेंगे। यह भी पूर्वोक्त प्रकार का स्ववाचक सर्वनाम ही है।

ऐसे आप शब्द से निज का सम्बन्ध समझा जाता है और इसकी कारकरचना यों होती है। कर्ता कारक में आप ज्यों का त्यों रहता है पर अन्य कारकों में 'अपना' होकर आकारान्त शब्द के ऐसा हो जाता है और इसके रूप उसीके से होते हैं। केवल सम्बन्ध-वाचक का के, की का सम्बन्ध कारक में लोप हो जाता है और सम्प्रदान कारक में 'के लिये' के स्थान पर केवल 'लिये' आता है। यह शब्द नित्य एक वचनान्त है। जैसे—

### निजवाचक आप शब्द के रूप।

| कारक | एकवचन |
|---|---|
| कर्ता | आप |
| कर्म | अपने को |
| करण | अपने से |
| सम्प्रदान | अपने को, लिये |
| अपादान | अपने से |
| सम्बन्ध | अपना, ने, नी |
| अधिकरण | अपने में, पर |

पुरुषवाची सर्वनामों में 'अपना' विशेषण होकर भी आता है। जैसे, मैं 'अपना' पाठ पढ़ता हूँ। तुम 'अपने' धन्धे करो। वे 'अपनी' घड़ी जानते हैं, इत्यादि।

परस्पर-बोधक 'आपस' आप ही शब्द का अनियमित रूप है। इसके रूप केवल सम्बन्ध और अधिकरण कारक ही में होते हैं। जैसे—'आपस' का झगड़ा 'आपस' में ही निपटा लेना चाहिये!

### अभ्यास।

सर्वनाम किसे कहते हैं? सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं? सर्वनाम से व्याकरण में क्या लाभ है? सर्वनामों के लिङ्ग जानने की क्या रीति है? सर्वनामों में लिङ्ग-विकार होते हैं या नहीं? पुरुषवाची सर्वनाम कितने प्रकार के हैं और उनके लक्षण क्या हैं? तृतीय वा अन्यपुरुष सर्वनाम के कितने भेद हैं? तीनों पुरुषवाची सर्वनामों की कारक-रचना कैसे २ होती है? स्ववाचक सर्वनाम कौन २ हैं? इनकी आवश्यकता क्या है? 'यह' 'वह' सर्वनामों की विशेषता क्या है? 'कोई' शब्द का बहुवचन कैसे बनाया जाता है? इन तीनों की कारकरचना कैसे होगी? 'कई' और 'कुछ' वाक्य में कैसे सर्वनाम के समान व्यवहृत होंगे? आदरसूचक सर्वनाम कौन है?

उसकी कारकरचना कैसे होती है ? अन्यपुरुष में 'आप' कैसे व्यवहृत होता है ? निजवाचक आप शब्द की कारकरचना किस रीति से होती है ?

नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनामों के पुरुष, वचन, कारक और लिङ्ग बतावो और यह भी कहो कि ये किस २ संज्ञाओं के स्थान पर आये हैं:—

मेरे भाई की गाय बुड्ढी हो गई है। इससे वह खुली चरती फिरती है। मोहन और सोहन दोनों भाई हैं, इससे उनमें बड़ी घनी प्रीति रहती है। यह वह गाय है कि कोई इसे दुह ले पर जरा भी नहीं छटपटाती। लड़कों को बुलावो और उन्हें कह दो कि ये पुस्तकें ले जायँ और इन्हें पढ़ें। वह स्त्री बड़ी समझदार थी। उसने हम लोगों से कहा कि क्यों नहीं तुम लोग मेरा साथ देते जब कि तुम्हारी ही भलाई इसमें विशेष दीख पड़ती है। मैं उससे कई बार कह चुका पर वह मेरी बातों पर कान नहीं देती। जब उसके भाग बिगड़े हैं तब मैं, तू, या और ही कोई कैसे उसे सुधार सकता है। वह आप सब भोगेगा। राम और श्याम अपने पाठ नही सुनाते। वे कल अवश्य उन्हें सुनावेंगे। मैं आप लोगों को क्या समझाऊँ। आप लोग स्वयं समझदार हैं। मैं अपनी बीती बात कहता हूँ।

नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम रक्खो।

मोहन—बात नहीं मानता—क्या करूँ।—घोड़ा बड़ा तेज है—पकड़ना खेल नहीं है।—काम करते हैं तो क्यों नहीं—लाभ होगा। स्त्रियाँ—घर का सब काम काज—करती हैं—बोझ नहीं मालूम होता। नौकर ने जब—काम न किया तब—मालिक ने अन्यत्र—भेज दिया। राम की पुस्तक न लो वह—है—नहीं। गोविन्द और—स्त्री रमा बड़ी नेक हैं—सताना ठीक नहीं है।—पास नौकर नहीं है वे—काम आप करते हैं।

## प्रश्नवाचक सर्वनाम कौन शब्द ।

**प्रश्नवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं जिससे प्रश्न का बोध होता है। जैसे, कौन, क्या।**

**बिना संज्ञा के 'कौन' प्रश्नवाचक शब्द से प्राणिवाचक का**

और 'क्यों' शब्द से अप्राणिवाचक का प्रायः बोध होता है। जैसे—कौन कहता है ? कौन है ? क्या गिरा ? क्या है ?

यदि इन दोनों प्रश्नवाचकों के साथ संज्ञा का संयोग हो तो यह भेद प्रायः मिट सा जाता है। जैसे—क्या मैं चोर हूँ ? कौन उपाय करोगे ? इत्यादि।

निर्विभक्तिक कर्ता कारक में प्रश्नवाचक कौन शब्द ज्यों का त्यों रहता है और अन्यत्र सब कारकों के एकवचन में कौन का 'किस' और बहुवचन में 'किन' आदेश हो जाता है।

कर्म और सम्प्रदान कारक के एकवचन में 'को' के स्थान पर 'ए' और बहुवचन में विकल्प से 'किन्ह' आदेश करके 'को' को सानुस्वार 'एं' करते हैं।

| कारक | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | कौन, किसने | कौन, किनने |
| कर्म | किसको, किसे | किनको, किन्हें |
| करण | किससे | किनसे |
| सम्प्रदान | किसके लिये, किसे | किनके लिये, किन्हें |
| अपादान | किससे | किनसे |
| सम्बन्ध | किसका, के की. | किनका, के, की |
| अधिकरण | किसमें, पर | किनमें, पर |

प्रश्नवाचक 'क्या' शब्द की कारक-रचना नहीं होती, इससे यह अव्यय कहा जाता है। एक व्याकरण में करण कारक से इसकी कारक-रचना 'काहे से' 'काहे के लिये' इस भाँति की गयी है, पर ये रूप अब बोलचाल में नहीं आते। सब जगह 'किससे' 'किसके लिये' यही बोलते हैं।

'कुछ' और 'क्यों' भी जहाँ कहीं प्रश्नवाचक में आता है।

जैसे—'कुछ' जानते हो? 'क्यों तुमने ऐसा किया'? 'कुछ कहना चाहते हो'? इत्यादि।

## सम्बन्धवाचक सर्वनाम।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम वह कहाता है जो कही हुई संज्ञा से सम्बन्ध सूचित करता है। जैसे—'जो' तुम्हारा है 'सो' हमारा है।

जो और सो का नित्य सम्बन्ध है। अर्थात् जहाँ २ जो आता है वहाँ २ सो अवश्य लिखा वा समझा जाता है। इसी से ये सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

कभी २ 'जो' के सम्बन्ध में 'सो' के बदले 'वह' का भी प्रयोग होता है। आज-कल की बोल-चाल में 'सो' शब्द का केवल कर्ता ही में व्यवहार देखा जाता है, नहीं तो अन्य सब कारकों में वह शब्द केही रूप व्यवहृत होते हैं। जैसे–जिसका धन है, उसीको दो। जो जैसा करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा। जिसकी लाठी उसकी भैंस।

'जो' शब्द कभी २ 'यदि' के स्थान पर भी आ जाता है। जैसे–"मँगनो भलो न बाप सो 'जो' प्रभु राखे टेक।"

'जो' 'सो' शब्दों के समान 'जौन' 'तौन' सर्वनाम भी सम्बन्ध-वाचक हैं। जैसे–'जौन' आदमी जाय 'तौन' वह चीज लिये आवे। इनके भिन्न रूप केवल कर्ता ही में होते हैं अन्यत्र जो 'सो' शब्द के समान।

निर्विभक्तिक कर्ता कारक में 'जो' 'सो' ज्यों के त्यों रहते हैं और अन्य कारकों में 'जो' 'सो' का एकवचन में 'जिस' 'तिस' और बहुवचन में 'जिन' 'तिन' आदेश हो जाते हैं और कर्म तथा सम्प्रदान कारक के एकवचन में 'को' के स्थान पर

'ए' और वहुवचन में विकल्प से 'जिन्ह' तिन्ह' आदेश करके 'के' के स्थान पर सानुनासिक 'एँ' कर देते हैं।

सम्बन्धवाचक 'जो' शब्द के रूप।

| कारक | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | जो, जिसने | जो, जिनने |
| कर्म | जिसको, जिसे | जिनको, जिन्हें |
| करण | जिससे | जिनसे |
| सम्प्रदान | जिसके लिये, जिसे | जिनके लिये, जिन्हें |
| अपादान | जिससे | जिनसे |
| सम्बन्ध | जिसका, के, की | जिनका, के, की |
| अधिकरण | जिसमें, पर | जिनमें, पर |

सम्बन्धवाचक 'सो' शब्द के रूप।

| कारक | एकवचन | वहुवचन |
|---|---|---|
| कर्ता | सो, तिसने | सो, तिनने |
| कर्म | तिसको, तिसे, | तिनको, तिन्हें इत्यादि |

शेष रूप जो शब्द के समान ही होते हैं।

ऊपर कहे हुए सर्वनामों की कारकरचना का एक यह साधारण नियम हो सकता है कि 'निर्विभक्तिक कर्ता कारक को छोड़ शेष कारकों के एकवचन में मैं को मुझ, तू को तुझ, यह का इस, वह का उस, कोई का किसी, कौन का किस, जो वा जौन का जिस, सो वा तौन का तिस और बहुवचन में क्रमशः उक्त सर्व नामों के हम, तुम, इन, उन, ( कोई का बहु-वचन नहीं होता ) किन, जिन, तिन आदेश हो जाते हैं।

पुरुष-वाचक, निश्चय-वाचक, अनिश्चय-वाचक, प्रश्नवाचक, सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम जब संज्ञाओं के पूर्व में प्रयुक्त होते हैं तो वे गुणवाचक शब्द कहलाने लगते हैं और इनका परिवर्तन

भी पूर्वोक्त प्रकार ही से होता है। जैसे-मुझ गरीब का तुझ कंगाल से उस विषय में इस समय पर किसी बात की चर्चा करना अच्छा नहीं है। किसी सामान्य आदमी का, जिस सुमार्ग पर महान् पुरुषों का पहुँचना कभी सम्भव नहीं उस (तिस) मार्ग पर एकबएक पहुँचना क्या सम्भव हो सकता है ? इत्यादि।

उपर्युक्त सर्वनामों के अतिरिक्त और भी कितने ही शब्द हैं जो इन्हीं सर्वनामों के तुल्य व्यवहृत होते हैं। जैसे-एक, दो, दोनों, और, सब, कै, अन्य, आदि। वाक्यों में ये इस प्रकार व्यवहृत होते हैं। जैसे-बहुत से आदमी बाहर गये थे जिनमें 'एक' मर गया, 'दो' लौटे; 'कै' लापता हो गये; 'और' सब वहीं रह गये। इनमें घेरे हुए सब सर्वनाम के से हैं क्योंकि ये आदमी के स्थान पर आये हैं।

इस, उस, जिस, तिस, सर्वनामों के 'स' को तना आदेश करनेसे ये परिमाणवाचक शब्द, अर्थात् इतना, उतना कितना, जितना, तितना बनाये जाते हैं और उन्हीं सर्वनामों के साथ समानतासूचक सा ( से, सी ) के लगाने से ये प्रकारवाचक शब्द भी अर्थात् ऐसा, वैसा, कैसा, जैसा, तैसा हुए हैं। इस + सा = ऐसा, उस + सा = वैसा, किस + सा = कैसा, जिस + सा = जैसा, तिस + सा = तैसा। यह पाँचों गुणवाचक की रीति पर आते हैं और उनके विकार होने का नियम लिङ्ग वचन के कारण वही है जो आकारान्त गुणवाचक के विषय में बताया गया है।" ( भाषाभास्कर )।

" 'यह' 'वह' 'जो' 'सो' और कौन' के प्रथम अक्षर को 'य' 'व' 'ज' 'त' और 'क' करके अन्त में हाँ लगा दें तो स्थान-वाचक शब्द बनते हैं। जैसे—यहां वहां, जहां, तहां और कहां।"

"इसी प्रकार इसके अन्त्य अक्षर 'व' से पलट दिये जायँ तो समयवाचक हो जाते हैं परन्तु वह शब्द छूट जाता है और इस शब्द से प्रथम अक्षर को 'अ' से पलट देते हैं। जैसे- 'अब' 'जब' 'तब' और 'कब'।" ( भाषा प्रभाकर )।

यद्यपि ये शब्द इस प्रकार साधे गये हैं तथापि इनकी साधनप्रक्रिया ठीक नहीं है। इनकी बनावट से ही यह बात प्रत्यक्ष होती है। इनके साधन में इन्हीं दोनों व्याकरणों में मतभेद है।

## कुछ विशेष सर्वनाम।

जो कोई, जो सो, जो वह, जिस तिस, कई एक, एक यह तो दूसरा वह, जिस किसी, जिस तिस का, हर एक, कोई और, कोई कुछ तो कोई कुछ, कोई २, एक दूसरा, एक आध, किसी किसी, कोई न कोई, सब कोई, और कौन, एक न एक, जौन तौन, कौन कौन इत्यादि।

## अभ्यास।

प्रश्नवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? कौन और क्या से किसका बोध होता है? कौन शब्द की कारकरचना कैसे होती है? प्रश्नवाचक सर्वनाम और कौन हैं? सम्बन्ध वाचक सर्वनाम किसे कहते हैं? वे कौन कौन हैं? जो और सो की कारकरचना कैसे होती है? सो के स्थान पर और कौन सर्वनाम आता है? सर्वनामों की कारकरचना का एक साधारण नियम क्या है? उनका वाक्यों में कैसे प्रयोग होगा? इन सर्वनामों से परिमाणवाचक और प्रकारवाचक शब्द कैसे बनते हैं? इनसे कहाँ, जहाँ, अब, तब कैसे बनते हैं?

नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनामों को और उनकी संज्ञाओं को बताओ।

मैं उस आदमी से आज भी मिला था जिसे कल देखा था। मैंने जो तुमसे कहा था उसपर ध्यान दो। क्या इसी के लिये रोते थे, जो एक अदनी चीज है? जिसे

तुम प्यार करते थे तौन आज बीमार है। "जाकी जैसी चाकरी वैसा ही फल पाय" "जो जागै सो पावे। जो सोवे सो खोवे।" जैसा मुझे आज पानी मिला था, वैसा ईश्वर न करे किसी को मिले। एक दो नहीं कई ऐरे गैरे आदमी आये गये। जो कुछ भूल गया था सो मिल गया।

नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों में यथायोग्य सर्वनाम रक्खो।

उसने—काम अपने हाथ में लिया था—नहीं किया। वहाँ कोई नहीं था—मेरा काम जान सके। यह—लकड़ा है—इनाम पाया था—यह कलम है? तुमने—वह पुस्तक दी—मैं लाया था? वह—आदमी है? मैं—कैसे विश्वास करूँ—मित्र नहीं है। वहाँ ऐसा—नहीं था—मैं कुछ देता। जाने दो—विषय को—मेरे—काम का नहीं हैं। ईश्वर जाने—ले गया।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो:—

मेरे पर ऐसी दुख की घड़ी आई है कि कोई क्या कर सकती है? मैं दोनों को पुस्तकें दो। मुझे और तुम चलोगे। उसने मैं और वह को अपराधी नहीं समझा। क्या तुम तुम्हारे तई सब कार्य करोगे? जो को सो को बिना जाने विश्वास नहीं कर लेना चाहिये। तू लोग काहे को सोचते हो। तुम का को कहा समझाते हो? जौन तौन आदमी से क्या बतियाने लगते हो? मुझे को और तुम्हे को क्या करना है?

## सर्वनाम का शाब्दबोध।

**सर्वनाम के पदपरिचय में (क) प्रकार (ख) पुरुष (ग) वचन (घ) लिङ्ग (ङ) कारक (च) और वाक्य में जिस शब्द के साथ उसका सम्बन्ध हो वा जिसके स्थान पर आया हो वह शब्द। जैसे—आपने जिस पुस्तक को देखा था उसे मैंने भी पसन्द किया है।**

**आपने—आदर-सूचक, पुरुषवाची सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग।वा स्त्रीलिङ्ग एकवचन, (बहुवचनबोधक) कर्ता कारक, इसकी क्रिया 'देखा था' है।**

**जिस—सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन,**

विशेषण-रूप से कर्म-कारक, इसका सम्बन्धी शब्द पुस्तक, और 'देखा था' क्रिया का कर्म।

उसे—सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम, एक-वचन, स्त्रीलिङ्ग, पुस्तक के स्थान पर आया है और 'देखा था' इस क्रिया का कर्म है।

मैंने—पुरुषवाची सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग, कर्ताकारक और 'पसन्द क्रिया था' क्रिया का कर्ता है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों के सर्वनामों का शाब्दबोध करोः—

यह पुस्तक किसकी है? मेरी। आपकी नहीं उसकी है। कौन कहता है कि पुस्तक का मालिक कोई और है मैं नहीं? जो बात हो गयी सो हो गयी। अब उसकी चर्चा से न हमें लाभ है और न तुम्हें। यहीं क्यों? औरों को भी तो इससे लाभ नहीं। क्या कहूँ। हमारे ऊपर न जाने कहाँ से, एक दो की बात कौन चलावे, कई ऐसी ऐसी आपदायें टूट पड़ती हैं कि सब को हम पर तर्स आने लगती है।

## क्रिया (Verb)

ऐसे पद-समुदाय को 'वाक्य' कहते हैं जिससे एक निरपेक्ष पूर्णार्थ प्रकाश हो। जैसे, विद्यार्थी पुस्तक पढ़ता है।

प्रत्येक वाक्य में दो अङ्ग अवश्य रहते हैं—एक 'उद्देश्य' और दूसरा 'विधेय'। 'उद्देश्य' वह है जिसके विषय में कुछ कहा जाय और 'विधेय' वह है जो उद्देश्य के विषय में कहा जाता है।

विद्यार्थी पुस्तक पढ़ता है। इस वाक्य में 'विद्यार्थी' उद्देश्य और 'पढ़ता है' यह विधेय है। विधेय क्रिया ही है।

जिस पद से किसी काम का करना वा होना प्रगट हो उसे 'क्रिया' कहते हैं। जिस शब्द के अन्त में ना रहे और उसके अर्थ से कोई व्यापार समझा जाय तो वही क्रिया का

साधारण रूप है। जैसे, पढ़ना, लिखना इत्यादि। यह 'क्रियार्थक संज्ञा' भी कहलाता है। यदि व्यापार वा काम न बोध हो तो सोना, कोना, चूना, धूना आदि के समान नान्त होनेपर भी ऐसे शब्द संज्ञा ही होंगे और उनके आगे कारक के चिन्ह आवेंगे।

व्यापारबोधक वा क्रियार्थक संज्ञा का 'ना' लोप कर के जो बचता है वही क्रिया का मूल है। क्योंकि यह क्रिया के सब रूपों में पाया जाता है। इसे ही 'धातु' कहते हैं। जैसे, पढ़ना का 'पढ़' और लिखना का 'लिख' ये दोनों धातु हैं। ऐसे ही सर्वत्र समझना चाहिये।

धातु में विविध प्रत्यय लगने से जो विविध रूप बनते हैं वे क्रियापद कहलाते हैं।

## क्रिया के सामान्य भेद।

क्रिया दो प्रकार की होती है एक सकर्मक और दूसरी अकर्मक।

'सकर्मक' क्रिया वह है जो कर्म के साथ रहे अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता को छोड़ कर्म में रहे। जैसे, श्याम ने राम को मारा। इसमें 'मारा' क्रिया का व्यापार श्याम में रहता है और मारने के व्यापार का फल श्याम को छोड़ राम में रहता है अर्थात् मारने का कार्य राम पर किया जाता है। इससे यह सकर्मक क्रिया हुई।

'कर्म' वह है जिसमें क्रिया के व्यापार का फल रहता है। जैसे, ऊपर के वाक्य में 'राम' शब्द है।

यदि क्रिया सकर्मक हो पर उसके कर्म की विवक्षा न रहे अर्थात् क्रिया का केवल कार्य मात्र ही प्रकट किया जाय, तो

वह 'अकर्मक' सी हो जाती है। जैसे, मैं सुनता हूँ, वह बोलता है, तू कहता है, इत्यादि।

कुछ सकर्मक क्रियाओं के दो कर्म होते हैं। जैसे-राम ने रावण को 'वाण' मारा। वह मुझे 'आगरा' ले गया, इत्यादि। पर इन दोनों वाक्यों की द्विकर्मक क्रियायें उसने मुझे 'पुस्तक' दी, इत्यादि वाक्यों की द्विकर्मक क्रियाओं से भिन्न सी ज्ञात होती हैं।

कुछ सकर्मक क्रियायें ऐसी भी होती हैं जिनका कर्म रहने पर भी विना पूरक के अर्थ पूरा नहीं होता। जैसे-उसने उसे बना दिया। मैंने उसे कर दिया। इन दोनों वाक्यों में यद्यपि कर्ता, कर्म, क्रिया सब कुछ है, पर वाक्य छूछे से मालूम पड़ते हैं और, क्या बना दिया? क्या कर दिया? ऐसे प्रश्नों को स्थान मिल जाता है। यदि इन दोनों वाक्यों में क्रमशः 'राजा' तथा 'स्वतन्त्र' शब्द जोड़ देते हैं तो दोनों वाक्य पूरे हो जाते हैं। ये कर्म-पूरक शब्द कहलाते हैं।

'अकर्मक' क्रिया वह है जो बिना कर्म के हो अर्थात् जिस क्रिया के व्यापार और फल दोनों ही एक साथ कर्ता में रहे। जैसे-आलसी सोता है। इसमें 'सोने' का व्यापार आलसी ही करता है और सो भी वही जाता है अर्थात् सोने का काम और सोना दोनों उसीमें रहते हैं। इससे यह अकर्मक क्रिया हुई।

कुछ अकर्मक क्रियायें भी ऐसी होती हैं जो बिना पूरक के अपने अर्थ को पूरा नहीं करतीं। जैसे-वह हो गया। तुम मालूम पड़ते हो। इन दोनों वाक्यों में यदि क्रमशः 'पण्डित' तथा 'उदास' ये शब्द न जोड़े जाँय तो इनके अर्थ पूरे न होंगे।

ये कर्तृ-पूरक शब्द कहे जाते हैं। प्रायः पूरक विशेषण के से हो कर आते हैं।

धात्वर्थ को कर्म बनाने से अकर्मक भी सकर्मक हो जाते हैं। जैसे-वह 'एक नींद' सोता है। तू 'अच्छी बैठक' बैठता है। मोहन 'खूब लड़ाई' लड़ता है।

कुछ क्रियायें अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं। जैसे-जी घबड़ाता है (अकर्मक)। विपद् मुझे घबड़ाती है (सकर्मक)। ऐसे ही खुजलाना, गड़बड़ाना आदि समझना चाहिये।

अभ्यास।

वाक्य किसे कहते हैं? उद्देश्य विधेय क्या हैं? इनके लक्षण क्या हैं? क्रिया के लक्षण क्या हैं? क्रियार्थक संज्ञायें कैसी होती हैं? क्रियायें कितने प्रकार की होती हैं? अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं और सकर्मक किसे? सकर्मक क्रिया कब अकर्मक और अकर्मक क्रिया कब सकर्मक होती है? कर्तृपूरक और कर्म-पूरक क्या हैं? इनके उदाहरण बतावो। ऐसे दो वाक्य बनावो जिनमें दो कर्म हों। चार ऐसी क्रियाओं के उदाहरण दो जो अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं। दस सकर्मक और दस अकर्मक क्रिया के वाक्य बनावो।

## क्रिया के वाच्य (Voice) कृत भेद।

क्रिया के वाच्यकृत तीन भेद होते हैं—एक कर्तृवाच्य, दूसरा कर्मवाच्य और तीसरा भाववाच्य।

कर्तृवाच्य क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार के धातुओं में होती है। कर्मवाच्य क्रिया केवल सकर्मक धातु की और भाववाच्य क्रिया केवल अकर्मक धातु की ही होती है।

जो क्रिया कर्ता के लिङ्ग वचन के अनुसार होती है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जैसे, आदमी भात खाता है। स्त्रियाँ काम करती हैं।

जो क्रिया कर्म के लिङ्ग-वचन के अनुसार होती है उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे मोहन ने रोटी खाई। स्त्रियों ने कपड़े पहने। मुझसे जलेबियाँ खायी गयीं।

कर्तृवाच्य में कर्ता का और कर्मवाच्य में कर्म का होना आवश्यक है। क्योंकि इन्हीं के अनुसार क्रियायें होती हैं और वे उक्त या प्रधान समझे जाते हैं।

भाववाच्य क्रिया वह है जो न कर्ता के लिङ्ग-वचन के अनुसार हो और न कर्म के लिङ्ग-वचन के अनुसार, बल्कि सदा एकवचन, पुल्लिंग और अन्यपुरुष हो। जैसे, मुझसे बैठा नहीं जाता। लड़कों को उठा दिया जाय। आया जाय। विद्यार्थी ने सारी पुस्तक को पढ़ डाला। पण्डित केशवराम भट्ट जी ने भी अपने व्याकरण में इनके ऐसे ही लक्षण लिखे हैं *।

पण्डित रामावतार शर्म्मा साहित्यचार्य्य एम० ए० का वाच्य-सम्बन्धी विचार यह है:—

"क्रिया में वाच्यकृत तीन भेद होते हैं। कर्तृवाच्य कर्मवाच्य और भाववाच्य। कर्तृवाच्य क्रिया के वचन आदि कर्ता के अनुसार होते हैं, कर्मवाच्य क्रिया के वचन आदि कर्म के अनुसार होते हैं और भाववाच्य क्रिया सदा एक-वचन पुल्लिङ्ग रहती है। वाच्य का भेद केवल भूतकालिक

* जिस क्रिया का लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्ता सा हो वह कर्तृवाच्य जिसका कर्म सा वह कर्मवाच्य और जिसका न कर्ता सा न कर्म सा पर सदा पुल्लिङ्ग एकवचन अन्यपुरुष हो वह भाववाच्य कहलाती है।

क्रिया में होता है कर्तृवाच्य के कर्ता में कोई चिन्ह नहीं रहता। कर्मवाच्य के कर्म में कोई चिन्ह नहीं रहता और भाववाच्य के कर्ता में ने † चिन्ह और कर्म में 'को' चिन्ह रहता है। जैसे कर्तृवाच्य—राम गया। कर्मवाच्य—मैंने रोटी खाई। भाववाच्य—सीता ने सखियों को बुलाया।

(शर्म्मा जी का हिन्दी-व्याकरणसार)

यहाँ यह कह देना आवश्यक है कि शर्म्मा जी और भट्टजी जिस 'ने' को अन्यान्य वैयाकरणों ने प्रथमा विभक्ति का चिन्ह माना है उसे भी 'से' के समान ही तीसरी विभक्ति में मानते हैं।

प्राचीन हिन्दी के वैयाकरणों ने कर्मानुसारिणी क्रिया होने से कर्मप्रधान वाक्य का होना लक्षण तो माना है पर उदाहरण में 'मुझसे राम बुलाया जाता है' ऐसे ही वाक्य लिखे हैं और 'राम ने मुझे पुस्तक दी' ऐसे वाक्य नहीं। बल्कि ऐसे वाक्यों को उन्होंने कर्तृवाच्य में रक्खा है। यह बात समझ में नहीं आती। ऐसा हो सकता है कि उन्होंने ऐसे वक्यों में कर्ता ही की प्रधानता देखी हो। क्योंकि, इसमें कर्म पर वैसा प्रभाव नहीं पड़ता जैसा कि कर्ता पर। यह भी हो सकता है कि ऐसे वाक्यों को कर्मवाच्य मान लेने से वाच्य-परिवर्तन की

† कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्ता में सदा 'ने' चिन्ह आता है। इसका अपवाद खा जा इत्यादि 'जा' धातु से समस्त धातुओं के प्रयोगों में पाया जाता है। ऐसे धातुओं के प्रयोगों में कर्ता में 'ने' अव्यय के बदले 'से' अव्यय लगता है। जैसे-मैं खा गया। इसका कर्मवाच्य 'मुझसे खाया गया है' न कि 'मुझ ने खाया गया है।' खाया गया 'खा जा' इस समस्त धातु का कर्मवाच्य है न कि शुद्ध 'खा' का जैसा कि सामान्यतः लोग समझते हैं।

अड़चन आ पड़ती हो। क्योंकि 'राम ने कपड़ा पहना' इस वाक्य को यदि कर्तृवाच्य मान लेते हैं तो उससे कर्ता में 'से' लगा कर और 'जाना' इस क्रिया का रूप जोड़कर 'मुझसे पकड़ा पहना गया' यह कर्म-वाच्य बना लेते हैं पर यदि उसे कर्मवाच्य मान लेते हैं तो उससे कर्तृवाच्य बना नहीं सकते। पर यह बात विचारणीय है। उनके वाक्य-सम्बन्धी लक्षणों वा उदाहरणों में परिवर्तन होना उचित है। जब सभी लोग कर्मानुसारिणी क्रिया का कर्मवाच्य होना लक्षण निश्चित करते हैं तो 'राम ने पुस्तक पढ़ी' ऐसे वाक्यों का कर्मवाच्य होना आवश्यक है।

अभ्यास।

क्रिया के वाच्यकृत कितने भेद होते हैं? कर्तृप्रधान क्रिया किसे कहते हैं? कर्म-प्रधान क्रिया कैसी होती है? अकर्मक क्रिया कर्मप्रधान क्यों नहीं होती? भावप्रधान क्रिया का क्या लक्षण है? कर्तृ-कर्मवाच्य में कर्ता-कर्म का होना क्यों आवश्यक है? शर्मा जी और भट्ट जी के वाच्य-सम्बन्धी और 'ने' सम्बन्धी कैसे विचार हैं?

## क्रिया के प्रकार(Mood)कृत भेद।

क्रिया के प्रकारकृत तीन भेद होते हैं। एक साधारण, दूसरा सम्भाव्य और तीसरा आज्ञार्थक।

'साधारण क्रिया' उसे कहते हैं जिसमें साधारणतः काम का होना कहा जाता है। जैसे, मैं करता हूँ, वह खा गया। मोहन जायगा। क्या करते हो? आदि।

'सम्भाव्य क्रिया' वह है जिसमें अनिश्चयता, इच्छा वा संशय पाया जाय। जैसे, यदि मैं वहाँ पहुँच जाऊँ। यदि मैं पण्डित होता।

होता, करता, पढ़ता इत्यादि रूपों का प्रयोग हेतुहेतुमद्भूत काल में किया जाता है। जैसे, अगर वर्षा होती तो सस्ती होती। अगर वह आवे तो मैं जाऊँ, इत्यादि।

'अज्ञार्थक वा विध्यर्थक' से आज्ञा, उपदेश वा प्रार्थना प्रटक होती है। जैसे, तुम घर जावो। कल्ह याद करके आना। अपना जीवन तुच्छ न समझो। परोपकार करो। कृपा कर मेरे पत्र का उत्तर अवश्य दीजिये। मुझे भूल न जाइयेगा। हमारी चीज न लीजिये।

एक प्रकार की क्रिया और होती है जो संज्ञा के रूप में आती है उसे 'क्रियार्थक संज्ञा' कहते हैं। जैसे, 'खेलना' एक व्यायाम है। 'पढ़ना' विद्यार्थियों का सब से बड़ा कर्त्तव्य है। 'चोरी करना पाप है, इत्यादि।

संज्ञा होने के कारण इनकी भी कारक-रचना होती है और इस प्रकार इनका व्यवहार होता है। जैसे, मैं 'पढ़ने को' आया हूँ। न 'करने से' कुछ करना अच्छा है। 'खाने के लिये' जावो। 'पढ़ने का फल' ज्ञान-लाभ है।

एक प्रकार की क्रिया और भी होती है जिससे अपूर्णता प्रकट होती है। इसको पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। जैसे, मैं 'पढ़ कर' बतलाऊँगा। 'खा करके' जावो।

एक प्रकार की क्रिया और होती है जिससे क्रिया और विशेषण दोनों का भाव प्रकट होता है और जिसे क्रिया-द्योतक संज्ञा भी कहते हैं। जैसे, मैं 'दौड़ता दौड़ता' थक गया। लड़की 'रोती रोती' चुप हो गयी। वे 'कहते कहते' चले गये।

ऊपर की ये तीनों क्रियायें सामान्य हैं, इससे इनकी गणना प्रकारकृत भेदों में नहीं है।

## अभ्यास।

क्रिया के प्रकारकृत भेद कितने हैं ? प्रत्येक का लक्षण क्या है ? क्रियार्थक संज्ञा किसे कहते हैं ? पूर्वकालिक क्रिया का क्या लक्षण है ? क्रियाद्योतक संज्ञा किसे कहते हैं ? सम्भाव्य और आज्ञार्थक के पाँच २ उदाहरण दो। क्रियार्थक संज्ञा के पाँच वाक्य बनावो।

## क्रिया के काल(Tense)कृत भेद।

क्रिया के करने में जो समय लगता है उसे काल कहते हैं। काल तीन हैं—भूत, भविष्य और वर्तमान।

जिससे क्रिया का बीते हुए समय में होना प्रकट हो वह भूतकाल है। जैसे मैं पढ़ता था। वह पढ़ रहा था। तू आता तो अच्छा होता। उसने पढ़ा होगा। मैंने पढ़ा है। मैंने पढ़ा।

आगे आने वाले समय में क्रिया का होना जिस काल से प्रकट हो वह भविष्यकाल है। जैसे, मैं पढ़ूँगा।

जिस काल से वर्तमान समय में क्रिया का होना प्रकट हो वह वर्तमान काल है। जैसे, बलदेव पढ़ता है। मोहन पढ़ रहा है।

भूतकाल से यह जाना जाता है कि क्रिया का कार्य समाप्त हो चुका है या किसी समय वह होता था; भविष्य काल से जाना जाता है कि क्रिया का कार्य अभी प्रारम्भ होने वाला है और वर्तमान काल से जाना जाता है कि क्रिया का कार्य हो रहा है।

भूतकाल के छ भेद हैं—सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, सन्दिग्धभूत, अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत।

सामान्यभूतकाल वह है जिससे क्रिया की पूर्णता प्रकट हो पर भूतकाल की विशेषता नहीं। जैसे, मैं आया। मोहन ने पाठ पढ़ा।

आसन्नभूतकाल उसे कहते हैं जिससे क्रिया की पूर्णता और काल की निकटता पायी जाय। जैसे, वह आया है। मैंने काम किया है।

पूर्णभूतकाल वह है जिससे क्रिया की पूर्णता और काल की दूरता पायी जाय। जैसे, तू गया था। मैंने काम किया था।

सन्दिग्धभूतकाल * वह है जिससे भूतकालिक क्रिया में सन्देह पाया जाय। जैसे वह आयी होगी। तुमने पाठ पढ़ा होगा। तूने ऐसा काम किया हो।

अपूर्णभूतकाल उसे कहते हैं जिससे भूतकाल प्रकट होता हो पर कार्य की पूर्णता न प्रकट हो। जैसे, मैं सोता था। वह लेख लिखता था।

† हेतुहेतुमद्भूतकाल उसे कहते हैं जिसके कार्य और कारण का फल भूतकाल में पाया जाय। जैसे, यदि तुम पढ़े होते तो फेल कभी नहीं करते।

---

* ऊपर के चार भूतकालों में सकर्मक धातु के कर्ता में 'ने' चिन्ह आता है और कर्म्म में 'को' न रहने पर क्रिया लिङ्ग-वचन में कर्मानुसार होती है।

† इसकी गणना सम्भाव्य क्रिया के प्रकार में होना ही उचित है। पण्डित रामावतार शर्म्मा ने अपने हिन्दी व्याकरण में पाँच ही भूतकाल माने हैं। वे प्रकार-कृत दो ही—साधारण और सम्भाव्य—भेद मानते हैं। सम्भाव्य ही में वे आज्ञार्थक का अन्तर्भाव करते हैं। वे सम्भाव्य क्रिया के सम्बन्ध में लिखते हैं—

"सम्भाव्य क्रिया दो प्रकार की होती है—शुद्ध और हेतुहेतुमत्। शुद्ध सम्भाव्य में कालकृत भेद नहीं होता है; जैसे, वे जाँय, तुम आओ इत्यादि। हेतुहेतुमत् सम्भाव्य में कालकृत दो भेद होते हैं। भूत—जैसे, वह जाता तो खाना पाता और भविष्य—जैसे, वह जाय तो खाना पावेगा।"

भविष्यकाल के भी दो भेद माने गये हैं—एक सामान्य भविष्य, दूसरा सम्भाव्य भविष्य।

सामान्य भविष्य का लक्षण ऊपर लिखा जा चुका है। †सम्भाव्य भविष्य वह है जिससे भविष्यकाल और एक प्रकार की इच्छा प्रकट होती है। जैसे, कोई उसका पता ले। वे जाँय।

वर्तमान काल के दो भेद हैं—एक सामान्य वर्तमान और दूसरा सन्दिग्ध वर्तमान।

सामान्यवर्तमान का लक्षण लिखा जा चुका है। सन्दिग्ध वर्तमानकाल वह है जिससे वर्तमानकालिक क्रिया का सन्देह प्रकट होता हो। जैसे, वह आता होगा। वे पाठ पढ़ते होंगे। तू काम करता हो।

कोई २ तात्कालिक वर्तमान भी मानते हैं और उसका यह लक्षण करते हैं कि जिससे उसी क्षण में कार्य होना प्रकट हो वह तात्कालिक वर्तमान है। जैसे, वह पढ़ रहा है। पर यह भेद यदि माना जाय तो भूतकाल में भी सम्भव है। जैसे, वह पढ़ रहा था, इत्यादि।

कितने वैयाकरण 'मैं जाता होता' इत्यादि वाक्यों में सम्भावनासहित कार्य की अपूर्णता और 'मैं गया होता' इत्यदि वाक्यों में सम्भावनासहित कार्य की पूर्णता देख क्रमशः सम्भाव्य अपूर्ण भूत और सम्भाव्य पूर्ण भूत नामक भूतकाल के और दो भेद मानते हैं। पर इनका हेतुहेतुमद्भूत में अन्तर्भाव हो सकता है।

---

† इसकी भी गणना सम्भाव्य क्रिया के प्रकार में ही होनी चाहिये।

अभ्यास।

काल किसे कहते हैं? काल के कितने भेद हैं? भूत, भविष्य और वर्तमान के लक्षण क्या हैं? भूतकाल के कितने भेद हैं? प्रत्येक के लक्षण और उदाहरण बतावो। भविष्य के कितने भेद हैं? सम्भाव्य भविष्य का लक्षण क्या है? वर्तमान के भेद कितने हैं? सन्दिग्ध वर्तमान का लक्षण क्या है? तात्कालिक वर्तमान और साधारण वर्तमान में क्या अन्तर है? शुद्ध और हेतुहेतुमत्सम्भाव्य क्रियायें कैसी होती हैं?

नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाओं के प्रकार और काल बतावोः—

तुम क्या करते हो? मैं कल शाम को पढ़ रहा था। वे न जाने कल क्या करते थे। मुझे तंग मत करो, जो कुछ करना होगा, मैं कल कर दूँगा। मुझे कल घर दो पत्र लिखना है। क्या करूँ, मुझसे कुछ करते नहीं बनता। लेना हो सो ले लो नहीं तो पीछे पछतावोगे। मैं इसे आज ही पूरा कर दूँगा। चुराकर पचाना ठट्ठा नहीं है। प्रीति तो कर ली पर उसे निबाहो तो जानें। मैं घूमता फिरता उनके घर चला गया। लेना एक न देना दो। कहकर क्या करोगे, जब कोई सुनता ही नहीं है।

## क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष-कृत भेद।

लिङ्ग, वचन और पुरुष के कारण क्रिया के और भी भेद होते हैं और उनके कारण रूपों में बहुत हेर फेर होते हैं।

लिङ्ग-भेद से क्रिया के दो भेद होते हैं, अर्थात् संज्ञा ही के समान क्रिया में भी दो लिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग, होते हैं। उक्त या प्रधान कर्ता और कर्म के अनुसार क्रिया भी स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग होती है और लिङ्ग के कारण संज्ञा में जो परिवर्तन होते हैं वे इसमें भी होते हैं*। जैसे, लड़का पढ़ता है। लड़की

* कितने वैयाकरणों का सिद्धान्त है कि लिङ्ग-कृत भेद क्रिया में किसी भाषा के व्याकरण में नहीं हैं। इससे 'पढ़ता' 'पढ़ती' 'खाया' 'खायी' इत्यादि विशेषण हैं। ये बहुधा कृदन्त से ही बनते हैं।

पढ़ती है। मक्खन खाया गया। जलेबी खायी गयी। मैंने बहुत सी पुस्तकें पढ़ीं।

क्रिया में पुरुषकृत तीन भेद होते हैं। उत्तम, मध्यम और अन्य वा प्रथम पुरुष। मैं और हम के अनुसार होने वाली क्रियायें उत्तम पुरुष की, तू और तुम के अनुसार होनेवाली क्रियायें मध्यम पुरुष की और इनके अतिरिक्त सब शब्दों के अनुसार होनेवाली क्रियायें अन्यपुरुष की कहलाती हैं। कर्ता जिस पुरुष का होता है क्रिया भी, उसी पुरुष की होती है और उसके कारण क्रिया के रूप परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे, वह पढ़ता है। मैं पढ़ता हूँ। तुम पढ़ते हो। हम पढ़ते हैं। तू खा। लड़कियाँ गाती हैं। स्त्री आती है। वह खावे। मैं खाऊँ।

वचन के भेद से क्रिया दो प्रकार की होती है—एकवचन और बहुवचन। वचन के कारण क्रिया भाग में वे ही हेर फेर होते हैं जो संज्ञा के होते हैं। जैसे, वह आया है। हम आये हैं। तू आया है। तुम आये हो। मैं करता हूँ। हम करते हैं। गायें चरती हैं। स्त्री जाती है।

जब कर्ता में 'ने' चिन्ह नहीं रहता तब क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्ता के समान होते हैं। जैसे, मैं जाता हूँ। तू जाता है लड़कियाँ पढ़ती हैं। वे गये।

जब कर्ता में 'ने' चिन्ह रहे और कर्म में 'को' चिन्ह न हो तो क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्म के समान होते हैं। जैसे, मोहन ने पुस्तकें पढ़ीं। स्त्री ने आम खाया। राम ने ग्रन्थ देखे।

जब कर्ता में 'ने' और कर्म में 'को' चिन्ह रहे तो क्रिया सदा पुल्लिङ्ग, एकवचन अन्यपुरुष की होती है। जैसे, सीता ने सखियों को बुलाया। लड़के ने बिल्ली को पकड़ा। लड़कों ने तोतों को पाला था।

भावप्रधान क्रियाओं में भी क्रिया सदा एकवचन पुल्लिङ्ग अन्यपुरुष की होती है। जैसे, मुझ से बैठा नहीं जाता। उनको बुला दिया जाय।

अभ्यास।

क्रियाओं में लिङ्ग, पुरुष और वचन किसके अनुसार होते है? उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष की क्रियाओं के कर्ता कौन कौन होते हैं? कर्ता के अनुसार कब क्रिया होती है और कब कर्म के अनुसार? कहाँ २ क्रिया एकवचन, अन्य पुरुष और पुल्लिङ्ग होती है?

## क्रिया की पहली रूपरचना।

'सामान्य भूत'—क्रिया का सामान्य रूप पढ़ना, लिखना, चलना, करना, आदि है। इनमें से 'ना' हटा देने पर पढ़, लिख, चल आदि जो बचते हैं वे क्रिया के मूल धातु हैं। इन्हीं धातुओं के अन्तिम स्वर को दीर्घ करने से सामान्य भूतकाल की क्रिया बनती है। जैसे, पढ़-पढ़ा, लिख-लिखा, चल-चला, इत्यादि। बहुवचन में आकारान्त एकारान्त हो जाते हैं। जैसे, पढ़े, लिखे, चले आदि। और, स्त्रीलिङ्ग में एक वचन बहुवचन में 'आ' को क्रमशः 'इ' और 'ई' कर देते हैं। जैसे, चली-चलीं इत्यादि।

यदि धातु स्वरान्त हो तो उनकी सामान्य भूतकालिक क्रियायें भिन्न २ रूप से बनती हैं। धातु के अन्त में यदि 'आ' हो तो 'या' जोड़ देते हैं। जैसे, 'खा' से खाया। 'ई'कारान्त धातु हो तो 'ई' ह्रस्व करके 'या' लगाते हैं। जैसे, 'पी' से पिया। यदि ऊकारान्त हो तो ह्रस्व करके 'आ' लगाते हैं। जैसे, 'छू' से छुआ। यदि एकारान्त धातु हो तो 'ए'कार का

इकार करके 'या' जोड़ते हैं। जैसे 'दे' से दिया। 'ले' से लिया। ओकारान्त धातु में केवल 'या' जोड़ते हैं। ज़ैसे, 'सो' से सोया। होना, जाना और करना इन तीनों धातुओं की ऐसी क्रियायें अनियमित रूप से होती हैं। जैसे, 'हो' से हुआ, 'कर' से किया, 'जा' से गया। पुल्लिङ्ग बहुवचन में इन सबों के आकार का एकार और स्त्रीलिङ्ग एकवचन में इकार हो जाता है—जैसे, खाये, पिये, छुए, दिये, लिये, हुए, किये, गये, खायी, छुई, हुई, गयी। किन्तु स्त्रीलिङ्ग में किया, दिया, लिया, पिया, के क्रमशः की, दी; ली, पी, आदेश हो जाते हैं और स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में इन सबों पर अनुस्वार दे दिया जाता है। जैसे, खायीं; छुईं, हुईं, गयीं, दीं, लीं, कीं, पीं।

इसी सामान्य भूत क्रिया से अन्यान्य प्रत्ययों के करने से आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्ध भूत की क्रियायें बनती हैं।

आसन्न भूत—सामान्य भूत अकर्मक क्रिया के आगे उत्तम पुरुष के एकवचन में हूँ, मध्यम पुरुष के बहुवचन में 'हो' और अन्यत्र एकवचन में 'है' और बहुवचन में 'हैं' लगा कर तीनों पुरुष की क्रियायें बनायी जाती हैं और सकर्मक क्रिया के आगे कर्म के वचन के अनुसार 'है' 'हैं' तीनों पुरुष में आते हैं।

'पूर्ण भूत'—सामान्य भूत क्रिया के आगे पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के एकवचन तथा बहुवचन के अनुसार क्रमशः था, थी, थे, थीं के जोड़ देने से पूर्ण भूतकाल की क्रिया बन जाती है।

'सन्दिग्ध भूत'—सामान्य भूत अकर्मक क्रिया के आगे उत्तम पुरुष के एकवचन में होऊँ, होगा या होऊँगा, मध्यम पुरुष के बहुवचन में होगे, होवोगे, और अन्यत्र एकवचन में

होगा, होवेगा, हो और बहुवचन में होंगे वा होवेंगे वा हों जोड़कर और स्त्रीलिङ्ग में इन्हें ईकारान्त बना कर तीनों पुरुष की क्रियायें बना ली ज़ाती हैं। और, सकर्मक क्रिया के आगे कर्म के लिङ्ग, वचन के अनुसार हो हों, होगा होंगे, होगी होंगी, तीनों पुरुष में आती हैं।

इन चार—सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतों के उदाहरण नीचे की रूपावली में स्पष्ट हैं।

## अकर्मक सामान्य भूतकाल।

'चलना' धातु।

कर्त्ता पुलिङ्ग।

| पुरुष | एकवचन। | बहुवचन |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चला | हम चले |
| म० पु० | तू चला | तुम चले |
| अ० पु० | वह चला | वे चले |
| | कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग। | |
| उ० पु० | मैं चली | हम चलीं |
| म० पु० | तू चली | तुम चलीं |
| अ० पु० | वह चली | वे चलीं |

## आसन्न भूतकाल।

कर्ता पुलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चला हूँ | हम चले हैं |
| म० पु० | तू चला है | तुम चले हो |
| अ० पु० | वह चला है | वे चले हैं |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चली हूँ | हम चली हैं |
| म० पु० | तू चली है | तुम चली हो |
| अ० पु० | वह चली है | वे चली हैं |

## पूर्ण भूतकाल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चला था | हम चले थे |
| म० पु० | तू चला था | तुम चले थे |
| अ० पु० | वह चला था | वे चले थे |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चली थी | हम चली थीं |
| म० पु० | तू चली थी | तुम चली थीं |
| अ० पु० | वह चली थी | वे चली थीं |

## सन्दिग्ध भूतकाल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चला होगा, हूँगा, होऊँ | हम चले होंगे, हों |
| म० पु० | तू चला होगा, हो | तुम चले होंगे, हो |
| अ० पु० | वह चला होगा, हो | वे चले होंगे, हों |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चली होगी, होऊँगी, होऊँ | हम चली होंगी, हों |
| म० पु० | तू चली होगी, हो | तुम चली होगी, हो |
| अ० पु० | वह चली होगी, हो | वे चली होंगी, हों |

सकर्मक क्रिया के इन भूतकालों में कर्तृ-प्रधान रूप नहीं होते बल्कि कर्म-प्रधान रूप होते हैं। इससे कर्ता स्त्रीलिङ्ग वा

पुल्लिङ्ग, एकवचन वा बहुवचन, कुछ हो, उसकी अपेक्षा क्रिया को नहीं रहती। बल्कि कर्म जैसा होता है वैसा ही रूप होता है। नीचे वैसे ही उदाहरण दिये हैं।

## सकर्मक 'पढ़ना' धातु।

### सामान्य भूतकाल।

कर्म्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैंने ग्रन्थ पढ़ा | हमने ग्रन्थ पढ़े |
| म० पु० | तूने ग्रन्थ पढ़ा | तुमने ग्रन्थ पढ़े |
| अ० पु० | उसने ग्रन्थ पढ़ा | उन्होंने ग्रन्थ पढ़े |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैंने पुस्तक पढ़ी | हमने पुस्तकें पढ़ीं |
| म० पु० | तूने पुस्तक पढ़ी | तुमने पुस्तकें पढ़ीं |
| अ० पु० | उसने पुस्तक पढ़ी | उन्होंने पुस्तकें पढ़ीं |

### आसन्न भूतकाल।

कर्म पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग

एकवचन—मैंने, तूने, उसने ग्रन्थ पढ़ा है वा पुस्तक पढ़ी है।
बहुवचन—हमने, तुमने, उन्होंने ग्रन्थ पढ़े हैं वा पुस्तकें पढ़ी हैं।

### पूर्ण भूत काल।

मैंने, हमने, तूने, तुमने, उसने, उन्होंने—

कर्म पु० ए० ग्रन्थ पढ़ा था कर्म, स्त्री० ए० पुस्तक पढ़ी थी।
कर्म पु० ब० ग्रन्थ पढ़े थे कर्म, स्त्री० ब० पुस्तकें पढ़ी थीं।

### सन्दिग्ध भूतकाल।

मैंने, हमने, तूने तुमने, उसने उन्होंने—

कर्म पु० ए० ग्रन्थ पढ़ा होगा; कर्म स्त्री० ए० पुस्तक पढ़ी होगी
कर्म पु० ब० ग्रन्थ पढ़े होंगे; कर्म स्त्री० ब० पुस्तकें पढ़ी होंगी

बोलना आदि जिन सकर्मक धातुओं के कर्ता में 'ने' चिन्ह नहीं आता उनके रूप 'चलना' धातु के ही समान होते हैं।

अभ्यास।

क्रिया का सामान्य रूप कैसा होता है? उसका चिन्ह जब नहीं रहता तब क्या बच जाता है? सामान्य भूत कैसे बनता है? स्वरान्त धातुओं की सामान्य भूतकाल की क्रिया कैसे बनती है? आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्धभूत की क्रियाओं की रचना कैसे होती है? अकर्मक और सकर्मक क्रिया की रचना में क्या अन्तर है? सकर्मक में उपर्युक्त भूतकालों की क्रिया किसके अनुसार होती है? इनकी रूप-रचना में कहाँ विशेष भेद होता है?

## क्रिया की दूसरी रूप-रचना।

हेतुहेतुमद्भूत—क्रिया के मूल धातु के अन्त में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के एकवचन तथा बहुवचन में क्रमशः ता, ते, ती, तीं जोड़ देने से हेतुहेतुमद्भूत क्रिया बनती है। जैसे, चलता, चलते, चलती, चलतीं इत्यादि। कोई २ धातु के सामान्य भूतकालिका क्रिया के साथ होना धातु के मूल में उपर्युक्त प्रत्यय लगा कर भी यह क्रिया बनाते हैं। जैसे–मैं चला होता। वे पढ़े होते। तू चली होती। हम चली होतीं इत्यादि।

इसी हेतुहेतुमद्भूत क्रिया से अन्यान्य प्रत्ययों के करने पर अपूर्ण भूत, सामान्य वर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान की क्रियायें बनती हैं।

'अपूर्ण भूत'—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग वचन के अनुसार, था, थी, थे, थीं के लगाने से अपूर्ण भूत की क्रिया बन जाती है।

'सामान्य वर्तमान'—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे उत्तम पुरुष के एकवचन में 'हूँ', मध्यम पुरुष के बहुवचन में 'हो'

और अन्यत्र एक वचन में 'है' और बहुवचन में हैं, जोड़ने से तीनों पुरुष की क्रियायें बन जाती हैं।

'सन्दिग्ध वर्तमान'—हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार उत्तम पुरुष के एकवचन में होऊँ वा होगा, होगी; वा हूँगा, हूँगी; वा होऊँगा, होऊँगी और मध्यम पुरुष के बहुवचन में हो, होगे वा होवोगे; होगी वा होवोगी तथा अन्यत्र एकवचन में हो, होगा वा होवेगा, होगी या होवेगी और बहुवचन में हों, होंगे वा होवेंगे, होंगी वा होवेंगी जोड़ने से सन्दिग्ध वर्तमान की क्रियायें बना जाती हैं।

इन चार—हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्ण भूत, सामान्य वर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान के उदाहरण नीचे की क्रियावली में स्पष्ट हैं।

## अकर्मक 'चलना' धातु।

### हेतुहेतुमद्भूत काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलता | हम चलते |
| म० पु० | तू चलता | तुम चलते |
| अ० पु० | वह चलता | वे चलते |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलती | हम चलतीं |
| म० पु० | तू चलती | तुम चलतीं |
| अ० पु० | वह चलती | वे चलतीं |

## अपूर्ण भूतकाल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलता था | हम चलते थे |
| म० पु० | तू चलता था | तुम चलते थे |
| अ० पु० | वह चलता था | वे चलते थे |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलती थी | हम चलती थीं |
| म० पु० | तू चलती थी | तुम चलती थीं |
| अ० पु० | वह चलती थी | वे चलती थीं |

## सामान्य वर्तमान काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलता हूँ | हम चलते हैं |
| म० पु० | तू चलता है | तुम चलते हो |
| अ० पु० | वह चलता है | वे चलते हैं |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलती हूँ | हम चलती हैं |
| म० पु० | तू चलती है | तुम चलती हो |
| अ० पु० | वह चलती है | वे चलती हैं |

### सन्दिग्ध वर्तमान काल।

कर्त्ता पुल्लिंग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलता होगा, हूँगा, होऊँ | हम चलते होंगे, हों |
| म० पु० | तू चलता होगा, हो | तुम चलते होगे, हो |
| अ० पु० | वह चलता होगा, हो | वे चलते होंगे, हों |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलती होंगी, हूँगी | हम चलती होंगी, होऊँगी |
| म० पु० | तू चलती होगी | तुम चलती होंगी |
| अ० पु० | वह चलती होगी | वे चलती होंगी |

## सकर्मक 'पढ़ना' धातु।

### हेतुहेतुमद्भूत काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं पुस्तक पढ़ता | हम पुस्तकें पढ़ते |
| म० पु० | तू पुस्तक पढ़ता | तुम पुस्तकें पढ़ते |
| अ० पु० | वह पुस्तक पढ़ता | वे पुस्तकें पढ़ते |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ती | हम ग्रन्थ पढ़तीं |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ती | तुम ग्रन्थ पढ़तीं |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ती | वे ग्रन्थ पढ़तीं |

### अपूर्ण भूतकाल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ता था | हम पुस्तकें पढ़ते थे |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ता था | तुम पुस्तकें पढ़ते थे |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ता था | वे पुस्तकें पढ़ते थे |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ती थी | हम पुस्तकें पढ़ती थीं |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ती थी | तुम पुस्तकें पढ़ती थीं |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ती थी | वे पुस्तकें पढ़ती थीं |

सामान्य वर्तमान काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ता हूँ | हम ग्रन्थ पढ़ते हैं |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ता है | तुम ग्रन्थ पढ़ते हो |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ता है | वे ग्रन्थ पढ़ते हैं |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं पुस्तक पढ़ती हूँ | हम पुस्तकें पढ़ती हैं |
| म० पु० | तू पुस्तक पढ़ती है | तुम पुस्तकें पढ़ती हो |
| अ० पु० | वह पुस्तक पढ़ती है | वे पुस्तकें पढ़ती हैं |

सन्दिग्ध वर्तमान काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ता होगा, हूँगा | हम पुस्तकें पढ़ते होंगे |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ता होगा | तुम पुस्तकें पढ़ते होगे |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ता होगा | वे पुस्तकें पढ़ते होंगे |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ती होंगी, हूँगी | हम ग्रन्थ पढ़ती होंगी |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ती होगी | तुम ग्रन्थ पढ़ती होगी |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ती होगी | वे ग्रन्थ पढ़ती होंगी |

तात्कालिक वर्तमान और तात्कालिक भूतकाल की रूपावली क्रमशः 'रहा है' 'रहा था' क्रियाओं को लिङ्ग वचन के अनुसार जोड़ कर सामान्य वर्तमान और अपूर्ण भूतकाल की रूपावली के समान बना ली जाती है।

अभ्यास।

हेतुहेतुमद्भूत की क्रिया कैसे बनती है ? इस क्रिया से अन्यान्य कौन २ क्रियायें बनती हैं ? अपूर्ण भूत, सामान्य वर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान की क्रियायें कैसे बनती हैं ? तात्कालिक वर्तमान और तात्कालिक भूत की रूपावली कहो ?

## क्रिया की तीसरी रूप-रचना।

सम्भाव्य भविष्य क्रिया—मूल हलन्त धातु से उत्तम पुरुष के एकवचन में 'ऊँ' मध्यम पुरुष के बहुवचन में 'ओ' अन्यत्र एक वचन में 'ए' और बहुवचन में 'एँ' जोड़ देने से तीनों पुरुष की सम्भाव्य भविष्य क्रियायें बन जाती हैं। और, स्वरान्त धातु में 'ऊँ' और 'ओ' (वो) धातु से मिलते नहीं तथा 'ए' के स्थान पर 'वे' या 'ये' और 'एँ' के स्थान पर 'वें' या 'यें' होते हैं। दोनों लिङ्गों में इसके एक से रूप होते हैं। जैसे, चलूँ, चले, चलें, चलो, इत्यादि।

सामान्य भविष्य—इसी सम्भाव्य क्रिया के आगे पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के एकवचन तथा बहुवचन में क्रमशः गा, गी, गें, गीं जोड़ देने से सामान्य भविष्यकाल की क्रियायें तीनों पुरुष में बन जाती हैं।

विध्यर्थक वा आज्ञार्थक—इसके सब रूप सम्भाव्य भविष्य के से होते हैं। केवल मध्यम पुरुष के एकवचन में मूल धातु का आकार ज्यों का त्यों रहता है। कोई २ यह रूप-भेद भी नहीं मानते और सब समान ही बतलाते हैं। इन दोनों का भेद केवल अर्थ ही से समझा जा सकता है। इसके भी दोनों लिङ्गों में एक से रूप होते हैं।

नीचे की क्रियारूपावली में इनके उदाहरण स्पष्ट किये जाते हैं।

### अकर्मक हलन्त 'चलना' धातु।

सम्भाव्य भविष्य काल।

कर्ता पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग।

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं चलूँ | हम चलें |

| | | |
|---|---|---|
| मध्यम पुरुष | तू चले | तुम चलो |
| अन्य पुरुष | वह चले | वे चलें |

## अकर्मक स्वरान्त 'जाना' धातु।

कर्ता पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं जाऊँ | हम जावें |
| म० पु० | तू जावे | तुम जावो |
| अ० पु० | वह जावे | वे जावें |

सामान्य भविष्य काल।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं जाऊँगा | हम * जायेंगे वा जावेंगे |
| म० पु० | तू जावेगा | तुम जावोगे |
| अ० पु० | वह जावेगा | वे जावेंगे वा जायेंगे |

कर्ता स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं जाऊँगी | हम जायेंगी, जावेंगी |
| म० पु० | तू जावेगी | तुम जावोगी |
| अ० पु० | वह जावेगी | वे जावेंगी, जायेंगी |

ऐसे ही हलन्त चल धातु के भी रूप दोनों लिङ्गों में होते हैं।

आज्ञार्थक वा विध्यर्थक क्रिया।

कर्ता पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं चलूँ | हम चलें |
| म० पु० | तू चल (चले) | तुम चलो † |
| अ० पु० | वह चले | वे चलें |

* कोई जायगें, जागें भी बोलते हैं।

† यदि कर्ता 'आप' होगा तो उत्तम पुरुष के बहुवचन में ही का रूप होगा जैसे—आप चलें।

## सकर्मक 'पढना' धातु ।

### सामान्य भविष्य काल ।

#### कर्ता पुल्लिङ्ग ।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं पुस्तक पढ़ूँगा | हम पुस्तक पढेंगे |
| म० पु० | तू पुस्तक पढ़ेगा | तुम पुस्तक पढ़ोगे |
| अ० पु० | वह पुस्तक पढ़ेगा | वे पुस्तक पढ़ेंगे |

#### कर्ता स्त्रीलिङ्ग ।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं ग्रन्थ पढ़ूँगी | हम ग्रन्थ पढेंगी |
| म० पु० | तू ग्रन्थ पढ़ोगी | तुम ग्रन्थ पढ़ोगी |
| अ० पु० | वह ग्रन्थ पढ़ेगी | वे ग्रन्थ पढ़ेंगी |

शेष संभाव्य भविष्यकाल की और विध्यर्थक क्रियायें अकर्मक के समान ही होती हैं। क्रिया से प्रकारकृत भेदों में साधारण, सम्भाव्य और आज्ञार्थक, तीन प्रकार के भेद लिखे गये हैं। इन तीन भेदों में ही उपर्युक्त सब क्रियायें अन्तर्भूत हो जाती हैं। आज्ञार्थक आज्ञार्थक में, हेतुहेतुमद्भत, सन्दिग्ध वर्तमान और सामान्य भविष्य * सम्भाव्य क्रिया में और शेष क्रियायें साधारण क्रिया में चली जाती हैं। इस प्रकार तीनों की रूपावली सम्पन्न होती है।

उपर्युक्त इन क्रियाओं के अतिरिक्त तीन प्रकार की और क्रियायें भी हिन्दी में व्यवहृत होती हैं। ये यद्यपि इन्हीं में अन्तर्भूत हैं तथापि इनकी रचना और व्यवहार भिन्न हैं। जैसे, आइये, आईयेगा और आईयो। इन तीनों के आदर पूर्वक विधि, प्रार्थनार्थक विधि और परोक्ष विधि नाम हैं।

* इसमें विशेषता यह है कि वाक्य में 'यदि' (अगर) का प्रयोग होता है। जैसे, हेतुहेतुमद्भूत—यदि मैं चलता। सन्दिग्ध वर्तमान—यदि मैं चलता होऊं। सामान्य भविष्य—यदि मैं चलूँ, इत्यादि।

पहले से सम्मान, दूसरे से प्रार्थना (इसमें भविष्यकाल का सा भान होता है) और तीसरे से परोक्ष का बोध होता है। ये तीनों क्रियायें आज्ञार्थक ही के भेद में जा सकती हैं और मध्यम पुरुष ही में इनके रूप होते हैं।

धातु से 'इये' लगाकर आदरपूर्वक विधि, इसीके आगे 'गा' जोड़ कर प्रार्थनापूर्वक विधि और 'इयो' जोड़कर परोक्ष विधि की क्रियायें बनती हैं। जैसे, चल—चलिये, पढ़—पढ़िये जा—जाइये, चलियेगा, पढ़ियेगा, जाइयेगा और चलियो, पढ़ियो, जाइयो इत्यादि।

करना, पीना, लेना, देना, होना इन धातुओं के रूप अनियमित होते हैं। जैसे, कीजिये (करिये) दीजिये, पीजिये, लीजिये, हूजिये, कीजियेगा, पीजियेगा, कीजियो, पीजियो इत्यादि।

### अभ्यास।

साम्भाव्य भविष्य क्रिया किसे कहते हैं? इसकी रूपरचना कैसे होती है? सम्भाव्य भविष्य से अन्यान्य कौन २ क्रियायें बनती हैं? सामान्य भविष्य की रचना कैसे होती है? सम्भाव्य भविष्य और विध्यर्थक क्रिया में क्या अन्तर है? उनका परस्पर रूपभेद कहाँ होता है? सम्भाव्य क्रिया में कौन कौन क्रिया आती हैं? इनमें विशेषता क्या है? आदर, प्रार्थना और परोक्षविधि की क्रियायें कैसी होती हैं? तीनों के लक्षण और रूप-रचना बतावो। किस किस धातु में इसकी रूपरचना अनियमित रूप से होती है?

## कर्म और भावप्रधान क्रिया की रूप-रचना।

जिन क्रियाओं के कर्ता में 'ने' चिन्ह आता है और कर्म में 'को' चिन्ह नहीं आता उनकी क्रियायें कर्म-प्रधान होती हैं। किन्तु उनके रूप सब कालों में नहीं होते। केवल चार भूत-कालों ही में होते हैं। पर एक प्रकार की अन्य कर्म-प्रधान क्रिया होती है जिसके रूप सब कालों में होते हैं।

इस कर्मप्रधान क्रिया के बनाने की रीति यह है कि मुख्य धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे 'जाना' धातु के रूपों को काल, पुरुष, लिङ्ग और वचन के अनुसार जोड़ देते हैं। यदि कर्ता आता है तो 'से' सहित और क्रियायें कर्मानुसारिणी होती हैं। जैसे–मुझसे वह देखा गया। उससे हम देखे गये। तुझसे वे देखी गयीं, इत्यादि। इसमें कर्ता प्रायः अप्रकट रहता है। नीचे सब रूप यथाक्रम लिखे जाते हैं।

## सकर्मक 'देखा जाना' धातु।

### सामान्य भूतकाल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया | हम देखे गये |
| म० पु० | तू देखा गया | तुम देखे गये |
| अ० पु० | वह देखा गया | वे देखे गये |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी | हम देखी गयीं |
| म० पु० | तू देखी गयी | तुम देखी गयीं |
| अ० पु० | वह देखी गयी | वे देखी गयीं |

### आसन्नभूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया हूँ | हम देखे गये हैं |
| म० पु० | तू देखा गया है | तुम देखे गये हो |
| अ० पु० | वह देखा गया है | वे देखे गये हैं |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी हूँ | हम देखी गयी हैं |
| म० पु० | तू देखी गयी है | तुम देखी गयी हो |
| अ० पु० | वह देखी गयी है | वे देखी गयी हैं |

पूर्णभूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया था | हम देखे गये थे |
| म० पु० | तू देखा गया था | तुम देखे गये थे |
| अ० पु० | वह देखा गया था | वे देखे गये थे |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी थी | हम देखी गयी थीं |
| म० पु० | तू देखी गयी थी | तुम देखी गयी थीं |
| अ० पु० | वह देखी गयी थी | वे देखी गयी थीं |

सन्दिग्ध भूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया होऊँगा, होगा | हम देखे गये होंगे |
| म० पु० | तू देखा गया होगा | तुम देखे गये होगे |
| अ० पु० | वह देखा गया होगा | वे देखे गये होंगे |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी हूँगी | हम देखी गयी होंगी |
| व० पु० | तू देखी गयी होगी | तुम देखी गयी होगी |
| अ० पु० | वह देखी गयी होगी | वे देखी गयी होंगी |

हेतुहेतुमद्भूत काल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाता | हम देखे जाते |

इस कर्मप्रधान क्रिया के बनाने की रीति यह है कि मुख्य धातु की सामान्यभूत क्रिया के आगे 'जाना' धातु के रूपों को काल, पुरुष, लिङ्ग और वचन के अनुसार जोड़ देते हैं। यदि कर्ता आता है तो 'से' सहित और क्रियायें कर्मानुसारिणी होती हैं। जैसे–मुझसे वह देखा गया। उससे हम देखे गये। तुझसे वे देखी गयीं, इत्यादि। इसमें कर्ता प्रायः अप्रकट रहता है। नीचे सब रूप यथाक्रम लिखे जाते हैं।

## सकर्मक 'देखा जाना' धातु।

### सामान्य भूतकाल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया | हम देखे गये |
| म० पु० | तू देखा गया | तुम देखे गये |
| अ० पु० | वह देखा गया | वे देखे गये |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी | हम देखी गयीं |
| म० पु० | तू देखी गयी | तुम देखी गयीं |
| अ० पु० | वह देखी गयी | वे देखी गयीं |

### आसन्नभूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया हूँ | हम देखे गये हैं |
| म० पु० | तू देखा गया है | तुम देखे गये हो |
| अ० पु० | वह देखा गया है | वे देखे गये हैं |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी हूँ | हम देखी गयी हैं |
| म० पु० | तू देखी गयी है | तुम देखी गयी हो |
| अ० पु० | वह देखी गयी है | वे देखी गयी हैं |

पूर्णभूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया था | हम देखे गये थे |
| म० पु० | तू देखा गया था | तुम देखे गये थे |
| अ० पु० | वह देखा गया था | वे देखे गये थे |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी थी | हम देखी गयी थीं |
| म० पु० | तू देखी गयी थी | तुम देखी गयी थीं |
| अ० पु० | वह देखी गयी थी | वे देखी गयी थीं |

सन्दिग्ध भूत।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा गया होऊँगा, होगा | हम देखे गये होंगे |
| म० पु० | तू देखा गया होगा | तुम देखे गये होगे |
| अ० पु० | वह देखा गया होगा | वे देखे गये होंगे |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी गयी हूँगी | हम देखी गयी होंगी |
| व० पु० | तू देखी गयी होगी | तुम देखी गयी होगी |
| अ० पु० | वह देखी गयी होगी | वे देखी गयी होंगी |

हेतुहेतुमद्भूत काल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा आता | हम देखे जाते |

| | | |
|---|---|---|
| म० पु० | तू देखा जाता | तुम देखे जाते |
| अ० पु० | वह देखा जाता | वे देखे जाते |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाती | हम देखी जातीं |
| म० पु० | तू देखी जाती | तुम देखी जातीं |
| अ० पु० | वह देखी जाती | वे देखी जातीं |

अपूर्ण भूतकाल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाता था | हम देखे जाते थे |
| म० पु० | तू देखा जाता था | तुम देखे जाते थे |
| अ० पु० | वह देखा जाता था | वे देखे जाते थे |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाती थी | हम देखी जाती थीं |
| म० पु० | तू देखी जाती थी | तुम देखी जाती थीं |
| अ० पु० | वह देखी जाती थी | वे देखी जाती थीं |

सामान्य वर्त्तमानकाल।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाता हूँ | हम देखे जाते हैं |
| म० पु० | तू देखा जाता है | तुम देखे जाते हो |
| अ० पु० | वह देखा जाता है | वे देखे जाते हैं |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाती हूँ | हम देखी जाती हैं |
| म० पु० | तू देखी जाती है | तुम देखी जाती हो |
| अ० पु० | वह देखी जाती है | वे देखी जाती हैं |

### सन्दिग्ध वर्त्तमानकाल।

#### कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाता हूँगा, होगा | हम देखे जाते होंगे |
| म० पु० | तू देखा जाता होगा | तुम देखे जाते होगे |
| अ० पु० | वह देखा जाता होगा | वे देखे जाते होंगे |

#### कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाती हूँगी, होगी | हम देखी जाती होंगी |
| म० पु० | तू देखी जाती होगी | तुम देखी जाती होगी |
| अ० पु० | वह देखी जाती होगी | वे देखी जाती होंगी |

### सामान्य भविष्यकाल।

#### कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाऊँ | हम देखे जावें |
| म० पु० | तू देखा जावे, जाय | तुम देखे जावो, जायें * |
| अ० पु० | वह देखा जावे, जाय | वे देखे जावें, जायें |

#### कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाऊँ | हम देखी जावें, जायें |
| म० पु० | तू देखी जावे, जाय | तुम देखी जावो |
| अ० पु० | वह देखी जावे, जाय | वे देखी जावें, जायें |

### सामान्य भविष्यकाल।

#### कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाऊँगा | हम देखे जावेंगे, जायेंगे |
| म० पु० | तू देखा जायगा, जायेगा | तुम देखे जावोगे |
| अ० पु० | वह देखा जायगा, जावेगा | वे देखे जावेंगे, जायेंगे |

* ऐसे स्थानों पर एकार रहित रूप भी बोलते हैं। जैसे, जाँय, जाँयगे इत्यादि।

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाऊँगी | हम देखी जावेंगी, जायेंगी |
| म० पु० | तू देखी जावेगी, जायगी | तुम देखी जावोगी |
| अ० पु० | वह देखी जावेगी, जायगी, | वे देखी जावेंगी, जायेंगी |

विधि क्रिया।

कर्म पुल्लिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखा जाऊँ | हम देखे जावें, जायँ |
| म० पु० | तू देखा जाय | तुम देखे जावो |
| अ० पु० | वह देखा जावे | वे देखे जावें |

कर्म स्त्रीलिङ्ग।

| | | |
|---|---|---|
| उ० पु० | मैं देखी जाऊँ | हम देखी जावें, जायँ |
| म० पु० | तू देखी जा | तुम देखी जावो |
| अ० पु० | वह देखी जावे | वे देखी जावें |

| आदर पूर्वकविधि | प्रार्थनात्मकविधि | परोक्षविधि |
|---|---|---|
| देखे जाइये | देखे जाइयेगा | देखे जाइयो |

| पूर्वकालिक | क्रियार्थक |
|---|---|
| देखा जाकर, देखा जाकरके | देखा जाना |

इस कर्मप्रधान क्रिया में स्वरान्त 'जाना' धातु के भी रूप 'पढ़ना' 'चलना' धातु के समान 'देखना' धातु के साथ चले आये हैं।

भाव-प्रधान क्रिया का रूप नहीं चलता। क्योंकि, उसका रूप एकसा होता है।

अभ्यास।

कर्मप्रधान क्रिया किसे कहते हैं? उसकी क्रिया कैसे बनती है? कर्मप्रधान क्रिया के कर्ता कैसे होते हैं? उनमें कौन २ चिन्ह आते हैं? कब २ इनका प्रयोग होता है? भावप्रधान क्रिया के उदाहरण कैसे होते हैं। इसकी रूपावली क्यों नहीं होती?

## अन्यान्य क्रियायें।

वह सकर्मक क्रिया, जो व्यापार करने वाले के अतिरिक्त अलग २ दो पदार्थ, जिनपर उसके व्यापार का फल समाप्त हो, ढूँढ़ें; द्विकर्मक कहलाती है। जैसे, 'उसने ब्राह्मण को गाय दी'। इसमें 'दी' क्रिया को व्यापार करने वाले 'उसने' इस कर्ता के अतिरिक्त एक दी जाने वाली वस्तु (गाय) की और दूसरे उस मनुष्य की, जिसे (ब्राह्मण) वह वस्तु दी जाने वाली है, अपेक्षा है।

देना धातु को छोड़ कर अन्यान्य द्विकर्मक धातुओं के दूसरे कर्म में 'को' के स्थान पर 'से' आता है। जैसे, ब्राह्मण 'राजा से' धन माँगता है। वह चावल से (को) भात पकाता है। ऐसे ही 'बताना' 'कहना' आदि को भी समझना चाहिये।

अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के अतिरिक्त एक प्रेरणार्थक क्रिया भी होती है। जब कर्ता स्वयं अर्थात् बिना किसी की प्रेरणा के क्रिया के व्यापार को करता है तब क्रिया का प्रयोग स्वार्थक होता है। परन्तु, जब कर्ता किसी दूसरे कर्ता की प्रेरणा से क्रिया को करता है तब क्रिया का प्रयोग प्रेरणार्थक होता है।

प्रेरणार्थक क्रिया में एक ही प्रेरक कर्ता नहीं, बल्कि कई एक हो सकते हैं। एक को छोड़ कर अन्यान्य सभी प्रयोज्य ( जिसकी प्रेरणा की जाय ) कर्ताओं में 'से' विभक्ति लगती जाती है। जैसे, वह पाठ पढ़ता है। मैं उससे पाठ पढ़वाता हूँ। तू मुझसे, उससे पाठ पढ़वाता है, इत्यादि। इनमें पहला वाक्य स्वार्थक है, दूसरा प्रेरणार्थक और तीसरा द्विप्रेरणार्थक है। द्विप्रेरणार्थक क्रिया बहुत कम बोली जाती है, क्योंकि, वाक्य अच्छा नहीं लगता और अर्थ की स्पष्टता भी

नहीं होती। पर, इसके स्थान पर ऐसा वाक्य बोला जाता है और अच्छा भी मालूम होता है। जैसे, 'तू मेरे द्वारा उससे पाठ पढ़वाता है।'

अकर्मक धातु से इस प्रकार की प्रेरणार्थक क्रिया बनाने में एक वाक्य और अधिक उत्तम हो सकता है। जैसे-वह उठता है। मैं उसे उठाता हूँ। तू मुझसे उसे उठवाता है। मोहन तेरे द्वारा मुझसे उसे उठवाता है।

इस प्रकार प्रेरणार्थक क्रिया बनाने से धातु अकर्मक से सकर्मक, सकर्मक से द्विकर्मक और उससे त्रिकर्मक हो जाते हैं।

आना, जाना, सकना आदि के सिवा सब अकर्मकों से सकर्मक और सब सकर्मकों से नीचे लिखे अनुसार प्रेरणार्थक क्रियायें बनाई जा सकती हैं।

## अकर्मक से सकर्मक और उससे प्रेरणार्थक क्रिया बनाने की रीति।

(क) मूल धातु के अन्तिम व्यञ्जन में आ जोड़ देने से अकर्मक से सकर्मक और वा जोड़ देने से सकर्मक से प्रेरणार्थक क्रिया बन जाती है। जैसेः—

| अकर्मक | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| उठना | उठाना | उठवाना |
| चलना | चलाना | चलवाना |
| चढ़ना | चढ़ाना | चढ़वाना |
| बजना | बजाना | बजवाना |
| भटकना | भटकाना * | भटकवाना |

* प्रायः तीन अक्षर के धातुओं के दूसरे अक्षर का सकर्मक में हल सा उच्चारण होता है।

| | | |
|---|---|---|
| पिघलना | पिघलाना | पिघलवाना |
| खटकना | खटकाना | खटकवाना |

(ख) जिन धातुओं के आदि के अक्षर दीर्घ हों तो उन्हें ह्रस्व करके अर्थात् आ, ई, ऊ, ए के अ, इ उ, इ करके पूर्वोक्त रीति के अनुसार अकर्मक से सकर्मक और उससे प्रेरणार्थक क्रिया बनाते हैं। जैसेः—

| अकर्मक | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| भागना | भगाना | भगवाना |
| जागना | जगाना | जगवाना |
| छींकना | छिंकाना | छिंकवाना |
| घूमना | घुमाना | घुमवाना |
| लेटना * | लिटाना | लिटवाना |

(ग) बहुतेरे अकर्मक धातुओं के आदि स्वर को दीर्घ करने से और कितनों के आदि स्वर को गुण करने से सकर्मक और पूर्ववत् 'वा' जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। जैसे:—

| अकर्मक | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| कटना | काटना | कटवाना |
| टलना | टालना | टलवाना |
| फँसना | फाँसना | फँसवाना |
| लदना | लादना | लदवाना |
| पिसना | पीसना | पिसवाना |
| लुटना | लूटना | लुटवाना |
| घिरना | घेरना | घिरवाना |
| खुलना | खोलना | खुलवाना |

* कहीं २ एकारान्त ज्यों का त्यों रहता है। जब इसी लेटना का अर्थ सोना नहीं होता तब वहाँ ह्रस्व नहीं होता। जैसे, वह पाँक से उसे लेटाता है।

(घ) कितने सकर्मक धातु हैं जिनसे द्विकर्मक और प्रेरणार्थक बनाने में ऊपर ही के सब नियम लगाये जाते हैं। जैसे:—

| सकर्मक | द्विकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| पढ़ना | पढ़ाना | पढ़वाना |
| गाड़ना | गड़ाना | गड़वाना |
| जीतना | जिताना | जितवाना |
| पूजना | पुजाना | पुजवाना |
| देखना | दिखाना | दिखवाना |
| छोड़ना | छुड़ाना | छुड़वाना |
| ऐंठना | ऐंठाना* | ऐंठवाना |
| सींचना | सिंचाना | सिंचवाना |

(ङ) कितने सकर्मक स्वरान्त धातु हैं जिनके आदि स्वर को ह्रस्व करके 'ला' और 'लवा' लगाने से क्रमशः द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियायें बन जाती हैं। जैसे:—

| सकर्मक | द्विकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| पीना | पिलाना | पिलवाना |
| सीना | सिलाना | सिलवाना |
| देना | दिलाना | दिलवाना |
| धोना | धुलाना | धुलवाना |
| खाना | खिलाना† | खिलवाना |

(च) कितने अकर्मक स्वरान्त धातु से द्विकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया बनाने में यही नियम लगता है। जैसे:—

| अकर्मक | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| रोना | रुलाना | रुलवाना |

* कहीं धातुओं के 'ऐ' का 'इ' भी हो जाता है। जैसे, खैंचना, खिचाना।

† यहाँ 'अ' ह्रस्व होने के बदले ह्रस्व 'इ' होता है—

| | | |
|---|---|---|
| जीना | जिलाना | जिलवाना |
| चूना | चुलाना | चुलवाना |
| सोना | सुलाना | सुलवाना |

(छ) कितने अकर्मक धातुओं की सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया अनियमित-रूप से बनती हैं। जैसे:—

| अकर्मक | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| फटना | फाड़ना | फड़वाना |
| बिकना | बेचना | बिकवाना |
| जुटना * | जोड़ना | जुड़वाना |
| टूटना | तोड़ना | तुड़वाना |

(ज) कुछ धातुओं की विकल्प से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियायें बनती हैं। जैसे:—

| धातु | सकर्मक | प्रेरणार्थक |
|---|---|---|
| डूबना | डुबोना, डुबाना | डुबवाना |
| भींगना | भिंगोना, भिंगाना | भिंगवाना |
| बैठना | बिठाना, बिठालना | बिठवाना, बिठलाना |
| देखना | दिखाना, दिखलाना | दिखवाना |
| छूटना | छोड़ना | छोड़वाना, छुड़वाना |
| बोलना | बुलाना, बोलाना | बोलवाना, बुलवाना |
| सोना | सोलाना, सुलाना | सोलवाना, सुलवाना |
| चुभना | चुभाना, चुभोना | चुभवाना |

(झ) कितने धातुओं के अलग २ अर्थ रखने वाले दो सकर्मक हो जाते हैं। जैसे, घुलना—घोलाना (मिलाना)

* टकारान्त धातु के प्रायः ट का ड़ और उकार का ओकार होता है। जैसे, घूटना, फूटना, आदि।

घुलाना ( गलाना ) चलना—चलाना ( फेंकना या भेजना ) चालना ( चलनी से झाड़ना ); गड़ना—गड़ाना (काँटा आदि) गाड़ना ( मुर्दा वगैरह )।

अभ्यास।

द्विकर्मक क्रिया किसे कहते हैं ? प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? इन दोनों की वाक्य-रचना कैसे होती है ? प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के कितने नियम हैं ? परस्पर उनकी बनावट में क्या अन्तर है ? प्रत्येक नियम नये नये उदाहरणों के साथ बतलावो।

## संयुक्त क्रिया ( Compound Verbs )

जब दो तीन धातुओं के योग से कोई क्रिया बनती है तब उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे, वह 'मार बैठा'। वह यों ही 'लिया दिया करता है'। 'घुमा फिरा कर' बातें न बनावो। ग्रन्थ 'भेजवा दिया'। ऐसी क्रियाओं से अर्थों में नूतनता आ जाती है और वाक्य अच्छे मालूम होते हैं।

संयुक्त क्रिया की आदि क्रिया मुख्य है। उसीके अनुसार धातु का अर्थ और उसका सकर्मक या अकर्मक होना समझा जाता है। किन्तु, 'ले जाना' आदि संयुक्त धातु के कर्ता में 'ने' का प्रयोग होते न देख कर वह नियम निकलता है कि जब संयुक्त सकर्मक क्रिया का 'उत्तरार्द्ध' अकर्मक हो तो कर्ता में 'ने' का चिन्ह नहीं आता। जैसे, वह पुस्तक देख चुका। 'ने' के प्रयोग करने में अन्तिम क्रिया ही मुख्य समझी जाती है।

नीचे लिखे कई प्रकार से संयुक्त क्रियायें बनती हैः—

१ निश्चयार्थक आदि—धातु के आगे उठना, बैठना, आना, जाना, चलना, डालना, पड़ना, रहना, देना, लेना आदि क्रियाओं के जोड़ने से, निश्चय, पूर्णता, नित्यता, या ऐसा ही कोई अन्यान्य अर्थ प्रकट करने वाली संयुक्त क्रियायें बनती हैं। जैसे, बोल

उठना, कह बैठना, ले आना, खा जाना, ले चलना, मसल डालना, गिर पड़ना, सो रहना, ले लेना, दे देना, आदि।

हेतुहेतुमद्भूत और सामान्य भूतकालिक क्रियाओं के साथ भी आना, जाना, रहना आदि धातुओं के जोड़ कर निश्चयार्थक संयुक्त क्रियायें बनती हैं। इनके दोनों भागों में लिङ्ग वचनानुसार विकार होते हैं। जैसे वह खाता रहा। बच्चे भागते जाते हैं। स्त्री बोलती आती थी। वे खड़े रहेंगे। लड़की चली आयी, इत्यादि।

२ शक्तिबोधक—धातु के आगे 'सकना' क्रिया के जोड़ने से शक्तिबोधक क्रिया बनती है। जैसे, चल सकना, चढ़ सकना, पढ़ सकना, कर सकना, आदि।

३ समाप्त्यर्थक—धातु के आगे 'चुकना' क्रिया के जोड़ने से समाप्त्यर्थक क्रिया बनती है। जैसे, कह चुकना, खा पी चुकना, देख चुकना, मार चुकना, आदि।

४ तत्कालबोधक—धातु की सामान्य भूतकालिक क्रिया के अन्तिम स्वर को एकार बना कर देना, डालना क्रिया के जोड़ने से यह क्रिया बनती है। जैसे, कहे देना, मारे डालना, किये डालना, दिये देना, जलाये डालना, आदि। पहने आना, लादे जाना, बिठाये आना आदि उदाहरण भी इसीमें आते हैं। ऐसी संयुक्त क्रियाओं के बीच में लिङ्ग वचनानुसार हुआ, हुए, हुई आदि का भी प्रायः प्रयोगहोता है।

५ नित्यताबोधक—धातु की सामान्य भूतकालिक क्रिया के आगे करना क्रिया जोड़ने से नित्यताबोधक क्रिया बनती है। जैसे, कहा करना, पढ़ा करना, दिया करना, इत्यादि।

६ इच्छाद्योतक—'कहना' धातु के स्थान पर 'चाहना' क्रिया जोड़ कर नित्यता-बोधक के समान इच्छाद्योतक क्रिया

बनती है। जैसे, आया चाहना, गया (जाया) चाहना, बोला चाहना, पढ़ा चाहना, इत्यादि। ऐसी संयुक्त क्रियाओं से कहीं २ क्रिया के तत्काल व्यापार का बोध होता है। जैसे, वह गिरा चाहता है घड़ी बजा चाहती है, आदि। चाहिये शब्द के योग में भी संयुक्त क्रिया होती है। जैसे, देखा चाहिये। खानी चाहिये, इत्यादि।

७ आरम्भबोधक—धातु के चिन्ह 'ना' को 'ने' करके उसके आगे 'लगना' किया जोड़ने से आरम्भबोधक क्रिया होती है। जैसे, खाने लगना, पढ़ने लगना, चलने लगना, देने लगना, बोलने लगना, इत्यादि।

८ अवकाश-बोधक—'लगना' क्रिया के स्थान पर 'देना' और 'पाना' क्रिया को जोड़ कर आरम्भबोधक के समान अव काशबोधक क्रिया बनती है। जैसे, खाने देना, बोलने देना, चलने पाना, सोने पाना, आदि।

९ परतन्त्रता बोधक—धातु के सामान्य रूप के आगे 'पड़ना' क्रिया के जोड़ने से यह क्रिया बनती है। जैसे, कहना पड़ना, देना पड़ना, करना पड़ना, आदि

'होना' क्रिया के रूप जोड़ने से जो कर्मवाच्य के से वाक्य बोले जाते हैं वे इसी विभाग में आते हैं जैसे, दुःख झेलने थे। कठिन काम करने होंगे। सूखी रोटी खानी ही पड़ी। दिखाई देना, सुनाई पड़ना, आदि के प्रयोग भी इसी अर्थ में कर्मवाच्य के समान होते हैं।

१० कुछ ऐसी संयुक्त क्रियायें हैं जो भिन्न २ रूप से बनती हैं और इनके धातु-संयोग के स्थान पर शब्द-संयोग भी होता है। जैसे—भय खाना, चुप रहना, मन मारना, ध्यान धरना, आदि। 'करना' धातु का संयोग करके सब शब्दों से क्रिया

बनायी जा सकती है। जैसे, काम करना, पाठ करना, पूजा करना, लिखा पढ़ी करना।

कितनी संयुक्त क्रियायें एकार्थ ही में प्रयुक्त होती हैं। जैसे बोलना-चालना, देखना-रेखना, लेना-देना, मारना-पीटना, लोटना-पोटना, चलना-फिरना, लिखना-पढ़ना, कूदना फाँदना इत्यादि।

संयुक्त क्रिया के ऊपर लिखे हुए धातुओं की रूपावली पहले की सामान्य धातु-रूपावली के समान ही होती है और उनके जो नियम हैं वे ही इसमें भी लगते हैं।

## अभ्यास।

संयुक्त क्रिया किसे कहते हैं? इससे वाक्य में क्या लाभ है? संयुक्त क्रिया किसके समान सकर्मक और अकर्मक समझी जाती है? कर्ता में विभक्ति किसके अनुसार आती है? संयुक्त क्रियायें कितनी हैं? प्रत्येक का लक्षण क्या है? उनकी रचना कैसे होती है? धातु से कितने प्रकार की और कौन २ संयुक्त क्रियायें बनती हैं? कौन २ संयुक्त क्रियायें सामान्य भूतकाल की क्रिया से बनती हैं और कौन कौन धातु के सामान्य रूप से? परतन्त्रता-बोधक संयुक्त क्रिया की रचना कैसे होती है? भिन्न २ प्रकार की और एकार्थक संयुक्त क्रियायें कैसी होती हैं? इनके कुछ नये उदाहरण दो।

नीचे लिखे वाक्यों में संयुक्त क्रियाओं के नाम और उनकी बनावट लिखो।

वह हमेशा आया जाया करता है। उससे मुझे कुछ पूछ-पाछ करना नहीं है। उसको वहीं पड़े रहने दो। जब जी में आता है तब वह किसीसे कुछ ले लेता है और किसीको कुछ दे देता है। उसे जो कुछ कहना था कह चुका, अब तुम जो कुछ कह सको कहो। मैं भी जो कहना है कहे डालता हूँ। मुझे अब तो लेने के देने पड़े। अब वह कहना चाहता है उसे भी कहने दो। वह भी कहने लगा। घूमते फिरते हो या पढ़ते लिखते भी हो। मन लगा कर काम किया करो।

## नामधातु।

हिन्दी में बहुत से ऐसे धातु हैं जो शब्दों से बने हैं। उनकी गणना शुद्ध धातुओं में नहीं होती। नाम अर्थात् संज्ञा से बनने के कारण वे नामधातु कहाते हैं। जैसे, रंग-रँगना, लटपट-लटपटाना, फटकार-फटकारना इत्यादि।

[ क ] बहुतेरे नामधातु शब्दों में आ प्रत्यय लगने से बन गये हैं। जैसे, बात-बताना, छटपट-छटपटाना, ठंढ-ठंढाना, गर्म—गर्माना, * लाज—लजाना।

[ ख ] कई नामधातु शब्दों में या † जोड़ने से बने हैं। जैसे, पानी—पनियाना, चपत—चपतियाना, बात—बतियाना, हाथ—हथियाना, जूता—जुतियाना आदि।

[ ग ] कितने नामधातु ध्वनि-विशेष के अनुकरण से आ प्रत्यय लगाकर बने हुए हैं। जैसे, करकर—करकराना, छनछन-छनछनाना, बड़बड़—बड़बड़ाना, भनभन—भनभनाना, भर भर—भरभराना।

[ घ ] कितने नामधातु केवल धातु के सामान्य 'ना' चिन्ह जोड़ने से ही बने हैं। जैसे, दुहरा-दुहराना, बघार-बघारना, फटकार-फटकारना, चिकना-चिकनाना।

[ ङ ] कितने अनियमित रूप से बनते हैं। जैसे दाल—दलना, चीथड़ा—चिथेड़ना, घुस्सा—घुसवेटना।

## धातुज धातु।

धातु से धात्वन्तर भी बनते हैं। धात्वन्तर होने से या

* ऐसे प्रत्ययों के आने पर पूर्व स्वर का ह्रस्व हो जाता है।

† जहाँ या लगता है वहाँ शब्द के अन्तिम स्वर का प्रायः इकार हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है।

तो उनके अर्थ में विशेषता आ जाती है या उनका अर्थान्तर हो जाता है।

धातुज धातु दो प्रकार के हैं। एक अतिशयार्थक और दूसरा इच्छार्थक। धातु के द्वित्व करने से अतिशयार्थक क्रियायें बनती हैं। जैसे, टर्राना—टरटराना, बकना—बकबकाना, गोदना—गुदगुदाना आदि।

धातु में 'वास' जोड़ने से प्रायः इच्छार्थक क्रियायें बनती हैं। जैसे, भूकना—भुकवासना, लोटना—लोटवासना, बकना—बकवासना आदि।

अभ्यास।

नामधातु किसे कहते हैं? उसके कितने प्रकार हैं? उसके भिन्न २ प्रकार की बनावट क्या है? प्रत्येक के पाँच पाँच उदाहरण बतलावो? धातुज धातु कितने प्रकार के हैं? वे कैसे बनते हैं? इनके पाँच २ नये उदाहरण दो। नामधातु, अतिशयार्थक और इच्छार्थक धातुओं के पाँच २ वाक्य बनावो।

## क्रिया का शाब्दबोध।

क्रिया के पद-परिचय में इतनी बातें बतानी चाहिये-(क) प्रकार (ख) भेद (ग) वाच्य (घ) काल (ङ) लिङ्ग (च) वचन (छ) पुरुष (ज) वाक्य में उसका सम्बन्धी शब्द।

तुमने जो माला दी थी वह भूल गयी।

दी थी—निश्चयार्थक, सकर्मक, कर्मवाच्य, पूर्णभूत काल, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, अन्यपुरुष, 'माला' कर्म के अनुसार क्रिया आयी है।

भूल गयी—निश्चयार्थक, अकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्य भूत, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, अन्य पुरुष, इसका कर्ता 'वह' है।

वह काम करे तो रुपये मिल जावेंगे।

करे—सम्भाव्य, सकर्मक, कर्तृप्रधान, सम्भाव्य भविष्य काल, पुल्लिङ्ग, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्ता इसका 'वह' है।

मिल जावेंगे—निश्चयार्थक, संयुक्त क्रिया, अकर्मक, कर्तृ-वाच्य, सामान्य भविष्य काल, पुल्लिङ्ग, अन्य पुरुष, बहुवचन, 'रुपये' इसका कर्ता है।

फूल तोड़ कर माला बनायी गयी।

तोड़कर—पूर्वकालिक क्रिया, निश्चयार्थक, सकर्मक, कर्तृ प्रधान, कर्म इसका 'फूल' है। ऐसी क्रियाओं के लिङ्ग, वचन और पुरुष नहीं जाने जाते।

बनायी गयी—निश्चयार्थक, संयुक्त सकर्मक क्रिया, कर्म-प्रधान, सामान्य भूतकाल, स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष, एकवचन, इसका कर्म 'माला' है।

वे दूसरों से भी काम कराते हैं।

कराते हैं—आज्ञार्थक, सकर्मक, कर्तृवाच्य, प्रेरणार्थक क्रिया, पुल्लिङ्ग, एकवचन, अन्य पुरुष, कर्ता इसका 'वे' है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाओं का शाब्दबोध करो।

क्या पानी नहीं पड़ेगा? गृहस्थ हाय २ करते हैं? आकाश में बादल नहीं दिखलाई पड़ते। जो हुआ सो हुआ। पानी पड़े पड़े करता है पर पड़ता नहीं। यदि ईश्वर की दया हो तो पानी पड़ना कौन कठिन है। ईश्वर का नाम लो, जिससे वह दया दिखलावेगा। खेत पनियाने से भला बीज बच सकेगा? यदि बादल होता तो जरूर पानी पड़ता। उसने आकाश का रंग देखकर आह भरी। देखते २ बादल उमड़े। वृष्टि होने लगी।

## क्रियाविशेषण (Adverb)

क्रिया की विशेषता प्रकट करने वाले क्रियाविशेषण कहाते हैं। जैसे-मैं 'आज' आया। 'जल्द' जावो। 'अकस्मात्' यह घटना घटी। 'धीरे से' बोलो।

क्रियाविशेषण कभी २ विशेषण और क्रियाविशेषण का भी विशेषण हो कर आता है। जैसे, 'बहुत' बड़ा लड़का है। 'बहुत' दूर नहीं जाना है।

क्रियाविशेषण के कई भेद हैं। इनमें चार प्रधान हैं (१) कालवाचक, (२) स्थानवाचक, (३) भाववाचक (४) और परिमाणवाचक।

### कालवाचक।

प्रतिदिन, घंटे घंटे, कभी, अभी, कभी कभी, अब तब, कब, जब, आज, कल, परसों, तरसों, तत्काल, अक्सर, देर से, सवेरे, शाम, सायम्, प्रातः, तड़के, भोरे, सदा, सर्वदा, फिर, बाद, बार बार इत्यादि।

### स्थानवाचक।

ऊपर, नीचे, चारो ओर, और कहीं, अगल बगल, कहीं, बीच, तले, किनारे, यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ तहाँ, इधर, उधर, किधर, जिधर, तिधर, पार, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, अत्र, तत्र, सर्वत्र, पास, दूर, आमने सामने, इत्यादि।

### भाव वा प्रकारवाचक।

अचानक, अर्थात्, केवल, क्यों, ज्यों, त्यों, यों, यद्यपि, तथापि, परस्पर, सचमुच, सेतमेंत, हां, न, नहीं, मत, स्वयं, अवश्य, वृथा यथार्थ, ठीक, सहसा, जानो, मानो, निःसन्देह, सर्वथा, जल्द, झूठ, धीरे, निरन्तर, परस्पर, विरले, लगातार, कदाचित् इत्यादि।

परिमाणवाचक।

जरा, कई एक, बिल्कुल, अत्यन्त, बहुत, तनिक, टुक, कुछ, बिरले, प्रायः, समूचे, करीब २, लगभग, अधिकता से, कठिनता से, ठीक ठीक, काफी, मिल जुल के।

क्रियाविशेषण के सामान्यतः चार भेद और होते हैं। (५) संख्यावाचक—(६) रीतिवाचक (७) कारणवाचक और (८) इच्छासूचक।

संख्यावाचक।

अकेले, एकदा, एक बार, दोबारा, पहले, दो दो करके।

रीतीवाचक।

धीरे से, शान्ति से, चुप चाप, ऐसे, अचानक, अनुसार, धड़ाधड़, प्रकार।

कारणवाचक।

इसलिये, क्यों, निस्सन्देह, इस पर भी, अतएव, अबतक।

इच्छासूचक।

हाँ, नहीं, शायद्, निश्चय, सचमुच, तो, इत्यादि।

## क्रियाविशेषण की रचना।

निश्चयवाचक बनाने के लिये क्रिया विशेषण में ही जोड़ देते हैं। जैसे, क्यों ही, त्यों ही, यों ही।

कहीं २ इस 'ही' का केवल 'ई' प्रकट रहता है और ब का भ हो जाता है। जैसे, अभी, कभी, जभी, तभी।

कुछ स्थानवाचक क्रियाविशेषणों में दीर्घ ई कार करने से विशेषण भी हो जाते हैं। जैसे, ऊपरी, बाहरी, भीतरी। कहीं २ 'ला' भी अनियमित रूप से लगते हैं। जैसे, अगला, पिछला।

कभी २ निश्चयता प्रकट करने के लिये इन्हें दुहरा देते हैं और कभी २ भिन्न २ दो अव्ययों को एक साथ लाते हैं। जैसे, कभी कभी, कहीं कहीं, जब कभी, और कहीं, ज्यों त्यों, कभी नहीं, जहाँ कहीं, वहाँ तहाँ इत्यादि।

अनिश्चयता प्रकट करने के लिये दो अव्ययों के बीच में न का प्रयोग करते हैं। जैसे, जभी न तभी, जहाँ न तहाँ, जब न तब इत्यादि।

बहुत से शब्दों के साथ 'से' 'करके' 'पूर्वक' आदि जोड़ कर क्रियाविशेषण बना लिये जाते हैं। जैसे, वह 'गद्गद 'वचन से' बोला। 'बुँद बुँद करके' तालाब भरता है। मैं तुमसे 'विनय पूर्वक' कहता हूँ।

संस्कृत के शब्दों के तृतीया एकवचन के रूप और तस् प्रत्ययान्त रूप भी किया विशेषण होते हैं। जैसे, 'येनकेन प्रकारेण' यह काम होगया। 'यथार्थतः' यह काम कठिन था।

जब कभी विशेषण ही क्रियाविशेषण के समान वाक्यों में व्यवहृत होते हैं। जैसे, 'सीधे' चलो। वह काम 'अच्छा' करता है। 'भले' कहा। कभी २ संज्ञा से भी क्रियाविशेषण हो जाता है। जैसे, मैंने, 'पुर्जे पुर्जे' देख डाला।

कुछ क्रियाविशेषणों के साथ विभक्तियाँ भी आती हैं। जैसे, 'आज का' काम कल पर न छोड़ो। 'दोपहर को' भूख लगती है। 'सबेरे से' शाम तक बैठो। 'इधर का' उधर क्यों करते हो। 'उधर से' आया इधर गया। 'यहाँ की' भूमि उपजाऊ है न कि 'वहाँ की'।

### कुछ विशेष क्रियाविशेषण।

सर्वोपरि, पहले पहल, निदान, अन्त में, बारम्बार, यथार्थतः, अद्यावधि, एकदम; बिल्कुल, तत्क्षण, तत्काल, समय

समय पर, प्रसङ्गतः, बात बात में, बहुत दिनों से, यथा समय, एक समय, अन्ततोगत्वा, अलबत्ते, सुतरां, अनियमितरूपसे, वरन्, एकबार, बीच बीच में, साथ ही साथ, सर्वप्रथम, आद्योपान्त, आगे पीछे, संपूर्ण रूप से, यावज्जीवन, आपादमस्तक पुङ्खानुपुङ्ख रूप से, पलक मारते, दुर्भाग्यवश, टकटकी बाँधे, अन्धाधुन्धा मुहाँमुहीं, कानाकानी, एक एक करके, रातो रात, आठो पहर, बहुधा, क्रमशः, एकाएक, हाथों हाथ, रोते रोते, काम के मारे, बराबर, परस्पर, अन्योन्य, सहसा, कौड़ी कौड़ी, यथाशक्ति, कर्तव्यानुरोध से, मुक्तहस्त से, ज्यों त्यों करके, कुछ न कुछ, देखते देखते, यहाँ वहाँ से, जहाँ कहीं से, ज्यों का त्यों, यहाँ वहाँ का, चुपचाप ।

## क्रिया-विशेषण का शाब्दबोध ।

क्रियाविशेषण के पदपरिचय में उसका भेद और दूसरे शब्द के साथ वाक्य में जो सम्बन्ध हो वह बताना चाहिये । जैसे—

बहुत जल्द जावो ।

बहुत—परिमाणवाचक, क्रिया-विशेषण और 'जल्द' का गुण-बोधक है ।

जल्द—समयवाचक, क्रियाविशेषण और क्रिया का काल बतलाता है ।

### अभ्यास ।

क्रियविशेषण किसे कहते हैं ? यह नाम क्यों हुआ ? क्रिया-विशेषण के मुख्य कितने प्रकार हैं और कितने सामान्य ? प्रत्येक का लक्षण उदाहरणानुसार बताओ । निश्चयता और अनिश्चयता प्रकट करने के लिये क्रिया-विशेषण में क्या करते हैं ? कितने

प्रकार से क्रिया-विशेषण बनाये जाते हैं ? पाँच ऐसे विशेषणों को बतावो जो क्रिया-विशेषण के समान व्यवहृत होते हों।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया-विशेषण के भेद बतावो:—

कब घर जावोगे ? मैं कह नहीं सकता कि उन्हें कहाँ २ देखा है। ऐसे दिखलाने से काम नहीं चलेगा। तुम निरे बेवकूफ हो। कहने की कुछ भी परवाह नहीं करते। अवश्य तुमको आगे पीछे कुछ सोचना चाहिये। इससे बहुत तुमको लाभ होगा और जहाँ जावोगे वहीं तुम्हारा अत्यन्त सम्मान होगा।

इन शब्दों से क्रियाविशेषण बनावो:—

खुश, विचार, शत, शीघ्र, दिन, समय, तत्पर, लोभ, आदि अन्त, बाल बाल, क्षण, दैवेच्छा, मुक्तहस्त, अनुग्रह, क्रम, सुख, पूर्ण, पवित्र, भय।

## सम्बन्ध-सूचक अव्यय।

वाक्य में एक पद के साथ दूसरे पद के सम्बन्ध बतलाने वाले अव्यय सम्बन्ध-सूचक अव्यय कहलाते हैं। जैसे, उसके 'समेत' भीतर जावो। तालाब के 'बीच में' एक जाठ है। आगे पीछे, पर, और, निकट आदि। कहीं २ 'से' भी इनके पहले लाते हैं। जैसे, वह हम से आगे बढ़ गया। तू उससे पीछे हो गया।

सम्बन्ध-वाचक शब्द अधिकतर अधिकरण कारक के चिन्ह के लोप करने ही से बने हैं। जैसे, बाहर में—बाहर, भीतर में-भीतर, बदले में-बदले, आदि। यह लोप विकल्प से होता है। पीछे में या पीछे निन्दा करना उचित नहीं है। यह वाक्य दोनों तरह बोल सकते हैं।

कुछ सम्बन्ध सूचक अव्यय ये हैं—सिवा, सिवाय, बगैर, विना, अनुसार, अनन्तर, साथ, समान, बराबर, द्वारा, आस पास, उपरान्त, अलावा, बदले, योग्य, बाद, विपरीत, हेतु,

निमित्त, वजह, तरफ, तरह, मार्फत, नांई, खातिर, ओर। अन्तिम सातो अव्यय स्त्रीलिङ्ग समझे जाते हैं।

हिन्दी में विशेषतः सम्बन्धवाचक अव्यय होते नहीं। आगे, पीछे, बाहर, भीतर आदि अव्यय स्थानवाचक आदि क्रिया-विशेषण ही के अन्तर्भूत हो जाते हैं।

कितने वैयाकरण 'लिये' 'वास्ते' 'पर' आदि को विभक्ति चिन्ह मानते हैं। उनके मत में तो इनके सम्बन्धवाचक अव्यय होने की कोई बात ही नहीं है पर जो इन्हें विभक्ति चिन्ह नहीं मानते उनके मत में भी ये कारकार्थक अव्यय माने जाते हैं न कि सम्बन्धवाचक। इसलिये इन सबों का सम्वन्धबोधक के ऐसा प्रयोग प्रायः नहीं होता।

### समुच्चय-बोधक अव्यय।

समुच्चय-बोधक अव्यय पदों वा वाक्यों वा वाक्यखण्डों को जोड़ते वा अलग करते हैं। जैसे—मोहन और सोहन को बुलावो। वह आवे या तुम आवो।

समुच्चय-बोधक अव्यय दोप्रकार के हैं—एक संयोजक और दूसरा वियोजक। जो शब्दों वा वाक्यों को जोड़ते हैं वे संयोजक और जो इनको अलग करते हैं वे वियोजक कहाते हैं। जैसे—

योजक—और, यथा, यदि, कि, तो, फिर, भी, पुनः, अथच, एवं, तथा, तो भी, इससे, जो, जौन, सो, अलावे, अतिरिक्त, केवल, ताकि, तब, इस प्रकार, इत्यादि।

वियोजक—वा, या, अथवा, किन्तु, परन्तु, पर, चाहे, न कि, न तो, बाद, क्योंकि, अगर, नहीं तो, क्या, वैसा, जैसा, यद्यपि, या तो, तबतक, अब, इत्यादि।

संयोजक और वियोजक में भी कई अवान्तर भेद हैं।

जैसे, 'कारण वाचक'—मैं तुम्हें अवश्य मारूँगा 'क्योंकि' तुमने याद नहीं किया। 'तुलनात्मक—वह मेरी 'अपेक्षा' उत्तम संगीत जानता है। 'फलोपधायक' तुमने जान कर आग में हाथ दिया 'इससे' जल गया, इत्यादि।

उपर्युक्त तीनों अव्ययों के कई उदाहरण ऐसे हैं जो दोनों और तीनों के लिये समान हैं। ऐसे अव्ययों का अर्थानुसार भेद समझा जाता है। जैसे, खूँटी 'पर' कपड़ा रक्खो। उसने काम किया 'पर' तुमने नहीं। पहले वाक्य में 'पर' विभक्ति वा सम्बन्ध का बोध करता है और दूसरे में वियोजन का। इससे यह यथा-स्थान दोनों प्रकार के अव्यय हुए। ऐसे ही सब को समझना चाहिये।

## विस्मयादिबोधक अव्यय।

विस्मयादिबोधक अव्यय से अन्तःकरण के आश्चर्य, आनन्द, क्लेश आदि भाव प्रकाशित होते हैं और पूर्णार्थ-प्रकाशक होने के कारण एक ही शब्द से एक अलग वाक्य का भी काम हो जाता है। जैसे—ओः, अरे, हुँ, छिः इत्यादि।

ये कई प्रकार के होते हैं। जैसे—'क्लेश-बोधक'—आह, ऊह, हाय, हाय, अहहह, त्राहि त्राहि, बापरे, मैयारे, इत्यादि। 'आश्चर्य-बोधक'—एं, अरे, ओफ, आश्चर्य, ताज्जुब, ओःहो। 'आनन्दजनक'—बाह, बाह, धन्य धन्य, शाबश इत्यादि। 'स्वीकार-वाचक'—अस्तु, अच्छा, हाँ, ऐसा ही हो, इत्यादि। 'अनादर वाचक'—छिः छि, धुत्, धत्, धिक्, फिश्, दूर दूर, धिक्कार, हुश, हत, राम राम, इत्यादि।

इन अव्ययों का भी शाब्दबोध क्रिया-विशेषण ही के समान होता है।

अभ्यास।

नीचे लिखे भिन्न २ अव्ययों का वाक्यों में व्यवहार करोः—

आर पार, चारो ओर, बाद, अलावे, बीच, भीतर, ऊपर, नीचे, तब से, तबतक, साथ, पर, अच्छा, विना, तब, आगे, केवल, क्योंकि, अगर, जबतक, कहाँ, और, ओर।

दश ऐसे अव्ययों का वाक्य में व्यवहार कर भेद दिखलावो जो सम्बन्ध-बोधक और क्रिया-विशेषण दोनों हों।

## शब्द-संगठन ( Word-building )

हिन्दी भाषा में जितने शब्द बोले जाते हैं उनमें अधिकांश चाहे तो शुद्ध संस्कृत हैं चाहे अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं। इनकी व्युत्पत्ति (Derivation) जानना बहुत आवश्यक है।

यौगिक शब्दों के यदि खण्ड किये जाँय तो उनमें दो या तीन खण्ड होंगे। एक उपसर्ग ( Profx ) दूसरा धातु ( Root ) और तीसरा प्रत्यय ( Affix )। कितने यौगिक शब्दों में शब्द और प्रत्यय ही रहते हैं। जैसे, प्र + हृ + अ= प्रहार, सम् + तुष् + क्त=सन्तुष्ट, रम् + अणीय=रमणीय, शक् + क्ति=शक्ति, धन + ई=धनी, पानी + वाला=पानीवाला।

शब्द संगठन में सब से पहले उपसर्ग आते हैं, इससे पहले उपसर्ग का ही विचार किया जाता है।

## उपसर्ग ( Prefix )

उपसर्ग वे कहाते हैं जिनका प्रयोग अलग नहीं होता। संस्कृत से हिन्दी में उपसर्ग लिये गये हैं।

उपसर्ग जब क्रिया और शब्द के साथ आते हैं तब उन क्रियाओं और शब्दों के अर्थ के द्योतक बन जाते हैं। उपसर्गों के योग से शब्दों और क्रियाओं के भिन्न २ अर्थ होते हैं और

कहीं २ उनका अर्थ भी बदल जाता है। जैसे-उपकार, अपकार, प्रतिकार, अभिमान, अपमान, संयोग, वियोग आदि।

उपसर्ग कहीं एक, कहीं दो, कहीं तीन और कहीं चार भी आते हैं। जैसे-विहार, व्यवहार, सुव्यवहार और समभिव्याहार।

प्र, परा, अप्, सम्, अनु, अव, निर, दुर्, अभि, वि, अधि, सु, उत्, अति, नि, प्रति, परि, अपि, उप, आङ् * ये बीस उपसर्ग हैं। ये एक प्रकार के अव्यय हैं।

उपसर्गों के संयोग से उत्पन्न होने वाले कुछ अर्थ नीचे लिखते हैं:—

प्र—अतिशय, गति, व्यवहार आदि का द्योतक है। जैसे, प्रणाम, प्रताप, प्रस्थान, प्रमाण, प्रयोग, इत्यादि।

परा—विपरीत, नाश, अनादर, आदि का द्योतक है। जैसे, पराजय, पराभव, परावर्तन, परास्त इत्यादि।

अप—हीनता, लघुता आदि का द्योतक है। जैसे, अपकार, अपमान, अपवाद, अपशब्द, अपयश इत्यादि।

सम्—उत्तमता, सहित, श्रेष्ठता आदि का द्योतक है। जैसे, सम्प्रदान, संस्कार, सन्तुष्ट, सम्बन्ध, समाधान इत्यादि।

अनु—समान, पश्चात्, क्रम आदि का द्योतक है। जैसे, अनुकरण, अनुचर, अनुताप, अनुक्रम इत्यादि।

अव—अनादर, भ्रंश, हीनता आदि का ही द्योतक है। जैसे, अवज्ञा, अवगुण, अवमानना। यह कहीं अच्छा अर्थ भी देता है। जैसे, अवतार, अवधारण आदि।

---

* प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभिव्यधिसूदतिनिप्रतिपर्यपयः ॥
उप आङिति विंशतिरेष सखे ऊपसर्गविधिः कथितः कविना ॥ २ ॥

निर्—विना, निषेध, आदि का द्योतक है। जैसे, निस्सन्देह, निरवलम्ब, निर्गुण, निर्धन, निराकार, निर्दोष इत्यादि।

दुर्—कठिनता, दुष्टता, निन्दा, हीनता आदि का द्योतक है। जैसे, दुर्जन, दुर्जय, दुर्गम, दुर्दशा, दुर्बुद्धि इत्यादि।

अभि—समीपता, इच्छा आदि का द्योतक है। जैसे, अभिमत, अभिप्राय, अभिमान इत्यादि।

वि—भिन्नता, असादृश्य, विशेषता आदि का द्योतक है। जैसे, वियोग, विलाप, विकार, विलास, विहार विशेष इत्यादि।

अधि—प्रधानता, ऊपरीभाव आदि का द्योतक है। जैसे, अधिकार, अधिपति, अधिराज, अध्यक्ष, इत्यादि।

सु—श्रेष्ठता, उत्तमता, सुगमता आदि का द्योतक है। जैसे, सुजन, सुपुत्र, सुयश, सुभग, सुलभ, सुगम इत्यादि।

उत्—उच्चता, उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे, उदय, उत्पत्ति, उद्गम, उत्पात इत्यादि।

अति—अत्यन्त, उत्कर्ष आदि का द्योतक है। जैसे, अतिकाल, अतिगुप्त, अतिदीन, अतिमात्र, अतिशय इत्यादि।

नि—निषेध, अधिकता आदि का द्योतक है। जैसे, निवारण, निरोध, निषेध, नियोग इत्यादि।

प्रति—प्रत्येक, सादृश्य, विरोध, बदला आदि अर्थ का द्योतक है। जैसे, प्रतिदिन, प्रतिशब्द, प्रतिवादी, प्रत्युत्तर, प्रतिकार, प्रतिषेध प्रतिरोध इत्यादि।

परि—अत्यन्त, सब तरह, निबटेरा, अनादर, विवाह आदि का द्योतक है। जैसे, परिपूर्ण, परितोष, परिजन, परिहार, परिभव, परिणाम, परिणय इत्यादि।

अपि—छिपाना आदि का द्योतक है। जैसे, अपिधान।

उप—समीपता, सहायता, निकृष्टता आदि का द्योतक है। जैसे, उपवन. उपकार, उपग्रह, उपपत्ति, उपभोग इत्यादि।

आ—ग्रहण, चढ़ना, विरोध, खींचना आदि का द्योतक है। जैसे, आदान, आरोहण, आकर्षण इत्यादि।

इतने ही प्रधान उपसर्ग माने गये हैं।

कु, अ. अन, सह, स. सु, नि, आदि भी उपसर्ग ही के समान केवल शब्दों के साथ आते हैं और क्रमशः नीचता. निषेध, सङ्गति आदि के द्योतक होते हैं। जैसे, कुपूत, (कपूत) कुकर्म, कुखेत. कुबुद्धि, अजान, अपवित्र, अनन्त, अनादि, अनपढ़, अनहोनी, सहचर, सहकारी, सविनय, साकार, सुपूत (सपूत) निडर, इत्यादि।

अभ्यास।

नीचे लिखे सोपसर्ग शब्दों के अर्थ बताओ।

आहार, विहार, परिष्कार, परिहार, उपहार, संस्कार, विकार, अवनति, अभिभावक, अनुगामी, अनुरूप, अपरूप, अवहेला, आभोग, उपस्थित, दुर्वाद, दुर्योग, निरूपण, दुर्वाद, निरोध, संग्रह, आग्रह, विग्रह, पराभव, प्रचार, प्रयत्न, प्रतिनिधि, प्रतिकृति, समीचीन, सम्भार, निवेश, परिणाम, विभव, अवस्था, अनुचरण, अनुकरण।

## कृदन्त ( Verbal affixes )

क्रिया प्रकरण में धातु का वर्णन हो चुका है। इस प्रकरण में धातु से होने वाले प्रत्ययों का वर्णन किया जाता है।

धातु के साथ प्रत्ययों के लगाने से जो ऐसे शब्द बनते हैं जिनसे कर्तृत्व आदि समझा जाता है वे कृदन्त कहलाते हैं। जैसे, गवैया, पुकार, बनावट, ढकना इत्यादि।

कितने वैयाकरण कृदन्त को क्रियावाचक शब्द भी कहते हैं, क्योंकि इनसे क्रिया के सदृश ही अर्थ प्रकट होते हैं। जैसे, कतरनी, खवैया आदि। इन शब्दों से कतरने और खाने का क्रियार्थ स्पष्ट झलक जाता है।

हिन्दी में धातु से भिन्न भिन्न प्रत्यय करने पर कई प्रकार के शब्द बनते हैं। जिनमें पाँच मुख्य हैं। कर्तृवाचक, भाववाचक, करणवाचक, विशेषणवाचक और अव्ययवाचक।

## कर्तृवाचक शब्द या धातुज नाम।

कर्तृवाचक से किसी काम का करने वाला समझा जाता है। ऐसे शब्द कई नीचे लिखे प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे—

( क ) धातु के सामान्य रूप के अन्त्य 'आ' का 'ए' करके वाला, हारा प्रत्यय लगाने से—गाना—गानेवाला, गानेहारा; पाना—पानेवाला, पानेहारा।

(ख) धातु से सामान्य रूप के अन्त्य 'आ' को ह्रस्व करके सार, हार प्रत्यय लगाने से—मिलना-मिलनसार, चलना-चलनसार, होना—होनहार, करना—करनहार, पढ़ना-पढ़नहार इत्यादि। वाहा प्रत्यय से भी होता है। जैसे, हलवाहा, चरवाहा।

( ग ) धातु से 'वैया' प्रत्यय करने से—बज-बजवैया, रह-रहवैया। यदि स्वरान्त हो या धातु का आदि स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे, गा-गवैया खा-खवैया, जा-जवैया, दे-दिवैया, जीत-जितवैया।

( घ ) धातु से क्कड़' प्रत्यय करने से—बूझना-बुझक्कड़, खेलना-खेलक्कड़, कूदना-कुदक्कड़। कहीं कहीं अक्कड़ भी होता है। जैसे—पिअक्कड़।

( ङ ) धातु से आऊ और ऊ प्रत्यय करने से—टिक+

आऊ = टिकाऊ, जूझ + आऊ = जुझाऊ, खा + ऊ = खाऊ।

(च) कुछ प्रत्यय और हैं जिन्हें धातु में जोड़ने से कर्तृ-वाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे, खेल + आड़ी=खेलाड़ी, झगड़ + आलू=झगड़ालू, लूट + एरा=लुटेरा, परख + ऐया= परखैया। तैर + आक = तैराक, हँस + ओड़ = हँसोड़, लड़ + आका = लड़ाका, रेत + ई = रेती इत्यादि।

यह कोई नियम नहीं है कि सब धातुओं से ये सब प्रत्यय आकर कृदन्त शब्द बनावें।

हिन्दी में संस्कृत के भी कुछ कृदन्त शब्द आते हैं। वे संस्कृत धातुओं से प्रधानतः नीचे लिखे हुए प्रत्ययों के लगाने से बनते हैं। जैसे—

(क) 'अन' (ल्युट्) प्रत्यय करने से—नन्दन, मदन।

(ख) 'अच्' प्रत्यय करने से—जलद, मधुप, गृहस्थ।

(ग) 'अक' (ण्वुल्) प्रत्यय करने से—नायक, पाचक, पाठक, पूजक, याचक, गणक इत्यादि।

(घ) 'तृन्' और 'तृच्' प्रत्यय करने से—कर्ता, दाता, श्रोता, वक्ता, नेता, भर्ता इत्यादि।

(ङ) 'अण्' प्रत्यय करने से—सूत्रधार, वारिवाह, कुम्भकार, मालाकार, इत्यादि।

(च) 'ट' प्रत्यय करने से—वनचर, खेचर, सुखकर, किङ्कर, दिवाकर, निशाकर इत्यादि।

(छ) 'इनि' ('णिनि' 'घिनुण') प्रत्यय करने से-साधुवादी, दूरदर्शी, कुमार्गगामी, परिश्रमी, त्यागी, इत्यादि।

उपर्युक्त कर्तृवाचक शब्द संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार बनते हैं। उन नियमों का वर्णन करना इस हिन्दी के व्याकरण में अनावश्यक है। उनका यह केवल परिचयमात्र है।

भाववाचक प्रत्यय।

कृदन्तीय भाववाचक शब्द से केवल व्यापार-मात्र का बोध होता है। जैसे.—होना, चढ़ाव, मिलावट सिलाई, बचत देख रेख, खान पान इत्यादि।

नीचे लिखे कृदन्तीय भाववाचक शब्द कई प्रकार के प्रत्यय करने से बनते हैं। जैसे—

(क) धातु के सामान्य रूप से—होना, जाना, करना आदि।

(ख) धातु के सामान्य रूप को ह्रस्व करने से—कुढ़न, लेन, देन, खान, पान, चलन, कतरन आदि।

(ग) शुद्ध धातु से—दौड़-धूप, खोज-ढूंढ़, मार-पीट, कूद-फाँद, चल-फिर, कह-सुन आदि।

(घ) धातु से 'आव' 'आवा' प्रत्यय लगाने से लगाव, बझाव, बचाव, खिंचाव, बढ़ाव, बनाव भुलावा इत्यादि।

(ङ) धातु से 'आ' प्रत्यय करने से—गुजारा, निबटारा, बँटवारा, छापा, छुटकारा, घाटा इत्यादि।

(च) धातु से 'आई' प्रत्यय करने से—लड़ाई, ठगाई सिलाई, मढ़ाई, चढ़ाई, धराई गढ़ाई इत्यादि।

(छ) धातु से यथा स्थान 'वट' 'हट' प्रत्यय करने से—बनावट, चिल्लाहट, गड़गड़ाहट, दिखावट आदि।

(ज) धातु से 'त' जोड़ने पर—बचत, खपत, खटत आदि।

(झ) धातु से 'इ' प्रत्यय करने से—हँसी, ठठोली, बोली, झकझोरी, झँझोटी आदि।

(ञ) अनियमित रूप से धातु में भिन्न २ प्रत्ययों के करने आदि से—घटती, बढ़ती पियास, प्यास, मिलाप, चाल ढाल, लेव देव, बढ़ती, रुलाई, लगान, इत्यादि।

ये सब प्रत्यय भी सब धातुओं से नहीं होते।

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के कुछ भाववाचक कृदन्तीय शब्द संस्कृत धातुओं से नीचे लिखे संस्कृत प्रत्यय करने से बनते हैं। जैसे,

( क ) 'क्ति' प्रत्यय करने से—गति, भक्ति, मति, नीति, गीति, रीति, सम्पत्ति, विभूति इत्यादि।

( ख ) अन (ल्युट्) प्रत्यय करने से—भवन, दान, गमन, कथन, भोजन, कारण शयन इत्यादि।

( ग ) अ ( घञ्, अञ् ) प्रत्यय से—प्रभाव, पाक, भाग, शोक, जय, देव, स्तव, भाव इत्यादि।

( घ अ ( अङ् ) दया, कृपा, क्रिया आदि।

( ङ ) और भी कई भाववाचक प्रत्ययों से—यत्न, विद्या, इत्यादि बने हुए संस्कृत शब्द हिन्दी में आते हैं।

ये सब प्रत्यय भी संस्कृत व्याकरणानुसार नियमित रूप से होते हैं। यहाँ कुछ परिचय मात्र दे दिये गये हैं।

करणवाचक शब्द।

करण अर्थ को बतलाने वाले प्रत्ययों से, अर्थात् जिनसे कर्ता का व्यापार सिद्ध होता है, बने हुए शब्द करणवाचक कहाते हैं। जैसे--कसौटी, कतरनी, छनना आदि।

ये संज्ञायें तीन प्रकार से बनती हैं। कहीं २ धातु का 'सामान्य रूप' ही करणवाचक संज्ञा होती है। जैसे, बेलना, भंग-घोटना ढकना, छनना। कहीं २ 'ना' को 'नी' कर देने से भी ऐसी संज्ञायें बन जाती हैं। जैसे--कतरनी, कुरेलनी, चलनी, खोदनी, मथनी। कहीं धातु से 'आ' प्रत्यय जोड़ने से हो जाती हैं। जैसे, घेरा, झूला।

संस्कृत में 'अच्' 'अन' 'त्र' आदि प्रत्यय करने पर संस्कृत

धातुओं से बने हुए करणवाचक शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, कर, चरण, नयन, शस्त्र, स्तोत्र, पत्र इत्यादि।

विशेषणवाचक शब्द।

धातुओं में जिन प्रत्ययों को जोड़ने से विशेषण बनते हैं ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण-वाचक कहाते हैं। जैसे, गया, बीता, खाता, खाता हुआ इत्यादि।

विशेषणवाचक संज्ञायें दो प्रकार की होती हैं। एक (क) भूतकालिक और दूसरी (ख) वर्तमानकालिक। धातु में 'आ' प्रत्यय करने से भूतकालिक विशेषणवाचक शब्द बनते हैं। जैसे बीत + आ = बीता, पढ़ + आ = पढ़ा। 'गया' वक्त फिर हाथ आता नहीं। 'बीती' ताहि बिसार दे। 'पढ़ा' पाठ भूल गया इत्यादि।

पहले जो सामन्य भूतकाल का वर्णन हो गया है वही इसका रूप है और उसके बनाने के जो नियम हैं वे ही इसके भी। वस्तुतः सामान्य भूत की जो क्रिया है वह एक प्रकार का कृदन्त विशेषण ही है। अतः उनमें लिङ्ग के अनुसार रूप बदलते हैं। जैसे, 'पढ़े लिखे' लोगों को बुलावो। 'जानी सुनी' बात भी कभी भूलने लायक होती है? 'मरे' को मारनो न सूर की बड़ाई है। ये विशेषण ही सामान्य भूत की क्रिया का काम देते हैं। ऐसे ही और भी समझो।

कभी २ यह विशेषण 'हुआ' के साथ भी आता है। जैसे उनका मन मुझ में 'लगा हुआ' है। मन में मन 'मिला हुआ' है।

इसके रूप और कई तरह से प्रयुक्त होते हैं। जैसे, "आन 'संभाले' जान थी जाती, जान 'बचाये' आन थी जाती।" "न आये अगर वह तुम्हारे 'कहे' से तो मिन्नत करो 'घेरे घेरे' मनालो"

इसी प्रत्ययार्थ में संस्कृत धातुओं से 'क्त' प्रत्यय करके बने हुए शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, अनुभूत, पठित, विजित, गत, हृत, शिक्षित, शान्त इत्यादि।

कर्म अर्थ में संस्कृत धातुओं से किये गये 'तव्य' 'अनीय' 'यत्' क्यप्' 'ण्यत्' आदि प्रत्यय भी विशेषण के समान हिन्दी में आते हैं। जैसे, अपना 'कर्तव्य' कर्म करो। 'प्रशंसनीय' पुरुष की प्रशंसा होती ही है। 'अलभ्य' वस्तु के लिये लालच न करो। भोग्य' वस्तुयें भाग्य से ही मिलती हैं। कहीं कहीं इनसे औचित्य आदि भी अर्थ प्रकट होता है। जैसे यह तुम्हारा कार्य अवश्य 'कर्तव्य' है।

( ख ) धातु से 'ता' प्रत्यय करने पर वर्तमान कालिक विशेषण वाचक संज्ञायें बनती हैं। जैसे, बह + ता = बहता, जा + ता = जाता; दौड़ + ता = दौड़ता। 'बहती' नदी पाय 'पखारि लै री'। 'बहता' 'पानी निर्मला'।

हेतुहेतुमद्भूत काल की जो क्रिया पहले कही गयी है वही यह है और उसके सब नियम इसको भी लागू हैं। इनमें विशेषण होने ही के कारण लिङ्ग परिवर्तन होता है। कहीं २ ये संज्ञायें क्रिया का भी काम देती हैं।

भूतकालिक क्रिया विशेषण के समान ही इसमें भी कहीं कहीं हुआ' जोड़ते हैं। जैसे, 'चलती हुई' गाड़ी उलट गयी। 'दौड़ता हुआ' लड़का गिर पड़ा।

इसके रूप और कई तरह से प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

"थक गयी मैं दुख 'सहते सहते' थम गये आँसू 'बहते बहते"
"ऐ नेक और बद के दरवानो, 'देखती' आँखों 'सुनते' कानो"
"'उठते बैठते' रोका सबको 'सोते जागते' टोका सबको"
"दिल न फिरे दुनिया में 'भटकता' कोई रहे काँटा न 'खटकता"

इसी प्रत्ययार्थ में संस्कृत धातुओं से शतृ और शानच् प्रत्यय होते हैं। केवल शानच् प्रत्यय के बने हुए शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, वर्तमान, वर्द्धमान, क्रियमाण।

क्या भूतकालिक विशेषणवाचक संज्ञायें हों या वर्तमान-कालिक, जब इनके द्वित्व एकारान्त प्रयोग होते हैं तब ये अव्यय से हो जाते हैं। क्योंकि इनका परिवर्तन किसी लिङ्ग में नहीं होता। जैसे, मैं 'बैठे बैठे' घबड़ा गया। लड़की 'सोये सोये' चिल्ला उठी। लड़का 'दौड़ते दौड़ते' थक गया। लड़की 'रोते रोते' सो गयी।

क्रियावाचक अव्यय।

धातुओं में कितने कृदन्तीय प्रत्यय ऐसे होते हैं जो सदा एक-रूप रहते हैं। ऐसे प्रत्ययों से बने हुए शब्द क्रियावाचक अव्यय कहे जाते हैं। जैसे, चाहिए, मिलियो, खाइयेगा, कीजिये, करके, खा पी कर इत्यादि।

आदर तथा परोक्ष विधि की जो क्रियायें पहले कही जा चुकी हैं वे इये, इयो इयेगा आदि प्रत्ययों ही के करने से बनती हैं। जैसे, मिल + इये = मिलिये, घबरा + इयो-घबराइयो, पछता + इयेगा =पछताइयेगा इत्यादि। ये भी अव्यय ही से व्यवहृत होते हैं।

कुछ धातुओं के ये रूप अनियमित रूप से बनते हैं। जैसे, दीजिये, दीजे, दीजो, पीजिये, पीजो।

अनन्तर अर्थ में के, करके, कर आदि जो प्रत्यय होते हैं वे भी अव्ययार्थक हैं। जैसे मैं खा 'के' खा 'करके' खा 'कर' पढ़ता हूँ। कहीं २ ये लुप्तावस्था में भी रहते हैं और धातु ही इनका अर्थ देता है। जैसे, वे उनसे मिले और कुशल 'पूछ' चले गये। कहीं कहीं भिन्न रूप से भी यह आता है। जैसे, काहे मन 'मारे' खड़ी गोरी अँगना, इसमें 'मारे' मारकर

इस अर्थ में आया है। यह भूत-कालिक विशेषण हो नहीं सकता। क्योंकि ऐसा होता तो उसका लिङ्ग-परिवर्तन अवश्य होता। संस्कृत में इनके स्थान पर 'क्त्वा', "ल्यप्" प्रत्यय आते हैं। वे भी अव्यय होते हैं।

## अभ्यास।

• कृदन्त किसे कहते हैं? कृदन्त के कितने भेद हैं? कर्तृवाचक संज्ञा का क्या लक्षण है? कितने प्रकार से हिन्दी में और कितने प्रकार से संस्कृत में कौन २ प्रत्यय करने से कर्तृवाचक संज्ञायें बनती हैं? भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं। हिन्दी में और संस्कृत में भाववाचक संज्ञायें कौन २ प्रत्यय करने से बनती हैं? करणवाचक संज्ञा किसे कहते हैं? करणवाचक संज्ञायें किस २ प्रकार से बनती हैं? विशेषण-वाचक संज्ञा के कै भेद हैं? प्रत्येक की बनावट कैसे होती है? दोनों में अन्तर क्या है? इनके कितने प्रकार से प्रयोग किये जा सकते हैं? क्रियावाचक अव्यय किसे कहते हैं? ये कै प्रकार के हैं? क्रियावाचक अव्ययों का वाक्य में कैसे व्यवहार होता है?

नीचे लिखे वाक्यों में किस २ प्रकार के कृदन्त शब्द आये हैं और उनके नाम, भेद और बनावट क्या है? बतावो—

पढ़ना लिखना सब को नहीं भाता। बतकड़ आदमी को झूठ मूठ बातें बनाना ही अच्छा लगता है। कर्ता के कर्तव्य की थाह पानेवाला कौन है? परिश्रमी मनुष्य किसी का किङ्कर होना नहीं चाहते। अपने शरीर की सजावट, खेल-कूद, गाली-गलौज में अपनी जिन्दगी बिताना अच्छा नहीं है। विद्याभ्यास करके यत्नपूर्वक अपनी गतिमति का प्रभाव सब पर डालना चाहिये। आजकल कागज की कटत में पैसे खूब आते हैं। गुरुजी से कह दीजियो कि रोते रोते लकड़ा सो न जाय। कहता कितना ही हूँ पर वह सुनने वाला नहीं। सुनी अनसुनी करने वाला लड़का बड़ा दुष्ट होता है। मेरा सँभाला वह न सँभला। आते ही आते काम तमाम हो गया। वह सिस-कती और मुझे देख खिसकती चली गई। पढ़ लिखकर पण्डित हो जाइयो। मेरा काम मत भूलियेगा।

## तद्धित ( Nominal Affixes )

शब्दों के साथ प्रत्ययों के लगाने से जो भिन्न २ शब्द बनते हैं वे तद्धित कहाते हैं।

तद्धित प्रत्यय अनगिनत हैं और उनसे बनने वाले शब्द भी अनगिनत। उनमें जो मुख्य और हिन्दी में व्यवहृत होते हैं वे लिखे जाते हैं।

तद्धित प्रत्यों से बने हुए शब्द कई भागों में बँटे हुए हैं। जैसे, कर्तृवाचक, गुणवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, अव्यय-वाचक, पूरणार्थक, सादृश्य-सूचक, आदरार्थक, निश्चयार्थक इत्यादि। जैसे, टोपी+वाला–टोपीवाला, इतिहास+इक–ऐतिहासिक, साधु+ता–साधुता, लम्बा+आई–लम्बाई, लोटा+इया–लोटिया इत्यादि।

### १ कर्तृवाचक शब्द।

कृदन्तीय कर्तृवाचक के समान तद्धितीय कर्तृवाचक शब्द से खासकर किसी क्रिया के व्यापार करने वाले का बोध नहीं होता। सामान्यतः वह उस पदार्थ का सन्बन्धी वा रखनेवाला ही आदि समझा जाता है जैसा कि नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट है।

कर्तृवाचक तद्धितान्त शब्द नीचे लिखे कई प्रत्ययों के जोड़ने से बनते हैं। जैसेः—

[क] 'ई' प्रत्यय से—बिहारी, बंगाल. तेली, दफ़्तरी आदि।
[ख] 'वाला' प्रत्य करने से—दूधवाला, मक्खनवाला आदि।
[ग] 'हारा' प्रत्यय से—चुड़िहारा. लकड़िहारा, पनिहारा आदि।
[घ] 'इया' प्रत्यय से-अढ़तिया, मखनिया, नोनिया आदि।
[ङ] 'गार' प्रत्यय से—खिदमतगार, पर्हेजगार आदि।
[च] 'ची' प्रत्यय से—खजानची, तबलची, मशालची आदि।

[छ] 'वाहा' प्रत्यय से—हलवाहा, कुदरवाहा, चरवाहा आदि।
[ज] 'ड़ी' प्रत्यय से—भँगेड़ी, गँजेड़ी,जुआड़ी खेलाड़ी आदि।
[झ] 'र' प्रत्यय से—सुनार, लुहार, चमार, कुम्हार आदि।
[ञ] 'रा' प्रत्यय से—कसेरा, ठठेरा, लुटेरा, सपेरा आदि।
[ट] 'री' प्रत्यय से—जुआरी पुजारी, कोठारी, भिखारी आदि।
[ठ] और भी भिन्न २ प्रत्ययों से बने हुए कई कर्तृवाचक तद्धितान्त शब्द हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। जैसे लठैत, मछुआ, चुनौटी, गयवाल, कारीगर कठघरा आदि।

## २ गुणवाचक शब्द।

नीचे लिखे प्रत्ययों के जोड़ने से गुणवाचक तद्धितान्त शब्द बनते हैं। जैसेः—

[क] 'आ' प्रत्यय से—ठण्ढा, भूखा, मैला, कुबड़ा, आदि।
[ख] 'ऊ' प्रत्यय से—घराऊ, धराऊ, टिकाऊ, बाजारू आदि।
[ग] 'हरा' प्रत्यय से—एकहरा, दोहरा, तिहरा आदि।
[घ] 'ऐल' प्रत्यय से—खपड़ैल, बिगडैल, मुछैल आदि।
[ङ] 'ला' प्रत्यय से—अगला, पिछला, मझला, पहला आदि।
[च] 'वन्त' प्रत्यय से—कुलवन्त, शीलवन्त, धनवन्त आदि।
[छ] 'इया' प्रत्यय से—लटपटिया,खटपटिया चटपटिया आदि।
[ज] 'ईला' प्रत्यय से—सजीला, गँठीला, चटकीला आदि।
[झ] 'ऐला' प्रत्यय से—बनैला, धुमैला, घरैला आदि।
[ञ] 'गुना' प्रत्यय से—दुगुना, तिगुना, दशगुना आदि।

कुछ उर्दू ढंग के प्रत्ययों से विशेषण वाचक तद्धितान्त शब्द बनते हैं जो हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। जैसेः—

[क] 'नाक' प्रत्यय से—दर्दनाक, खौफनाक, खतरनाक।
[ख] 'मन्द' प्रत्यय से—अक़्लमन्द, दौलतमन्द, फायदेमन्द।
[ग] 'वर' प्रत्यय से—ताक़तवर, ज़ोरावर, किस्मतवर।

[घ] 'वार' प्रत्यय से-पैदावार, सज़ावार, उम्मीदवार।
[ङ] 'सार' प्रत्यय से-चलनसार, मिलनसार, खाकसार।
[च] और भी बहुत से ऐसे प्रत्यय हैं जिनसे ऐसे शब्द बनते हैं। जैसेः—वान मिहरबान, गर-जादूगर, गार—मददगार, दार-मजेदार, दाज—तीरन्दाज, बाज-दगाबाज, गीन-गमगीन, वगैरह।

गुणवाचक तद्धितान्त संस्कृत शब्द भी हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। वे नीचे लिखे हुए प्रत्ययों से बनते हैं। जैसेः—
[क] 'मान्' [मत्] प्रत्यय से-श्रीमान्, मतिमान्, बुद्धिमान् आदि।
[ख] * 'वान' [वत्] प्रत्ययसे-धनवान्, ज्ञानवान् गुणवान आदि।
[ग] 'वी [विन] प्रत्यय से—यशस्वी, तेजस्वी, मायावी आदि।
[घ] ई' प्रत्यय से—धनी, गुणी मानी, विद्यार्थी आदि।
[ङ] 'आलु' प्रत्यय से—दयालु, कृपालु, शीतालु, आदि।
[च] 'इत्' प्रत्यय से—दुःखित अङ्कुरित, पुलकित आदि।
[छ] 'तर तम' प्रत्ययों से—गुरुतर गुरुतम, लघुतर लघुतम।
[ज] 'इष्ठ' प्रत्यय से—ज्येष्ठ, कनिष्ठ, श्रेष्ठ आदि।
[झ] † ईय' प्रत्यय से—भारतीय, स्वर्गीय, समुद्रीय आदि।
[ञ] 'इक' प्रत्यय से—धार्मिक, सामाजिक नैतिक आदि।
[ट] 'अण' प्रत्यय से—शैव, मानस, सौवर्ण, यादव आदि।

ऊपर लिखे हुए प्रत्यय संस्कृत व्याकरण के अनुसार यथा योग्य होते हैं। इनका विशिष्ट वर्णन यहाँ अनावश्यक है।

* मान्, वान् दोनों में एक ही मत् प्रत्यय है। नियामानुसार कहीं म व हो जाता है और कहीं वही रह जाता है। हिन्दी में उन्हें कोई सस्वर भी लिखते हैं पर हलन्त ही लिखना ठीक है।

† नीचे लिखे हुए ये तीनों प्रत्यय कई अर्थों में होते हैं।

## ३ भाववाचक शब्द।

नीचे लिखे प्रत्ययों के जोड़ने से भाववाचक तद्धितान्त शब्द बनते हैं। जैसेः—

[क] 'आ' प्रत्यय से-बहलावा, भुलावा, बुलावा आदि।
[ख] 'आना' प्रत्यय से-ठिकाना, पैताना, सिरहाना आदि।
[ग] 'इत' प्रत्यय से-अपनाइत, तिसराइत, पञ्चाइत आदि।
[घ] 'आई' प्रत्यय से-चौड़ाई, लम्बाई, भलाई, आदि।
[ङ] 'ट' प्रत्यय से—बनावट, सजावट, दिखावट आदि।
[च] 'हट' प्रत्यय से—चिकनाहट, कडुआहट, रुखराहट, आदि।
[छ] 'पन' प्रत्यय से—लड़कपन, अल्हड़पन, रुखड़ापन आदि।
[ज] 'त' प्रत्यय से—चाहत, मिल्लत, रंगत, संगत आदि।
[झ] 'पा' प्रत्यय से—बुढ़ापा, रँडापा, सुघड़ापा आदि।
[ञ] 'रा' प्रत्यय से—छुटकारा, निबटारा, बटवारा आदि।
[ट] 'स' प्रत्यय से--खटास, मिठास, उचास आदि
[ठ] 'गी' प्रत्यय से—जिन्दगी, रंजगी, ताजगी, उम्दगी आदि।
[ड] और भी भाववाचक शब्द कई प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे, कनैठी, बैठक, मिलाप, कसर आदि।

भाववाचक तद्धितान्त संस्कृत शब्द भी हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। वे नीचे लिखे प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे—

[क] 'अ' [ षण् ] प्रत्यय से—गौरव, शैशव, लाघव आदि।
[ख] 'य' [ ष्यण् ] प्रत्य से—धैर्य्य, माधुर्य्य, शैत्य आदि।
[ग] 'ता' प्रत्यय से—पटुता, प्रभुता, गुरुता आदि।
[घ] 'इमन्' प्रत्यय से—महिमा, लघिमा, गरिमा आदि।
[ङ] 'त्व' प्रत्यय से—प्रभुत्व, गुरुत्व, महत्त्व आदि।

## ४ ऊनवाचक शब्द।

नीचे लिखे प्रत्ययों के जोड़ने से ऊनवाचक तद्धितान्त शब्द बनते हैं। जैसे--

[क] 'आ' 'वा' 'या' प्रत्यय करने से-बबुआ, बचवा, घोड़िया।
[ख] 'टी' प्रत्यय से-चुनौटी, बहूटी, हथौटी, लंगौटी आदि।
[ग] 'री' प्रत्यय से—कोठरी, छतरी, ठठरी, गठरी आदि।
[घ] 'डी' प्रत्यय से—पलंगड़ी, पंखड़ी, टंगड़ी, खलड़ी आदि।
[ङ] 'आ' को 'ई' करनेसे-रस्सी, गोली, टोकरी, डाली आदि।

## ५ अव्ययवाचक शब्द।

नीचे लिखे प्रत्ययों से अव्ययवाचक शब्द बनते हैं। जैसे:—

[क] 'तना' प्रत्यय से—जितना, तितना, उतना, इतना आदि।
[ख] 'तक' प्रत्य से--दूरतक, शामतक, देरतक आदि।
[ग] 'ओं' प्रत्यय से—कोसों, घड़ियों, घंटों, ज्यों, क्यों आदि।
(घ) 'ब' प्रत्यय से अब, कब, जब, तब आदि।
(ङ) 'भर' प्रत्यय से—रातभर, दिनभर, मनभर आदि।
(च) 'सों' प्रत्यय से—परसों, तरसों, नरसों आदि।

अव्ययवाचक तद्धितान्त संस्कृत शब्द भी हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। वे नीचे लिखे प्रत्ययों से बनते हैं। जैसे:—

(क) 'था' प्रत्यय से—यथा, तथा, सर्वथा, अन्यथा आदि।
(ख) 'त्र' प्रत्यय से—सर्वत्र, एकत्र, अन्यत्र, तत्र आदि।
(ग) 'दा' प्रत्यय से—सर्वदा, सदा, कदा ( चित् ) एकदा।
(घ) 'त' ( तसिल् ) प्रत्यय से-प्रथमतः विशेषतः साधारणतः।
(ङ) 'श' ( शस् ) प्रत्यय से—शतशः, सहस्रशः क्रमशः।
(च) 'धा' प्रत्यय से—बहुधा, द्विधा, एकधा आदि।

## ६ पूरणार्थक शब्द।

'वाँ' प्रत्यय से 'नवाँ' दशवाँ ग्यारहवाँ, आदि शब्द बनते हैं। पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, (ठा) छठाँ आदि शब्द अनियमित रूप से बनते हैं। संस्कृत में म, तीय, थ प्रत्यय करने से पञ्चम, सप्तम, नवम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ आदि पूरणार्थक शब्द बनते हैं।

## ७ सादृश्यार्थक शब्द।

'सा' 'हरा' आदि 'सादृश्यार्थक' प्रत्यय हैं। जैसे, आगसा, हमसा, वैसा, कैसा, कालासा, मुझसा, राजासा, सोनहरा (हुला), रुपहरा (हुला) इत्यादि।

आदरार्थक 'जी' प्रत्यय से-बाबूजी, गुरुजी, भाईजी आदि।

निश्चयार्थक 'ही' प्रत्यय से—वही, घर ही, कभी, तभी।

हिन्दी में हजारों तद्धित प्रत्यय हैं जिनसे बने हुए एक, दो, चार, पाँच, शब्द व्यवहार में आते जाते हैं। यहाँ विशेषतः व्यवहृत होने वाले नाममात्र के उदाहरण और उनकी बनावट का आभास मात्र दे दिया गया है। इन शब्दों की रचना के सम्बन्ध में भिन्न २ हिन्दी के वैयाकरणों के मत भिन्न २ हैं। उनकी वे भिन्नतायें शब्दगत और प्रत्ययगत हैं।

संस्कृत के भी अन्यान्य और भी सैकड़ों 'तद्धितान्त शब्द' हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। उनका भी थोड़ा ही दिग्दर्शन मात्र कर दिया गया है।

### अभ्यास।

तद्धित किसे कहते हैं? कृदन्त और तद्धित में क्या भेद है? तद्धित के प्रधानतः कितने भेद हैं? कर्तृवाचक तद्धितान्त शब्द बनाने के मुख्य २ कौन २ प्रत्यय हैं। किन २ मुख्य प्रत्ययों से हिन्दी-संस्कृत के तद्धितान्त गुणवाचक शब्द बनते हैं?

उर्दू ढंग के मुख्य कौन २ गुणवाचक तद्धित प्रत्यय हैं? हिन्दी और संस्कृत में कितने भाववाचक मुख्य तद्धित प्रत्यय हैं? किन मुख्य हिन्दी और संस्कृत के प्रत्ययों से अव्ययवाचक शब्द बनते हैं? ऊनवाचक मुख्य तद्धित प्रत्यय कितने हैं? सादृश्यार्थक और निश्चयार्थक तद्धित प्रत्यय कौन हैं और उनसे कैसे तद्धितान्त शब्द बनते हैं?

नीचे लिखे वाक्यों में कौन २ तद्धितान्त शब्द हैं और वे किस भेद के हैं और कैसे बने हैं, बतलाओ।

हलवाहे दोपहर की कड़ी गर्मी में हल जोतते हैं। लकड़हारा काठ का गट्ठर लिये हुए दिन भर बेंचता फिरता है। लठैतों के लट्ठ बड़े टिकाऊ होते हैं। फायदेमन्द दवा देह में दुगुना बल ला देती है। खपड़ैले मकान कठिनता से बरसात में नीचू रहते हैं। चलनसार सिक्के बाजारू होते हैं। भारतीय क्या धनी हों और क्या गरीब, अपने धार्मिक कर्तव्यों के पालन में स्वर्गीय सुख अनुभव करते हैं। गौवाला मक्खनियों के हाथ दूध बेंचता है। बड़ों का बड़प्पन मिल्लत में और विनय में ही दीख पड़ता है न कि गुरुता और महत्व प्रकट करने में। बबुआ कोठरी में पलँगड़ी पर गोली ढवराता है। विद्यार्थी को मेहनती, जोरावर, शीलवन्त होकर सब के साथ लघुता दिखलानी चाहिये। अल्हड़पन उनके लिये अच्छा नहीं है।

## समास (Compound words)

**जब कभी दो या दो से अधिक शब्द आपस में मिल जाते हैं तब उसे समास कहते हैं। समास से उत्पन्न शब्द को 'समस्त' अर्थात् समासयुक्त शब्द कहते हैं। समस्त शब्द एक हो जाता है। जैसे, प्रेमसागर, पीताम्बर आदि।**

**जिन शब्दों में परस्पर सम्बन्ध रहता है उन्हींमें समास होता है। एकत्र सम्बद्ध शब्दों में से दो चार छोड़ दिये जाँय और शेष शब्दों के साथ समास हो, ऐसा हो नहीं सकता और न सम्बद्ध शब्दों के भीतर किसी अन्य शब्द का सम्बन्ध ही हो सकता है। समस्त शब्द स्वतन्त्र एक पद बन जाता है।**

समस्त शब्द के अन्त में ही वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती हैं। अन्यान्य शब्दों के साथ जो विभक्तियाँ रहती हैं उनका लोप हो जाता है, पर समास में उनका अर्थ होता है। जैसे, प्रेमसागर। इसका अर्थ है प्रेम का सागर। प्रेम-सागर में 'का' का लोप हो गया है पर उसका अर्थ होता है।

हिन्दी बोल-चाल के अनुसार समास करने पर शब्दों में कुछ उलट फेर भी हो जाता है। जैसे, खाट का छप्पर = खट-छप्पर, घोड़े का सवार=घुड़सवार, आपस में देखना=देखा-देखी, चार बीस=चौबीस, इत्यादि।

समास प्रधानतः चार प्रकार के होते हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व। तत्पुरुष का एक भेद कर्मधारय और 'कर्मधारय' का एक भेद द्विगु होता है। तत्पुरुष का एक भेद 'नञ् समास' भी है। ये ही सात समास हिन्दी में अधिकतर दीख पड़ते हैं।

### १ अव्ययीभाव।

अव्ययों के साथ किसी संज्ञा का जो समास होता है वह अव्ययीभाव समास कहाता है। जैसे, यथा + शक्ति=यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार) प्रति + दिन=प्रतिदिन ( दिन दिन )। अनु + रूप=अनुरूप ( रूप के सदृश )। स + मूल=समूल ( मूल के सहित )। निर् + भय=निर्भय ( भयरहित )। अति + काल=अतिकाल ( काल बिताकर )। रोज + रोज़=हररोज़, ( दिन दिन )।

जब दो शब्द मिल कर एक हो जाँय, अर्थात् उनका रूप विभक्तियों में न बदले तब ऐसे समास को अव्ययीभाव कहते हैं। जैसे-हाथोंहाथ। (शर्म्माजी का हिन्दी व्याकरणसार)

२ तत्पुरुष।

जिसमें उत्तरपद प्रधान हो और विभक्ति का अर्थ लेकर पद परस्पर संयुक्त हों वह तत्पुरुष समास है। जैसे, कर्म से हीन=कर्महीन, हिम का आलय=हिमालय, बाजुओं के बन्द=बाजूबन्द, काठ का फोड़वा=कठफोड़वा, मुँह का चोर=मुँह-चोर, पानी का शाला=पनशाला ( पानीयशाला )। शरण में आगत=शरणगत, आने पर बीती=आपबीती, इत्यादि। ऐसी ही चिड़ीमार, लखपती, देशनिकाला, घुड़सवार, प्रेममगन आदि शब्द बनते हैं।

बहुतेरे धातुओं का भी संज्ञा के साथ तत्पुरुष समास देखा जाता है। जैसे, दम को भरना=दम भरना, भूख से मरना=भूख मरना, ध्यान का करना=ध्यान करना, समझ में पड़ना=समझ पड़ना, खयाल में आना=खयाल आना आदि।

३ बहुव्रीहि।

समास करने पर जिसमें अन्य पद की प्रधानता हो वह बहुव्रीहि समास है। इस समास में जो शब्द का किसी न किसी रूप में प्रयोग होता है। जैसे, पीत हो अम्बर जिसका वह—पीताम्बर। किया है कर्म जिसने वह—कृतकर्मा। चार हैं भुजायें जिसकी वह—चतुर्भुज। एक है रंग जिसका वह एकरंगा। दो हैं रंग जिसके वह—दुरंगा। जिसके मुँह में जोर है वह—मुँहजोर। मीठा है बोल जिसका वह–मिठबोलिया। सात हैं साल जिसके वह– सतसाला।

अन्य पद की प्रधानता होने से बहुव्रीहि समास वाले पद प्रायः विशेषण ही होते हैं और उनमें विशेष्य के लिङ्ग वचन आते हैं। जैसे, 'पीताम्बर' भगवान् कहाते हैं। 'नारायण' 'चतुर्भुज' हैं। 'एकरंगा' कपड़ा लाल होता है। बातें 'दुरंगी'

छोड़ दो 'एकरंग हो जावो'। वह लड़का बड़ा 'मुँहजोर' है। 'मिठबोलिया' लड़का प्यारा होता है। खेत का 'सतसाला' बन्दोबस्त है।

४ द्वन्द्व।

जिसमें सब पदों की प्रधानता हो वह द्वन्द्व समास है। जैसे, दाल-भात, मां-बाप, रात-दिन, अन्न-जल कन्द-मूल-फल, रंग-रूप, लेन-देन, खुशी-राजी, आदि। इन सबों के बीच का 'और' अव्यय लुप्त है।

हिन्दी लिखने में जब कभी यह समास होता है तो केवल उनमें विभक्ति का ही लोप हो जाता है। जैसे, मैंने उसे लातों से मुक्कों से और घूसों से खूब पीटा। समास करने पर इस वाक्य का यह रूप हो जाता है। जैसे मैंने उसे लातों मुक्कों घूसों से पीटा। कभी २ बहुबचन के चिन्ह का भी लोप हो जाता है। जैसे, बारात में 'हाथी-घोड़ों' की कुछ गिनती नहीं थी। इसमें 'हाथियों की घोड़ों की' स्थान पर 'हाथी घोड़ों की' का प्रयोग हुआ है।

द्वन्द्व समास में ये सब रूप अनियमित रूप से बनते हैं। जैसे, हाथापाई, गालागाली, नोचानोची, छीनाछोरी, एकाएक, बार-बार, नखसिख, पहले पहल। इनमें आदि के चार संज्ञा की भाँति और अन्त के चार अव्यय के से वाक्य में व्यवहृत होते हैं।

अव्ययीभाव में पूर्व पद की, तत्पुरुष में उत्तर पद की, बहुब्रीहि में अन्य पुरुष की, द्वन्द्व में पूर्व और उत्तर दोनों पदों की प्रधानता रहती है।

५ कर्मधारय।

जहाँ विशेष्य विशेषण का और उपमान उपमेय का समास

हो वहाँ कर्मधारय होता है। जैसे नील+कमल=नीलकमल, सत्+जन=सज्जन, घन सा श्याम=घनश्याम, चन्द्र सा मुख=चन्द्रमुख। ये उदाहरण संस्कृत के हैं।

हिन्दी में कर्मधारय समास का प्रायः उदाहरण नहीं मिलता। क्योंकि, विशेषण और विशेष्य में विग्रह वाक्य का कुछ भी भेद नहीं मालूम होता। संस्कृत में विशेषण में विभक्ति रहती है जिसका लोप हो जाता है और हिन्दी में विभक्ति ही नहीं रहती। हो सकता है कि कर्मधारय समास के कारण ही विशेषण की विभक्ति सदा लुप्त रहती हो।

६ द्विगु।

संख्यावाचक विशेषण के साथ जो समास होता है उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे, पाँच+तत्त्व=पञ्चतत्व, तीन+भुवन=त्रिभुवन, चार+वर्ण=चतुर्वर्ण। यह समास बहुधा समाहार (समूह) अर्थ में होता है।

द्विगु समास से बहुत से पद अनियमित रूप से बनते हैं। जैसे, चौहद्दी, पचीस (पाँच और बीस) चौमुहानी, दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी, छदमची, तिपाई, चौपाई, तिर्सठ (तीन और साठ). चौदश, अठवाकर, आदि।

बहुव्रीहि समास के दिये हुए उदाहरण पीताम्बर और चतुर्भुज के जब पीला कपड़ा और चार भुजायें ये अर्थ होते हैं तो पिताम्बर में कर्मधारय और चतुर्भुज में द्विगु समास समझे जायँगे।

७ नञ्।

निषेधवाजक 'न' के अर्थ में जो समास होता है वह नञ् समास कहाता है। जैसे, अशेष, अनपढ़, निडर, अनीश्वर आदि।

संस्कृत के नियमों के अनुसार स्वर परे रहने से न का

'अन्' और व्यञ्जन परे रहने से न का 'अ' हो जाता है। जैसे, अनन्त, अनादि, अलौकिक, अधर्म आदि।

हिन्दी बोल-चाल में अनियमित रूप से कहीं न का 'अ' कहीं 'अन' कहीं 'नि' कहीं 'बे' और कहीं 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे, अपवित्र, अछूता, अनसूँघा, अनपढ़, अनादर, निकम्मा, निडर, निधड़क, बेकार, बेखबर, नाखुश, नाराज आदि।

## अन्यान्य सामासिक विषय।

सब समास या तो संज्ञा का संज्ञा के साथ, जैसे—देवघर, राम-नाम आदि; या तो कहीं संज्ञा का धातु के साथ जैसे—मुँहतोड़, कनफोड़ आदि; या तो धातु का धातु के साथ, जैसे—खा जा, कर ले (सब संयुक्त क्रियायें) आदि; या तो अव्यय का शब्द के साथ, जैसे—प्रतिदिन, यथाशक्ति आदि होते हैं। इस भेद से भी समास चार प्रकार के हुए।

संस्कृत के विशिष्ट नियमों से बने हुए कुछ संस्कृत समासान्त शब्द हैं जो हिन्दी में व्यवहृत होते हैं। वे ये हैं:—

नेत्रपथ, असत्पथ, चतुष्पथ, कदुष्ण, कदन्न, कापुरुष, कुपथ, सुगन्धि, सादर, सहोदर, सगोत्र, सजाति, मद्रचित तद्वाक्य, आत्मदोष, राजदण्ड, पुरुषोत्तम, नराधम; पुरुषसिंह, नरश्रेष्ठ, वीरकेशरी, दर्शनमात्र, सिंहोपम, जीवन्मुक्त, सद्योजात, अद्यावधि, मृत्युपर्य्यन्त, आद्यन्त अश्रुतपूर्व, आबालवृद्ध, नष्टप्राय, अर्द्धोदय, कोशार्द्ध, प्रणयकोप, यावज्जीवन, दम्पति, प्रत्यक्ष, परोक्ष, समक्ष, देवराज, राजर्षि महादेव, अहर्निश इत्यादि।

समास के सदृश द्विरुक्त शब्द भी होते हैं। कभी इनके रूप एक से होते हैं और कभी विकृत। जैसे, 'चोर-चोर'

मौसेरा भाई। 'ठठेरे ठठेरे' बदलई। घर-धर, देख-देख, भात-बात, दाल-बाल, दूध-ऊध, इत्यादि।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों में समस्त शब्दों के नाम और अर्थ बताओ।

राजपुरुष अपने अनुचरों का अनादर नहीं करते। महाराज शरणागतों को अभयदान देते हैं। धनहीनों को यथासम्भव अन्न-दान करना चाहिये। कार्यारम्भ कर हताश और अधीर होना महापुरुषों का लक्षण नहीं है। राम-जानकी गृहत्यागी होकर, निराश्रय बन-बन मारे फिरते हैं। त्रिभुवन में परमेश्वर से बढ़ कर कोई नहीं है। अभागों को हाथ-पैर हिलाना भी अच्छा नहीं लगता। पुस्तकावलोकन से समय का सदुपयोग होता है। संसार-चक्र-परिचालक, सृष्टि-रचना-चतुर, दयासागर भगवान की अपार दया का पारावार नहीं है।

## विभक्तियों के प्रयोग।

### प्रथम कारक।

(१) नीचे लिखी अवस्थाओं में प्रथम कारक का शून्य चिन्ह आता है। जैसेः—

(क) संज्ञा के केवल अर्थ-मात्र में—राम, पण्डित, ऊँचा।

(ख) संख्या और परिणाम अर्थ में—सेरभर चावल, दो हाथ गहरा, थोड़ा, एक, दो, बहुत।

(ग) उक्त कर्ता में—'लड़के' पढ़ते हैं। 'लड़कियाँ' गाती हैं। तुम्हारा 'आना' मुझे खटकता है। 'हम पुस्तक पढ़ते हैं। 'समझ कर पढ़ना' अच्छा है।

(घ) उक्त कर्म में—मैंने 'पेड़े' उड़ाये। लड़के ने 'जलेबी' खायी। रावण से 'सीता' रखी गयी। वामन से 'बलि' छला गया। उनसे 'मैं' देखा गया।

(ङ) अनुक्त कर्म में—तुम मेरी 'बात' मान लो। 'कहना'

सुन लो। मैं एक 'घोड़ा' खरीद लाया हूँ। मुझे 'दर्शन' होने दो।

(च) उद्देश्य-विधेय-भाव में—ज्ञान उत्तम 'धन' है। लोहा 'धातु' है। विद्या 'बल' है।

(छ) विधेय-विशेषण में—मैंने तुम्हें 'दानी' समझा था। हृदय 'पत्थर' हो गया किसी को 'अपना' * और किसी को 'पराया' समझना अनुदारता हैं।

(ज) द्विकर्मक क्रिया के प्रधान कर्म में—राजा ने ब्राह्मण को 'दान' दिया। मैंने ब्राह्मण को 'भोजन' कराया।

(झ) सम्बोधन में—'बेटा' तू ने क्या किया?

(ञ) कभी २ क्रियाविवेषण में—हो चुका 'भला' छोड़ भी तो दो। न आया 'अच्छा' ही हुआ।

(२) नीचे लिखी अवस्थाओं में कर्ता का 'ने' † चिन्ह आता है। जैसे:—

(क) बकना, बोलना, भूलना और जनना धातुओं को छोड़ सकर्मक सभी धातुओं के सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतों में—राम ने पाठ पढ़ा, पढ़ा है, पढ़ा था, पढ़ा होगा, इत्यादि।

(ख) डालना वा देना धातु के पूर्व अकर्मक वा सकर्मक कोई धातु रहे तो पूर्वोक्त भूतकालों में—उसने रातभर जाग डाला, वा सारा ग्रन्थ देख डाला या जाग दिया, इत्यादि।

(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास)

---

* अनुक्त कर्म में 'को' आने पर आकारान्त विधेय-विशेषण सदा एकवचन पुल्लिङ्ग ही रहता है। जैसे, हमको 'ठंढा' होने दो। कभी कभी विशेष्य के अनुसार हेर-फेर भी होता है। जैसे, 'लाठी को' सीधो कर दो।

† 'ने' को भी अनुक्त कर्ता में 'से' के समान ही बहुत वैयाकरण मानते हैं।

(ग) सोचना और समझना धातु के पूर्वोक्त भूतकालों में विकल्प से—वह यह बात 'सोचा' या उसने यह बात 'सोची'। हम तुम्हारी बात नहीं समझे या हमने तुम्हारी बात नहीं समझी। (पं० केशवराम भट्ट)

(घ) हँस देना, रो देना, मुस्करा देना में—तू ने उसे देख कर क्यों मुस्करा दिया? उसकी बात पर मोहन ने हँस दिया। मुकद्दर ने रो रो दिया हाथ मलकर। *

(पं० केशवराम भट्ट)

(●३) नीचे लिखी अवस्थाओं में अपवाद रूप से 'ने' चिन्ह नहीं आता। जैसेः—

(क) बकना, बोलना, भूलना, लाना और जनना धातु के योग में—वह अल्ल बल्ल बहुत बका। वह बोला कि आप झूठे हैं। वह सब काम धाम भूला। लड़कियाँ खिलौने लायीं। बकरी तीन बच्चे जनी, इत्यादि।

(ख) जाना चुकना और सकना जिनके अन्त में हों ऐसे संयुक्त धातुओं में—वह खा गया। मैं ले चुका। तू कर न सका।

(ग) जिस संयुक्त धातु के अन्त में करना हो उसमें—वह रातभर बैठे २ पढ़ा किया। वह चित्र सी चुप चाप खड़ी सुना की।

(घ) पौनः पुन्य अर्थ जताने वाले संयुक्त धातु में—
वह तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूल गये।
हजरत भी कल कहेंगे कि हम क्या 'किया किये।'

(पं० केशवराम भट्ट)

---

* इन तीनों का प्रयोग भाववाचक सा होता है।

(ङ) पुकारना धातु में यदि कर्म न हो तो उसमें—पूतना पुकारी। 'चोवदार पुकारा करा खां निगाह रूबरू।'

(राजा शिवप्रसाद)

भाषा-भास्कर में एक नियम है—जब संयुक्त सकर्मक क्रिया का उत्तरार्द्ध अकर्मक होता है तब उस क्रिया के भूतकाल में कर्ता के साथ ने चिन्ह नहीं आता। इससे यह विदित होता है कि यदि संयुक्त सकर्मक क्रिया का उत्तरार्द्ध सकर्मक हो तो कर्ता में ने चिन्ह आ सकता है। पर पं० केवशराम भट्ट अपने हिन्दी व्याकरण में यह नियम लिखते हैं - 'वे' (संयुक्त धातु) जिनका पहला या दूसरा कोई भाग अकर्मक हो 'ने' नहीं आता। वे उदाहरण देते हैं—औरङ्गजेब शिवा जी को न 'दबा सका'। जब मानसिंह 'चढ़ आये' तो पठानों की सेना 'चल दी'। इन दोनों नियमों में परस्पर विरोध तो है ही पर भट्ट जी के इस नियम और उदाहरण से १४३ पेज के (ख) चिन्हित व्यास जी वाला नियम भी खण्डित हो जाता है। मैं इन नियमों के सम्बन्ध में कहता हूँ कि जिस प्रकार के विशेषतः बोले जाते हैं वे ही प्रधान हैं और उनके सामने ये नियम उपेक्षणीय हो सकते हैं।

## द्वितीय कारक।

(१) नीचे लिखी अवस्थाओं में द्वितीय कारक का चिन्ह 'को' आता है। जैसे:—

[क] अनुक्त कर्म में-'तारों को' देखता है। 'लड़कों को' गिनता है। मैं 'इसको' मानता हूँ। मेरी 'गैया को' कौन दुहेगा। 'अधिकारी को' भेज दो।

[ख] अप्रधान कर्म में—'उसको' जाकर हाल कहा। मैं 'तुम

को' न सुनाऊँगा। 'बच्चे को' दूध पिला दो। मैं घर में 'किसी को' कैसे मुँह दिखाऊँ।

[ग] सुझाना, जताना, चिताना, मिलना, सूझना, होना, पड़ना आदि के योग में—'उन्हें' यह बात सुझा दो। 'विद्यार्थी को' बता दो। 'मुझको' उसका फल मिल गया। 'तुम्हें' खेल ही सूझा है। 'आपको' सुख हो। 'उसको' तन-मन की सुधि नहीं थी। 'तुमको' अभी मालूम पड़ा है।

[घ] रुच्यर्थक धातु के योग में—'मुझे' मीठा रुचता है। 'उसे' अब भागना ही भा गया। तुम्हारा बोलना जरा भी 'उसको' अच्छा नहीं लगता।

[ङ] व्यक्तिवाचक और अधिकारवाचक में—'मोहना को' भेज दो। 'सोहन को' जाने दो। 'कोतवाल को' बुलावो। 'सिपाही को' छोड़ दो। 'मालिक को' समझावो।

[२] 'को' का प्रयोग चतुर्थ कारक में भी होता है। नीचे लिखी अवस्थाओं में 'को' चिन्ह प्रायः चतुर्थकारक का अर्थ प्रकट करता है। जैसेः—

[क] सम्प्रदान में—'ब्राह्मण को' गाय दो। 'दरिद्रों को' अन्न दो।

[ख] नमस्कारार्थक, धिक्कारार्थक और प्रशंसार्ह शब्दों के योग में—श्रीगणेशायनमः। 'राजा को' नमस्कार। 'तुम्हें' प्रणाम है। 'पापी को' धिक्कार। 'तेरी करनी को' लानत है। 'तुझको' शतशः धन्यवाद। धन्य है तेरे' साहस को'।

[ग] निमित्त अर्थ में—वे 'स्नान को' गये हैं। 'पढ़ने को' काशी जावो। 'भोजन बनाने को 'सब चीज जुटाते हैं। दुःख 'नाम को' भी न रहा।

[घ] योग्यता, उपयुक्तता और औचित्य में—पढ़ना 'तुम्हारे

लिये' [तुमको] उपयोगी होगा। बड़ों की आज्ञा उठाना 'हमको' योग्य नहीं। विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य्य रखना चाहिये।

[ङ] आवश्यकता और अवस्था के द्योतन में-कल 'मुझे' जाना है। 'तुमको' आना होगा। 'हमको' कल रोते रोते बीता।

[ ३ ] भिन्न भिन्न विभक्तियों में भी 'को' विभक्ति का प्रयोग देखा जाता है। जैसेः—

[क] समय, स्थान और बदलने के अर्थ में—कल 'रात को' खूब पानी पड़ा। वह 'घर को' चल दिया। घोड़ा 'कितने को' लिया। इन तीनों स्थानों में 'रात में', 'घर पर', 'कितने में', सप्तमी के रूप भी बोल सकते हैं।

[ख] हो जाना, समा जाना इत्यादि के अर्थ में—'तुमको' क्या समा गया है। 'उसको' क्या होगया। 'हमें' उसका भेद खुल गया वा मिल गया। यहाँ भी 'तुममें', 'उसमें', 'हम पर' सप्तमी के रूप बोल सकते हैं।

[ग] डरना के अर्थ में—'कायर को' क्यों डरें? यहाँ 'कायर से' क्यों डरें, यह भी बोल सकते हैं।

[ ४ ] कभी २ 'को' विभक्ति लुप्तावस्था में भी रहती है। जैसेः—'किधर' छिपे हो माखन चोर। वह 'कलकत्ते' गया। हम 'पढ़ने' जाते हैं। वह 'सबेरे' आया था।

## तृतीय कारक।

[ १ ] नीचे लिखी अवस्थाओं में तृतीय कारक का चिन्ह 'से' का प्रयोग होता है। जैसेः—

[क] अनुक्त कर्ता में-मुझसे पोथी पढ़ी गयी। उससे सोये बिना रहा नहीं जाता। मोहन से पाठ लगाया गया।

[ख] प्रेरक कर्ता में—वह 'लेखक से' एक लेख लिखवाता है।

'पण्डित से' पाठ बँचवाता है। तू 'मुझसे' उसे पैसे दिलवाती है। हम 'उनसे' भात पकवाते हैं।

[ग] करण और हेतु में—राम ने रावण को 'बाण से' मारा। 'आँखों से' ही गिन रहा हूँ। 'भाग से' दर्शन हुआ। 'मेहनत से' सब कुछ होता है। 'मार से' भूत भागता है।

[घ] क्रिया करने के प्रकार बताने में—'धीरे से' पढ़ो। 'क्रम क्रम से' सब कुछ होता है। 'शान्ति से' काम लो। 'उचित रीति से' चलो। 'क्रोध से' मत बोलो।

[ङ] साथ के अर्थ में—उसको न 'मुझसे' लाभ है और न 'तुमसे' हानि। नदी में रहना 'मगर से' वैर। 'उससे सम्बन्ध होने ही से' सब कुछ हो गया। 'आँख से' आँख न लड़ावो।

[च] चिन्ह और विकार में-'आँख से' काना है। 'पैर से' लँगड़ा है। 'जटा से' साधु मालूम पड़ता है। 'पुस्तकसे' छात्र जान पड़ता है। 'अक्षर से' लेखक मालूम होता है।

[छ] निषेधार्थ में—'दौड़ धूप से' क्या नफा है? 'लड़ने से' क्या प्रयोजन। 'नौकरों से' क्या काम अर्थात् कुछ नहीं।

[ग] क्रिया विशेषण में—'किधर से' आये। 'आगे से' मिला। उसने 'पीछे से' देखा।

[२] 'से' का प्रयोग पञ्चम कारक में भी होता है। नीचे लिखी अवस्थाओं में 'से' चिन्ह से प्रायः पञ्चमी का अर्थ जाना जाता है। जैसे:—

[क] विभाग होने में—'पेड़ से' पत्ते गिरते हैं। 'नगर से' आता हूँ। 'घर से' निकालो।

[ख] किसी से किसी वस्तु के उत्पन्न होने में-'हिमालय से'

गङ्गा निकलती है। 'दूध से' घी निकलता है। 'विद्या से' ज्ञान होता है। 'लोभ से' तृष्णा बढ़ती है।

[ग] आरम्भ में-'आज से' कल तक। 'नख से' सिख तक। लड़कपन से' मैं ऐसा ही दुबला हूँ।

[घ] डरने, बँचने, लजाने आदि के हेतुवाचक शब्द में—मैं उससे' क्यों डरने लगा। मैं 'बाघ से' बाल २ बच गया। मेरा पिण्ड तो 'उनसे' छूटा। 'काम से' हाथ खींचा। 'धर्म से' विमुख हुआ। 'मुझसे' क्यों लजाते हो? 'गुरु से पढ़ो।

[ङ] भिन्नार्थक शब्द, परिचय, तुलना आदि के अर्थ में--जो तुम समझे हो वह 'उससे' भिन्न है। वह 'मुझ से' पृथक है। मेरा 'उनसे' गाढ़ परिचय है। वह हाड़ में 'मुझ से' उतर कर है। 'शिवकुमार शास्त्री से' बढ़ कर नामी और कोई विद्वान् इस समय नहीं है।

[च] रहित, हीन, आदि शब्दों के योग में-तू 'बुद्धि से' रहित है। 'विद्या से' हीन मनुष्य पशु है।

[छ] दूरी और समय के निर्णयवाचक शब्द में-वह 'मुझ से' बहुत दूर पर रहता है। वह 'यहाँ से' चार योजन है। 'आज से' ही गिनलो। 'कल से' जोड़ने पर पूरा नहीं होगा।

[ज] पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में-'दूर से' उसने मारा। 'कोठे से' देखता है। अर्थात् दूर खड़े होकर मारा; और कोठे पर चढ़ कर देखा।

[३] कई स्थानों में 'से' का प्रयोग विकल्प से होता है। जैसे—

[क] दुहना, याचना, कहना, पूछना आदि द्विकर्मक धातुओं के अप्रधान कर्म में—'गाय से' दूध दुहता है। वामन 'बलि से' जाचते हैं। मैं 'तुम से' कथा कहता हूँ। वह 'उससे'

पूछता है। पत्तान्तर में 'को' भी बोलते हैं। गाय को दुहता है। वामन बलि को याचते हैं। मैंने तुमको कोई बुरी बात तो नहीं कही। वह उनको पूछ लें इत्यादि। 'सब जगह सब वाक्य दोनों प्रकार से नहीं बोले जा सकते।

[ख] दिग्वाचक शब्द, बाहर, परे, आगे, निकट आदि शब्दों के योग में-'गाँव से' पूर्व, पच्छिम. उत्तर या दक्खिन। 'घर से' बाहर। 'ज्ञान से' परे। 'इससे' निकट। 'उससे' आगे। इनमें 'से' के स्थान पर विकल्प से 'के' भी कह सकते हैं।

(ग) निश्चय करने में—जैसे, 'इन लड़कों में से' किसको चुनते हो। 'घर ही में से' निकला। 'सिर पर से' बला टली।

(घ) मूल्यबोधक संज्ञा में—कल्याण 'कञ्चन से' मोल नहीं लिया जा सकता। 'किस भाव से' अन्न बेंचते हो? 'दो सौ से' घोड़ा खरीदा। इनमें यथा योग्य 'से' के स्थान पर 'में' 'पर' भी कह सकते हैं।

(ङ) प्रकृतिबोध करने में—'छूने से' ठंढी मालूम होती है। 'देखने से' दुखिया जान पड़ती है। यहाँ 'से' के स्थान पर 'में' भी कह सकते हैं।

(४) लुप्तावस्था में भी कभी २ 'से' रहता है। जैसे:—

(क) इस 'कारण' मैं आ न सका। वर्षा के 'हेतु' बाहर न निकला। तेरे ही 'द्वारा' (इसमें 'से' कभी नहीं लगाते) यह काम सिद्ध होगा। 'आँखों' देखा न 'कानों' सुना। मेरी 'ओर' तुम बहस करना। 'जूते जूते' पीट दूँगा। किसके 'मुँह' कहला भेजा है। 'दाँतों' अँगुलियाँ काटीं। साँप पेट के 'बल' चलता है। मेरे 'कहे सुने' अब कुछ न होगा। उस काम में उनकी 'खुशी' ही सब कुछ है। किसके 'सहारे' कमर कसूँ।

### षष्ठ कारक।

नीचे लिखी अवस्थाओं में षष्ठ कारक के चिन्ह (का, के, की) आते हैं। जैसेः—

(क) सम्बन्ध में—राजा का नौकर। मेरे बाप। सोने का कड़ा। राम की पुस्तक। बिहारी की सतसई। सिर के बाल आदि।

(ख) तुल्यार्थक शब्द, अधीन, योग्य, अनुसार, प्रति, साथ, निकट, ऊपर, इत्यादि अनेक शब्दों के योग में—पुत्र के अधीन। उसके योग्य। * मेरे समान। कहने के अनुसार। उनके प्रति। तेरे साथ। हमारे आगे। उसकी ओर। मोहन के पीछे। घर के पिछवाड़े, इत्यादि।

(ग) समस्त और केवल अर्थ में—गङ्गा की बाढ़ से 'गाँव का गाँव' डूब गया। 'सब के सब' लड़के पास हैं। 'खेत का खेत' गाय चर गई। 'दूध का दूध' 'पानी का पानी'। 'घर की घर' ही में रहे, बात खुलने न पावे।

(घ) भाववाचक के प्रयोग में—उसका आना। तुम्हारी एँठन। उसकी कतर-ब्योंत। बाल का मुड़ाना। लाठी की मार। कपड़े की कतर। उसकी महिमा। तुम्हारे गाम्भीर्य्य और औदार्य्य। देवता की महिमा।

(ङ) परिमाण, मूल्य, काल, शक्ति आदि के अर्थ प्रकाश होने में—दो हाथ की लाठी। दश हाथ का बाँस। छ छ पसेरी की बात। अब बारह आने गज का साधारण मारकीन भी मिलना कठिन है। दश रुपये की टोपी है। वर्ष दिन का रास्ता चले पर छः महीने का नहीं। चार दिन की

* सर्वनाम में का, के, की, के स्थान पर रा, रे, री होता है।

चाँदनी फेर अँधेरी रात। राव का रंक। राई का पर्वत। * बुढ़ापे आने से अब वह चलने फिरने का नहीं। अब राज ठहरने का नहीं।

(च) विशेष्य उपमान हो तो उपमेय में—दिल की कली। गुण का समुद्र। रूप का बाजार। प्रेम का बन्धन। आस की फाँस। माया की डोरी।

(छ) आधार अर्थ में—पहाड़ का (पहाड़ पर का) चढ़ना। घोड़े का आसन। कुर्सी का वैठना।

(ज) कृदन्तीय शब्दों के योग में—कपड़े का वेचने वाला। आग का तपाया लोहा। उनके 'आते' ही सब भेद खुल गया। 'रास्ते का' थका माँदा! साँप का ग्रसा छुछुन्दर। भगवान का दिया हुआ बेटा।

(झ) विशेष्य के गुण या लक्षण प्रकट करने में—पीने का पानी। जाति का ब्राह्मण। जनम का दरिद्री। तप के धनी। गाँठ का पूरा। दिन की रात हो गयी।

(ञ) शीघ्रता में—बात की बात में कह डाला। आन की आन में आ पहुँची।

( २ ) नीचे लिखी अवस्थाओं में विकल्प से उपर्युक्त चिन्ह आते हैं। जैसेः—

(क) होना क्रिया के साथ—जिसके आखें न हों वह क्या जाने। वह उसकी बहन न हुई। नन्द जी के पुत्र हुआ है। भौंरे के छ पैर होते हैं। इन वाक्यों में 'के' के स्थान पर 'को' भी बोलते हैं।

* इन दोनों वाक्यों में 'का' के प्रयोग को कोई २ भविष्य के अर्थ में लेते हैं। 'चलने फिरने का' 'ठहरने का' मतलब 'चले फिरेगा' 'ठहरेगा' नहीं, यह अर्थ है। पर यहाँ शक्ति अर्थ में आये हैं।

(ख) लक्षण और अव्यय में—शरीर की तो कोमल है। मुंह का हल्का है। मा कब की पुकार रही है। कहाँ की कहाँ गयी। इनमें 'की' के स्थान पर 'से' का भी प्रयोग होता है।

( ३ ) कभी २ लुप्तावस्था में भी इनकी संज्ञायें रहती हैं। जैसेः—मैं तेरी न सुनूँगा। सब की सुन लेते हैं लेकिन अपनी कुछ नहीं कहते। मन की मन में ही रक्खो। आने की कह गई पर फिर न आई। मुँह ( का ) माँगा धन। उसकी खूब चली है। यह न होने की।

## सप्तम कारक।

( १ ) नीचे लिखी अवस्थाओं में सप्तम कारक के चिन्ह 'में' 'पर' आते हैं। जैसेः—

(क) आधार में—तिल में तेल है। टेबुल पर पुस्तक है। लिखने में मन लगा है। पेड़ पर चिड़िया बैठी है। वसन्त में कोयल कुहुकती है। इसको पेड़ में बाँधो ।

(ख) निर्द्धारण में—मणियों में हीरा बहुमूल्य है। कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। लड़कों में मोहन तेज़ है ।

(ग) सातत्य अर्थ में—खत पर खत भेजा। एक पर एक बड़ा है। लड़ी एक में एक गुँथी हुई है। बाजी पर बाजी मार ले गया। दिन पर दिन बीतता जाता है।

(घ) अनन्तर अर्थ में—खा लेने पर पाठशाला जाऊँगा। करने पर पछताना है। अर्थात् खा लेने के बाद, कहने के अनन्तर।

(ङ) काल, हेतु, परिमाण, अनन्तर, इत्यादि के अर्थ में—कितने दिनों में पहुँचे। एक ही तीर में काम तमाम किया। एक कोस पर गाँव है। इस पर यदि तुम कहो। 'इस बात पर' वह लग गया। हम तुममें भेद नहीं है।

(२) नीचे लिखी अवस्थाओं में विकल्प से इनका प्रयोग होता है। जैसे:—

(क) हेतु के प्रकाश करने में—ऐसा करो जिसमें यह कार्य सिद्ध हो। परिश्रम करो जिसमें विद्या लाभ हो। इनमें 'में' के स्थान पर 'से' भी आता है।

(ख) गत्यर्थक में—मोहन घर पर (घर को) (घर) गया। कलेजा मुँह को (में) आ गया।

(३) नीचे लिखी अवस्थाओं में 'में' और 'पर' चिन्ह लुप्त रहते हैं। जैसे:—

मैं आपके पैर पड़ता हूँ। भले घर बायन दिया। मेरे जाने यह है। इसे गाँठ बाँध लो। आने सेर चावल। बार बार ऐसा न कहो। उस समय कहाँ थे? धन काम न आया। आठो पहर चौसठ घड़ी नाम जपता हूँ। उस जगह आ पहुँचा, इत्यादि।

नोट–[विभक्तियों के उदाहरण में अनेक तरह के मुहावरेदार वाक्य मिलते हैं जिनको व्याकरण की कसौटी पर कसना बड़ा दुष्कर हो जाता है। बोल-चाल की भाषा में ऐसे ऐसे विचित्र वाक्य दिन रात व्यवहृत होते रहते हैं जिन पर पढ़े लिखे बहुतों का कम ध्यान जाता है। अर्थ और व्यवहार के अनुसार इनका बहुत महत्व समझा जाता है। ऊपर के उदाहरणों में ऐसे कुछ वाक्य आ गये हैं। और भी अनेक उदाहरणीय वाक्य हैं जिनके अर्थ का निर्णय नहीं किया गया है। उन प्रयोगों का भी विचारपूर्वक अर्थनिर्णय कर लेना चाहिये।]

### अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों में कौन २ विभक्ति किस २ अर्थ में जोड़ी गयी है:—

उसने मुझसे सिर झुका लिया। मुझे दर्शन होने दो। बात को ऊँची करते

हो। उसको क्या हुआ है। तुम्हे खेल ही सूझा है। फल मूल भेंट को लाया। मथुरा को बुलावो। मोहन को लिये चलो। वह घर से भीख को निकला। राम को रुपया ही सूझता है। हाथी से कौन लड़ सकता है? ऐसी बात न होने की। जिसके दो स्त्रियाँ थीं। बड़े पाट की नदी। धर्म में लगे रहो। वह चीज नोकर से भेज दूँगा। हाथ पैर तो कहने में ही नहीं हैं। पैरों पड़ा। इनमें से कौन है? मेरे नाम से पहचान तो गया।

ऐसे कुछ वाक्य बनावो जिनमें निमित्त और लुप्तावस्था में 'को', अपेक्षा और आरम्भ अर्थ में 'से', विशेष्य के गुण और शक्ति प्रकट करने में 'का', अनन्तर और निर्धारण अर्थ में 'में' तथा 'पर' के व्यवहार हों।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करोः—

मन का एकाग्र करे बिना किसी आदमी चाहें की कोई विषय के मैं पूर्ण सफल हों सो नहीं होने की। इसीमें जिनने एक साथ काम आरम्भ करते हैं उसके एक कार्य भी यथेष्ट सिद्धि नहीं होता। चित्त संयम का साथ यदि वही दश काम बारी बारी में किया जाँय तो उतना ही समय से सुख में सब सिद्ध हो सकते हैं। इसमें हम लोगों के चाहिये प्रत्येक कामों में मन लगा करको किया करें। ये ही एक सिद्धी से द्वार है और दूसरे ऐसा नहीं है।

---

# वाक्य-विचार (Syntax)

**व्याकरण का तीसरा भाग वाक्य-विचार है। इसमें शब्दों के द्वारा वाक्य-विन्यास की रीति बतायी जाती है।**

**मुख्यतः वाक्य-रचना में दो बातें देखी जाती हैं। एक तो मेल और दूसरा क्रम।**

**मेल में यह वर्णन किया जाता है कि कौन शब्द लिङ्ग, पुरुष, वचन आदि में किसके समान होता है।**

**क्रम में यह बात बताई जाती है कि वाक्य में किस २ शब्द का कौन २ स्थान नियत है। यह दो तरह का होता है। एक व्याकरण-सम्बन्धी क्रम और दूसरा आलङ्कारिक क्रम।**

व्याकरणःसम्बन्धी ( Grammatical ) क्रम में शब्दों के बोलने और लिखने में यथास्थान रखने के साधारण नियम दिये हुए हैं और आलङ्कारिक ( Rhetorical ) क्रम में व्याकरण-सम्बन्धी नियम कुछ उलट पलट जाते हैं। इससे वाक्यार्थ में विशेषता आ जाती है।

## मेल ( Concord )

हिन्दी में क्रिया के साथ कर्ता का और कर्म का, संज्ञा के साथ सर्वनाम का, भेद्य के साथ भेदक का और विशेष्य के साथ विशेषण का मेल रहता है।

### क्रिया के साथ कर्ता का मेल।

( १ ) कर्ता में कोई विभक्ति न हो तो क्रिया कर्ता के समान होती है। जैसे, तू पढ़ता है। मैं पढ़ता हूँ। वे पढ़ते हैं। स्त्रियाँ सीती हैं। बच्ची रोती है। वह पढ़ता था। तुम लिखोगे।

( २ ) यदि वाक्य में एक से अधिक एकवचन कर्ता हों और वे 'और' से जुड़े हों तो क्रियाब हुवचनान्त होगी। जैसे, राम और श्याम पढ़ेंगे। मोहन और सोहन लिखेंगे।

( ३ ) आदर और अपने के लिये एकवचन में भी बहु-वचन का प्रयोग होता है। जैसे, गुरु महाराज आये। पण्डित-जी गये। हम कथा कहेंगे। आप बोलिये।

( ४ ) यदि एक ही क्रिया के अनेक एकवचन कर्ता हों और उनमें 'न' 'या' आदि कोई विभाजक शब्द हो तो क्रिया एकवचन ही होगी। जैसे, न मुझे भूख है न प्यास। राम या श्याम आवेगा। तू या वह कोई करे। मोहन लावेगा चाहे सोहन। मैं इसे करूँ अथवा वह करे।

( ५ ) यदि एक कर्ता की अधिक क्रियायें हों तो कर्ता एक

ही बार लाते हैं। जैसे – राम ही कहेगा, सुनेगा सब कुछ करेगा। मोहन न पढ़ता है न लिखता है।

( ६ ) यदि एक ही क्रिया के अनेक कर्ता हों और वे लिङ्ग में असमान हों तो क्रिया बहुवचन और अन्तिम लिङ्ग के अनुसार होगी। जैसे, लड़के लड़कियाँ आयीं। औरतें और मर्द झगड़ते हैं।

( ७ ) यदि पिछला कर्ता एकवचन हो तो क्रिया एकवचन अथवा बहुवचन दोनों में प्रयुक्त हो सकती है।

( अम्बिकादत्त व्यास )

( ८ ) यदि असमान लिङ्ग के अनेक एकवचन कर्ता हों तो क्रिया पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होगी। जैसे, एक झोपड़े में बुढ़वा और बुढ़िया रहते थे। राजा रानी आये। माता पिता गये। कितने दिन रात गुज़र गये।

( ९ ) यदि एक क्रिया के असमान लिङ्ग के अनेक कर्ता हों और उनमें कोई समुदायवाचक शब्द आ पड़े तो क्रिया बहुवचनान्त पुल्लिङ्ग होगी। जैसे, मेले में हाथी, घोड़े गाय, बैल, भैंस सब बिक रहे थे। दंगे में बालक, युवा, नर, नारी सब के सब पकड़े गये।

( १० ) ऐसी दशा में यदि समुदायवाचक शब्द से बहुवचन की विवक्षा न रहे तो एकवचन ही होगा। जैसे, धन, जन, स्त्री, पुत्र, कलत्र मेरा सब चला गया।

( ११ ) यदि वाक्य में कई संज्ञायें रहें और उनसे बहुवचन की विवक्षा हो तो बहुवचन क्रिया होती है। जैसे, इसके लेने में चार रुपये, छ आने, तीन पैसे लगे हैं।

( १२ ) ऐसी दशा में यदि संज्ञाओं से एकवचन विवक्षित

हो तो क्रिया में एकवचन होगा। जैसे, इसके करने में तीन बरस, चार मास, छु दिन लगा है।

( १३ ) यदि एक ही वाक्य में तीनों पुरुष के कर्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार और यदि मध्यम और अन्य पुरुष के कर्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष के अनुसार होगी। जैसे, हम, तुम और मोहन पढ़ेंगे। मोहन और तुम पढ़ोगे। *वह और तू पढ़ो। *तू और मैं पढ़ेंगे। हम और तुम चलेंगे।

( १४ ) विधि वा आज्ञार्थक क्रिया के कर्ता लुप्त रहते हैं पर वे मध्यम पुरुष के 'तू' और 'तुम' ही होते हैं। इससे क्रिया मध्यम पुरुष की ही होती है। जैसे, (तू) पढ़। (तुम) पढ़ो। इन दोनों के अतिरिक्त यदि अन्य मध्यम पुरुष के कर्ता हों तो वे लुप्तावस्था में नहीं रहते। जैसे, आप कथा सुनावें।

(१५) यदि जातिवाचक कोई कर्ता हो तो क्रिया एकवचन होती है। जैसे, मेला लगा है। समाज जुटा है। भीड़ जमी है। पर इनसे जहाँ बहुत्व का बोध हो वहाँ बहुवचन क्रिया होगी। जैसे, दश समाज जुरे हैं।

अनादर करने में और ईश्वर के पुकारने में एकवचन ही क्रिया प्रयुक्त होती है। जैसे, तू यहाँ से चला जा। अरे क्या बकता है? सच झूठ तो ईश्वर ही जानता है।

(१७) यदि संज्ञा के साथ 'हरेक' 'प्रत्येक' अव्यय हो तो क्रिया और सर्वनाम में एकवचन ही होगा। जैसे, प्रत्येक आदमी अपना काम कर रहा है। प्रत्येक आदमी, प्रत्येक घोड़ा और प्रत्येक हाथी मारा गया।

(१८) द्रव्यवाचक, व्यक्तिवाचक और गुणवाचक शब्द प्रायः एकवचन ही होते हैं। इससे इनकी क्रिया भी वैसी ही

* ऐसे स्थानों पर 'वह और तू पढ़' 'तू और मैं पढूँगा' ऐसे भी वाक्य बोलते हैं।

होती है। जैसे, तेल बिकता है। मोहना आया। उसकी नम्रता प्रशंसनीय है। इनके प्रकार वर्णन में बहुवचन हो सकता है। जैसे सब तेलों में तिल का तेल अच्छा होता है, इत्यादि।

(१६) कुछ कर्ताओं की क्रियायें प्रायः बहुवचन में ही व्यवहृत होनी चाहियें। जैसे, प्राण निकल गये। अक्षत छीटे गये। ओठ फड़कने लगे। आँखें पथरा गईं।

(२०) यदि अनेक उद्देश्यों का विधेय एक हो तो विधेय में अन्तिम उद्देश्य का लिङ्ग होगा। जैसे, मोहन के लड़के लड़कियाँ साफ-सुथरी रहती हैं। पर यदि विधेय संज्ञा हो तो विधेय के अनुसार लिङ्ग वचन होते हैं। जैसे, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, आदि धातु कहलाता है।

### क्रिया के साथ कर्म का मेल।

कर्ता में कोई विभक्ति हो तो क्रिया कर्म के अनुसार होती है। जैसे, स्त्री ने* कपड़े रंगे। लड़कों ने जलेबियाँ खायीं। मैंने गाय दी। मुझसे लड़की पढ़ायी जाती है। हमसे तू देखा गया। मुझसे कथा कही गयी। †

### अभ्यास।

कर्ता और क्रिया का तथा कर्म और क्रिया का कब २ मेल होता है? कर्ता और क्रिया के मेल के कितने प्रकार हैं? प्रत्येक का उदाहरण दो।

---

* 'ने' और 'से' के लाने के नियम 'क्रिया' और 'विभक्तियों के प्रयोग' के प्रकरणों में देखो।

† जब कर्ता कर्म, दोनों में विभक्तियाँ रहती हैं तो क्रिया का मेल इनमें से किसीके साथ नहीं होता है और वह सदा एकवचन पुलिङ्ग अन्यपुरुष की होती है। जैसे, मुझसे बेकार बैठा नहीं जाता। कृष्ण ने गोपियों को बुलाया।

नीचे लिखे वाक्यों का मेल के अनुसार संशोधन करोः—

लड़कियाँ रोती हैं। कृष्ण ने गोपियों को बुलायीं। मोहन या श्याम आवेंगे। मोहन न पढ़ता है न मोहन खेलता है। बैल भैंस चरते हैं। हम और तुम जावोगे। इसके मोल लेने में पाँच रुपये सात आना लगे हैं। दोनों भाई आया। आप कुछ कहो। प्रत्येक लड़के आये। दश तरह की चीज जुटी है। कढ़ी और बरी दोनों स्वादिष्ट बनी है। माँ और बेटे आयीं। खेत का खेत चर गये। नौकर आये। कड़ी आवाज से कान फटा। पैर आगे पीछे पड़ता है।

## भेद्य-भेदक वा सम्बन्ध-सम्बन्धी का मेल।

(१) भेदक के चिह्न में वे ही लिङ्ग वचन होते हैं जो भेद्य के होते हैं। जैसे, राम का लड़का, राम के लड़के, राम की लड़की और राम की लड़कियाँ।

(२) भेद्य वा सम्बन्धी के बहुवचन होने से भेदक में 'के' चिन्ह आता है पर सम्बन्धी के आगे कोई विभक्ति हो तो एकवचन सम्बन्धी होने पर भी सम्बन्ध में 'के' ही चिन्ह आता है। जैसे, राम 'के' लड़के को बुलावो। मोहन 'के' बाप को बुखार लगा है।

[ नोट—जो वैयाकरण 'का' को तद्धितान्त प्रत्यय मान कर उसे विशेषण का आकार देते हैं और उसमें आकारान्त विशेषणों के ऐसा 'ए' 'ई' के परिवर्तन वाले सिद्धान्त के पक्षपाती हैं उनकी उक्ति उपर्युक्त उदाहरण से कुछ ठीक जँचती है। क्योंकि, यद्यपि उसमें भेद्य-भेदक भाव है तथापि 'के' होने का, जो बहुवचन भेद्य होने पर आता है, कोई वैसा कारण नहीं है। ]

[३] कहीं २ भेद्य-भेद्यक के लिङ्ग–सम्बन्धी नियम के विपरीत प्रयोग भी मुहावरे में होते हैं। जैसे, इंग्लैंड के राजा-

रानी हमारे सम्राट् और सम्राज्ञी हैं। आप की आज्ञानुसार और उनकी इच्छानुसार मैंने यह काम किया। इन वाक्यों के समस्त 'राजा-रानी,' आज्ञानुसार, के योग में उपर्युक्त नियम के विरुद्ध चिन्ह आये हैं।

[ ४ ] यदि स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग सम्बन्धी शब्द 'और' अव्यय के साथ जुड़े हों तो निकट के संबन्धी के अनुसार चिन्ह आता है। जैसे, आपके लड़के और लड़कियाँ कुशल से तो हैं न ? हमारी सम्राज्ञी और सम्राट् चिरञ्जीव हों।

## विशेष्य-विशेषण का मेल।

[ १ ] विशेषण के लिङ्ग-वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—पीला कपड़ा, पीले कपड़े, पीली साड़ी, पीली साड़ियाँ।

[ २ ] यदि कई असमान विशेष्यों का एक ही विशेषण हो तो उसमें समीपवर्ती विशेष्य के लिङ्ग-वचन होंगे। जैसे—बड़े लड़के और लड़कियाँ,बड़ी लड़कियाँ और लड़के। कच्चे केले और लीचियाँ। पकी नारंगियाँ और अमरूध इत्यादि।

[ ३ ] यदि कई विशेषणों का एक ही विशेष्य हो तो सब में वे ही लिङ्ग-वचन होंगे जो विशेष्य के हैं। जैसे, सीधी सादी मोटी लाठी लेकर नापो। स्वप्न में बड़ी ऊँची डरावनी मूर्ति मेरे सम्मुख आई।

[ ४ ] यदि कर्म कारक का चिन्ह नहीं रहे तो विशेषण कर्म ही के अनुसार होता है। जैसे, मैंने लाठी 'खड़ी' की। टोपी 'सीधी' कर लो।

परन्तु जब कर्मकारक का चिन्ह देख पड़ता है तब विशेषण कर्ता के अनुसार होता है। जैसे, तुमने कांटों को

क्यों टेढ़ा किया? काठ के रङ्ग को और गहरा कर दो।

[ भाषा-भास्कर ]

यदि कर्म का चिह्न रहता है तो विशेषण विशेष्य का अनुरोध करता है, पर क्रिया सब अवस्था में प्रथम पुरुष एक वचन पुल्लिङ्ग ही रहती है। जैसे—उसने गाड़ी को खड़ी किया, तुमने इस रेखा को टेढ़ी खींचा इत्यादि। ( भाषा-प्रभाकर )

कभी कभी उद्देश्य का विधेयरूप विशेषण अन्य २ संज्ञा भी होती हैं; जैसे, उसने कज्जली को स्याही बनाया या बनाई इत्यादि वाक्यों में कज्जली उदेश्य और स्याही विधेय है। [ हिन्दी व्याकरण तत्त्वबोध ]

[ इस विषय में बहुत मतभेद देख पड़ता है। बोलने में दोनों रूपों का व्यवहार देखा जाता है। जैसे—वह लकीर को सीधा या सीधी करता है। ]

[ ५ ] यदि अकर्मक क्रिया के असमान लिङ्ग के अनेक कर्ता हों और उनका विशेषण हो तो उसमें अन्तिम कर्ता का लिङ्ग होगा। जैसे, उसके माँ बाप और दोनों बहनें भली चंगी हैं। लड़के और लड़कियाँ दौड़ती आती हैं।

सर्वनाम सम्बन्धी विशेषणों में वे ही वचन होते हैं जिन संज्ञाओं को वे सूचित करते हैं। जैसे—यह पुस्तक, ये पुस्तकें। वह लड़का, वे लड़के इत्यादि।

## संज्ञा-सर्वनाम का मेल।

सर्वनाम के लिङ्ग वचन उस संज्ञा के लिङ्ग-वचन के तुल्य होते हैं जिसकी जगह पर वे आते हैं। जैसे, मैंने मोहन को बुलाया था वह नहीं आया। स्त्रियाँ घर की लक्ष्मी हैं वे सम्मान के योग्य होती हैं, इत्यादि।

आजकल मध्यम पुरुष के एकवचन 'तू' का व्यवहार

विशेष स्थलों को छोड़ कर अन्यत्र प्रायः नहीं होता। प्रायः एकवचन में भी तुम और आप का ही विशेष प्रयोग होता है। इसलिये क्रिया भी बहुवचनान्त ही होती है।

### अभ्यास।

भेद्य-भेदक के लिङ्ग-वचन-सम्बन्धी क्या नियम हैं? बहुवचन भेद्य के अतिरिक्त और कहाँ २ 'के' आता है? यदि स्त्रीलिङ्ग-पुल्लिङ्ग भेद्य हों तो भेदक के चिन्ह में कौन लिंग होगा? विशेष्य-विशेषण के मेल-सम्बन्धी कौन २ नियम हैं? यदि कर्म-कारक में 'को' चिन्ह हो तो लिङ्ग-वचन के अनुसार उसके विशेषण में परिवर्तन होगा या नहीं? उसकी विशेष व्यवस्था क्या है?

नीचे लिखे वाक्यों की शुद्ध करो और कारण बताओः—

राम का लड़का का कल ब्याह है। उसकी लड़के लड़कियाँ अच्छे हैं। उनकी माँ बाप आये। हमारी गौरीशङ्कर ही इष्ट देवता हैं। हमारे आज्ञानुसार काम होना चाहिये। अधखिली फूल और कलियाँ मत तोड़ो। उनके केश खुला और बिखरे हैं। भाई और बहिनें दौड़ते आते हैं। कज्जली को स्याही बनायी। पुस्तकें अच्छी हैं पर वे किसी काम के नहीं। वे विद्यार्थी पढ़ते हैं पर उसका आचरण अच्छा नहीं हैं।

## क्रम (Order)

पूर्णार्थ-बोधक पद-समुदाय को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के मुख्य दो भाग होते हैं—एक उद्देश्य (Subject) और दूसरा विधेय ( Predicate )। उद्देश्य को कर्ता और विधेय को क्रिया कहते हैं।

जिसके विषय में कुछ कहा जाय वही उद्देश्य और जो कहा जाय वही विधेय है। जैसे, मोहन जाता है। घोड़ा दौड़ता है। इनमें मोहन और घोड़ा उद्देश्य और अन्तिम भाग 'जाता है' 'दौड़ता है' विधेय है।

बहुतों के मत में उद्देश्य-विधेय-भाव वहीं होता है जहाँ वाक्य में दो संज्ञायें निरपेक्ष होकर आती हैं और लिङ्ग-वचन में समान होती हैं। जैसे, देह लकड़ी हो गयी। राधाकृष्ण बन गयी। इनमें देह और राधा इतने ही उद्देश्यांश हैं और शेष विधेयांश। जो लोग कर्ता और क्रिया दो ही में उद्देश्य-विधेय-भाव मानते हैं उनके मत में यहाँ संज्ञा सहित विधेय है।

यदि कर्ता का विशेषण अपेक्षित हो और यदि वह क्रिया के पूर्व आवे तो संज्ञा के समान ही उसमें भी उद्देश्यविधेय-भाव होता है। जैसे कुत्ता लँगड़ा है। देवदत्त पण्डित हो गया इत्यादि।

उद्देश्य और विधेय कई प्रकार के होते हैं और उनके विस्तार भी कई प्रकार के। इन सबों का वर्णन वाक्यविग्रह के प्रकरण में आगे किया जायगा।

(१) वाक्य में अपने विस्तार के सहित उद्देश्य या कर्ता पहले और अपने विस्तार के सहित विधेय वा क्रिया अन्त में आती है। जैसे, मोहन का दौड़ता हुआ चंचल लड़का खाकर मन से पाठ पढ़ता है।

(इस वाक्य में सम्बन्धवाचक 'मोहन का' क्रिया द्योतक 'दौड़ता हुआ' और गुणवाचक 'चंचल' उद्देश्य 'लड़का' के विस्तार हैं और पूर्वकालिक क्रिया 'खाकर' कारक 'पाठ' क्रिया-विशेषण 'मन से' विधेय 'पढ़ता है' के विस्तार हैं।)

(क) दो पद यदि उद्देश्य-विधेय भाव से व्यवहृत हों तो उद्देश्य पहले और विधेय बाद आता है। जैसे, विद्या अमूल्य धन है। धर्म ही केवल मनुष्य का मित्र है।

(ख) वाक्य में कहीं केवल उद्देश्य रहने पर विधेय का अध्याहार कर लेते हैं और कहीं विधेय के रहने पर उद्देश्य

का अध्याहार। जैसे, किसीको पढ़ते सुनकर पूछा कि कौन पढ़ता है? उत्तर मिलता है 'मोहन' अर्थात् मोहन पढ़ता है। किसीसे पूछा 'आते हो' अर्थात् 'तुम' आते हो। इनमें 'पढ़ता है' और 'तुम' अध्याहृत होते हैं। कहीं २ दोनों ही अध्याहृत होते हैं। जैसे, किसीने पूछा 'तुम चलोगे' उत्तर मिला 'हाँ' या 'जी' अर्थात् हाँ, 'मैं चलूँगा'। इस केवल 'हाँ' से मैं चलूँगा इतना उह्य होता है।

(ग) यदि क्रिया सकर्मक हो तो कर्म क्रिया के पहले आता है। जैसे, राम काम करता है। और यदि धातु द्विकर्मक हो तो गौण कर्म पहले रखते हैं। जैसे, मोहन 'अन्न' भोजन करता है। गुरु 'शिष्य को' पाठ पढ़ाता है।

(घ) कभी २ अर्थ की प्रधानता वा दृढ़ता सूचित करने के लिये उपर्युक्त नियमों में परिवर्तन भी होता है:—

(१) अर्थ की प्रधानता के अनुसार—तुमको केशव ढूँढ़ते थे। जरूरत तो थी उनकी, पर आये तुम। यदु को यह पुस्तक दूँगा तुमको नहीं। यह बात तो मैंने तुमको कह दी थी। मैंने तो खायी रोटी और तुमने?

(२) दृढ़ता सूचित करने में—तुम्हीको मैं चाहता हूँ। मैं तो करूँगा और वह? देखता हूँ न कि इसे कौन करता है। जाने दो, होगया सो होगया।

(३) प्रश्न, कौतुक, विरक्ति और अहंकार में—कहते क्या हो? खेल समझे बैठे हो। करते २ थक गया, पर पार न लगा। छोड़ता हूँ मैं कब इसे?

(ङ) अनेक कर्ता और कर्म रहने पर भी यदि एक ही क्रिया हो तो वह अन्त में ही आयेगी। जैसे, गोपाल, राम और श्याम आये थे। ईश्वर ने ही मनुष्य, पशु, पक्षी और कीट

पतंगों को बनाया है। इसको गाय, उसको भैंस, इसको घोड़ा, उसको हाथी कहते हैं।

(च) अनेक क्रियाओं का यदि एक ही कर्ता हो तो वह सब से पहले ही आता है। जैसे—वह हँसता है, खेलता है, गाता है और रोता है।

(२) असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले आती है और दोनों का एक ही कर्ता होता है। असमापिका क्रिया के कर्म, करण आदि जो अन्यान्य पद हैं वे असमापिका क्रिया के पूर्व और समापिका क्रिया के कर्म, करण आदि जो पद हैं वे समापिका क्रिया के पूर्व आते हैं। जैसे, मोहन मन से अपना पाठ पढ़ कर शाम को पैदल घर चला आता है।

(क) यदि पूर्वकालिक और समापिका क्रियाओं का एक ही कर्म हो तो पहली ही क्रिया के पूर्व वह आता है। जैसे; गुरु ने शिष्य को सफल देख कर और पास बुला कर स्नेह के साथ आलिंगन करते हुए बिदा किया।

(ख) कभी २ असमापिका क्रिया यदि वह कारण-रूप में हो तो कर्ता के पहले भी आता है। जैसे, उसका व्याख्यान सुन कर कौन नहीं मुग्ध होता? बाघ देख कर कौन नहीं डरता? उसके व्याख्यान दे लेने पर मैं भी व्याख्यान दान के स्थान पर जा डटा।

(३) विशेषण ठीक विशेष्य के पहले आता है। जैसे, सुन्दर लड़का। सीधी सादी बात। अच्छी पुस्तक इत्यादि।

(क) यदि एक विशेष्य के कई विशेषण हों तो अन्तिम विशेषण के पूर्व 'और' अव्यय आता है। जैसे, सुन्दरी और बुद्धिमती बालिका। सत्यपरायण और धर्मात्मा युधिष्ठिर।

(ख) यदि विधेय-विशेषण हो तो वह विशेष्य के बाद आता

है। जैसे, मोहन बड़ा ही सुशील है। सोहन सच्चरित्र है।

(ग) उपाधि-सूचक विशेषण भी विशेष्य के अन्त में ही रक्खे जाते हैं। जैसे, पं० अम्बिकादत्त व्यास 'साहित्याचार्य'। पं० विजयानन्द त्रिपाठी 'विद्यारत्न'।

(घ) सर्वनाम के विशेषण प्रायः अन्त ही में रहते हैं। जैसे, वह सुखी है। मैं दुःखी हूँ। तू बड़ा चञ्चल है।

(ङ) भेद्य-भेदक-भाव में यदि भेद्य के एकाधिक विशेषण कहना हो तो उन्हें उसके ही पूर्व में रखना चाहिये। जैसे, गंगा का गम्भीर, मधुर और सुन्दर कलरव सुनकर कान तृप्त होगये। यदि कलरव के ये तीनों विशेषण गङ्गा के पूर्व रख दिये जाँय तो यह भ्रम उत्पन्न हो जायगा कि ये गंगा के विशेषण हैं या कलरव के। इससे ऐसे विशेषणों को ठीक विशेष्य के पूर्व में ही रखना उचित है। यदि गंगा के विशेषण हों तो उनका गंगा के पूर्व में ही रहना उचित है।

(च) दृढ़ता प्रकट करने को कभी २ विधेय-विशेषण विशेष्य के पूर्व भी आते हैं। जैसे, सच्चे और निराले तुम्हारे सभी कारबार हैं।

(४) सर्वनाम यदि विशेषण-रूप से आवे तो वह भी विशेष्य के पूर्व में ही रहता है। जैसे, वह आदमी। ये सब लोग। जिस आदमी को इत्यादि।

(क) सम्बन्ध कारक में यदि सर्वनाम विशेषण-रूप से आता है तब विशेष्य के पूर्व रहता है और यदि विधेय-विशेषण के रूप में आता है तब विशेष्य के बाद रहता है। जैसे, मेरी पुस्तक लावो। तुम्हारी बात न सुनी जायगी। यह पुस्तक मेरी है। ये चीज़ें तुम्हारी नहीं हैं।

(ख) प्रश्नवाचक सर्वनाम उसीके पूर्व आता है जिसके विषय में मुख्यतः प्रश्न किया जाता है। जैसे, कौन आदमी है? किस विषय में पूछना चाहते हो?

( ५ ) क्रियाविशेषण क्रिया के पूर्व और विशेषण के भी विशेषण उसके पूर्व आते हैं। जैसे–उसने 'जोर से' पुकारा। वह 'विनय से' बोला। वह 'अत्यन्त' दुर्बल है। वह 'बहुत' नीच है।

[क] सकर्मक वा द्विकर्मक क्रिया के क्रियाविशेषण कर्म के पूर्व ही रहते हैं। जैसे, वह 'ऊँचे स्वर से' पाठ करता है। वह 'मन से' शिष्य को पाठ पढ़ाता है। कभी २ इनमें विपरीत भी प्रयोग होते देखा जाता है। जैसे, वह मुझे 'बहुत' चाहते हैं। उन्होंने मुझे 'प्रेम से' यह सिखाया है।

(ख) 'जो' जब क्रिया-विशेषण के रूप में व्यवहृत होता है तब वह कर्ता के बाद ही आता है। जैसे, वह जो मुझसे कुछ चाहेगा सो मैं नहीं जानता था। उन्होंने जो मुझे चित्र दिखलाया उसका कारण है।

(ग) केवल, कठिनता से, प्रधानतः आदि कुछ ऐसे क्रिया-विशेषण हैं जिनके प्रयोग में विशेष ध्यान देना चाहिये। ये जिनके गुण वर्णन करते हों उनके ठीक पूर्व इनका प्रयोग होना चाहिये, नहीं तो इनका अर्थ उलट पुलट जाता है। जैसे, केवल राम इसको पढ़ सकता है। (अर्थात् राम के अतिरिक्त दूसरा कोई इसे पढ़ नहीं सकता) राम केवल इसको पढ़ सकता है। (अर्थात् पढ़ना छोड़कर अर्थ वगैरह वह कुछ नहीं कर सकता)।

( ६ ) सम्बोधन वाक्य में पहले ही प्रयुक्त होता है। जैसे, हे भाई! सुनो। ओ मोहन! मेरा कहना मान लो। रे लड़का! यहाँ से चला जा। यदि सम्बोधन का विशेषण हो

तो वह सम्बोधन के पूर्व ही आता है। जैसे, हे कुलगुरु सूर्य ! मेरी धर्म-रक्षा करना।

(७) सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद रहता है और यदि सम्बन्धी का विशेषण हो तो वह उसके पूर्व ही आता है। जैसे, राम का घर। मेरा लड़का। राम का सुन्दर घर। मेरा सुशील लड़का। गाँव के भूखे खेतिहर।

(क) प्रश्नोत्तर और शोक-प्रकाश आदि में सम्बन्धी प्रायः पहले आता है। जैसे-घर किसका है ? घर मेरा है। बेटा मेरा, मुझे छोड़ कहाँ चला गया ? यह घर राम का है।

(ख) यदि किसी व्यक्ति वा वस्तु के साथ एकाधिक व्यक्ति का मिलित सम्बन्ध सूचित करना हो तो अन्तिम वस्तु में सम्बन्ध का चिन्ह आता है और यदि पृथक् २ सम्बन्ध सूचित करना हो तो पृथक् २ चिन्ह आता है। जैसे-मोहन और सोहन की मा को बुलावो। यह मेरा और सोहन का घर है। वहाँ न तेरी बात होगी और न मेरी।

( ८ ) करण कर्ता के परे और कर्म के पूर्व आता है। जैसे, मोहन ने 'छूरी से' आम काटा। 'पैर से' उसे मत मारो।

( ९ ) जिन अर्थों में अपादान कारक होता है तदर्थ-बोधक शब्दों के पूर्व ही वह कारक आता है। जैसे, 'घर से' बाहर हुआ। 'साथ से' अलग हुआ। 'उससे' पिण्ड छूटा।

(क) उत्पन्न, पतन आदि क्रियायोग में अपादान कारक के बाद कर्ता आता है। जैसे—'हिमालय से' गङ्गा निकली। 'पेड़ से' पत्ते गिरे। 'दूध से' मक्खन निकला।

(ख) कर्म, करण और अधिकरण कारक अपादान कारक के बाद आते हैं। जैसे, घर से 'भोजन' लावो। टेबुल पर से कलम 'हाथ से' उठा लो। इस 'घर से' उस घर में जावो।

कभी २ इनमें उलट फेर भी हो जाता है।

(१०) जिस पद के साथ अधिकरण कारक का अन्वय होता है वह उसके पूर्व ही आता है। जैसे—तिल में 'तेल' है। राजा सिंहासन पर 'विराजमान' है।

[क] कालाधिकरण और आधाराधिकरण में कालाधिकरण ही पहले आता है। जैसे—बरसात में आकाश में घटा छायी रहती है। होली में हिन्दुस्तान में आनन्द मनाया जाता है।

(११) पूर्वकालिक वा असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पूर्व और अपने विषयों के अन्त में आती है। जैसे, ब्राह्मण प्रसन्न मन से धीरे धीरे रसोई बना कर इच्छा पूर्वक भोजन करने लगे।

(१२) छन्द में प्रायः पदों का स्थान परिवर्तन हो जाता है। जैसे, 'भजु मन रामचरण अविनाशी' इत्यादि।

(१३) वाक्य में आने वाले अन्यान्य पद जहाँ जिसके साथ अन्वित हों वहीं उन्हें रखना चाहिये। जैसे, भूखों के लिये पाव भर सत्तू ही सब कुछ है।

(१४) वाक्य में जिस पद पर विशेष लक्ष्य रहता है वह सबसे पहले उपर्युक्त नियमों की उपेक्षा करके आता है। जैसे-हाथ ही से उसने सब काम किये हैं। आप ही आप उसने अपने को उन्नत किया है। किससे कौन पूछता है?

(१५) उपर्युक्त सब नियम केवल पथ-प्रदर्शक-मात्र हैं। इनके विपरीत भी स्थान-विशेष और वर्णन-विशेष में वाक्यगत पदों का उलट फेर हो सकता है।

## अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों के यथायोग्य पदों को यथास्थान रखते हुए फिर से लिखोः—

पढ़ कर पुस्तक बातें बहुत सी जान सकते हैं हम। लिखी हुई है बातें वे ही

सब पुस्तकों में बड़े २ विद्वानों ने निकाली हैं अनुसंधान कर जो। पढ़ने से जानी जा सकती हैं पुस्तकों के वे सब बातें। सब कोई पाते हैं पढ़ने में आनन्द पुस्तकों के नयी नयी। अनुराग है आदमियों को पढ़ने में बहुत से ऐसा कि उनको लगता है अच्छा पढ़ना दिन भर। उपकारी है बड़ा अभ्यास ऐसा, पढ़ने से अच्छी २ पुस्तकों के क्योंकि बढ़ता है ज्ञान एक तो दूसरा और सुधारता है चरित्र। साथ २ अभ्यास भी चाहिये डालना चिन्ता करने का पाठ के परन्तु। पढ़कर भी होते पुस्तकें लोग बहुतेरी नहीं चिन्ताशील। ऐसा न करने से हो सकता नहीं होना चाहिये जो।

यह गुण है खास एकता का कि नहीं, हम कर सकते जो काम अकेले किया जा सकता है सहज में मिल कर वह काम साथ औरों के करते हैं साथ काम एक मिल कर जो क्यों न हों दरिद्र चाहे निबल वे लेते हैं कर ही काम। बन पड़ता एकता से नहीं जो नहीं है काम ही ऐसा कोई। तुच्छ है बहुत बूँद एक एक मेह की, बरसती हैं साथ देर तक वे एक जब पर चलता है सोता वह तब, और आता है सामने जो कुछ उसके वेग से ले जा सकता है बहा उसे। सामर्थ्य है जल में कारण एकता के इतनी।

## रोजमर्रा-दैनिक बोलचाल का ढंग (Common Use)

**हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वह अपनी नित्य की बोलचाल में वाक्य-रचना जिस रीति से करते हैं उसे रोज़मर्रा कहते हैं। जैसे, कलकत्ते से पेशावर तक सात आठ कोस पर एक पक्की सराय और एक कोस पर चबूतरा बना हुआ था। यह वाक्य रोज़मर्रे के अनुसार नहीं है। इसकी जगह यों होना चाहिये। कलकत्ते से पेशावर तक सात सात आठ आठ कोस पर एक एक पक्की सराय और कोस कोस भर पर एक एक चबूतरा बना हुआ था।**

**बोलने और लिखने में यथा सम्भव रोजमर्रे का विचार रखना बहुत ही आवश्यकीय है। बिना इसके लिखना या बोलना कौड़ी काम का नहीं।**

रोजमर्रे के प्रयोग का ऐसा कुछ नियम नहीं बन सकता। अच्छे अच्छे लेखकों के लेख बार बार ध्यान देकर पढ़ना और अच्छे अच्छे बोलने वालों की बातचीत ध्यान देकर सुनना— सिवा इसके कदाचित् और कोई उपाय नहीं है।

बोलचाल का रोजमर्रा नया गढ़ा नहीं जा सकता। जैसे, 'पाँच सात' या 'सात आठ' या 'आठ सात पर' अनुमान करके 'छ आठ' या 'आठ छ' या 'सात नौ' बोला जाय तो उसे रोजमर्रा नहीं कहेंगे क्योंकि भाषा में कभी ऐसा नहीं बोलते। इसी तरह 'हर रोज' की जगह 'हर दिन' 'रोज रोज' की जगह 'दिन दिन' या 'आये दिन' की जगह 'आये रोज' बोलना रोजमर्रा नहीं कहा जायगा।

## वाग्धारा-मुहाव्बरा ( Idiom )

कोई वाक्य या वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ न जता कर कुछ और ही विलक्षण अर्थ जताये तो उसे वाग्धारा कहते हैं। जैसे, रणजीत सिंह ने पठानों के 'दांत खट्टे कर दिये'। घर में बैठे हुए यो 'पाँव निकाले' तुमने। इतना कहते ही वह 'पानी पानी हो गया'। उसे अच्छे से 'पाला पड़ा है'। इस बात के सुनते ही उसके 'पेट में घोड़ा कूदने लगा'।

मौलवी अल्ताफ हुसैन हाली का मत रोजमर्रे और मुहाव्बरे के विषय में पढ़ने योग्य है। "रोजमर्रे की पाबन्दी जहाँतक सम्भव हो लिखने और बोलने में जरूरी समझी गई है। यहाँ तक कि वाक्य में जितनी ही रोजमर्रे की पाबन्दी कम होगी उतना ही उसमें लालित्य कम होगा। परन्तु मुहाव्बरा के लिये यह बात नहीं है। मुहाव्बरा जो उत्कृष्ट रीति से बाँधा जाय तो निस्संदेह निकृष्ट आशय को उत्कृष्ट और उत्कृष्ट को उत्कृष्टतर कर देता है। पर हर जगह मुहाव्बरे का बाँधना

ऐसा कुछ आवश्यक नहीं। बिना मुहाव्बरे के भी ओजस्वी वाक्य हो सकता है। मुहाव्बरा मानों मनुष्य के शरीर में कोई सुन्दर अंग है, और रोजमर्रे को ऐसा जानना चाहिये, जैसे अंगों का तारतम्य मनुष्य के शरीर में। लोग साधारणतः उसी लेख को बहुत पसन्द करते हैं जो रोजमर्रे पर ध्यान देकर लिखा गया हो, और जो रोजमर्रे के साथ उसमें मुहाव्बरे की चाशनी भी हो तो वह उनको और भी अधिक स्वाद देती है।
[पण्डित केशवरामभट्ट के 'हिन्दी व्याकरण से ये दोनों अंश उद्धृत हैं]

## वाक्यभेद ( Kinds of Sentences )

वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—साधारण, मिश्र और संयुक्त।

साधारण वाक्य—जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय हो वह साधारण वाक्य है। जैसे, चिड़िया चह चहाती है। लड़का पोथी पढ़ता है।

## उद्देश्य या कर्ता ( Subject )

उद्देश्य इतने प्रकार के हो सकते हैं:—

( क ) संज्ञा—'श्याम' आता है। ( ख ) सर्वनाम—'वह' आया। ( ग ) विशेषण—'सन्तोषी' सदा सन्तुष्ट रहते हैं। ( घ ) सामान्य क्रिया—'झूठ बोलना' बड़ा पाप है। ( ङ ) वाक्यांश—'आलसी हो कर पड़ा रहना' बड़ा दुखद है।

## उद्देश्य के विस्तार (Adjuncts to Subject)

( क ) विशेषण से—'सुशील' लड़का पढ़ता है। ( ख ) सम्बन्ध से—'श्यामलाल का' लड़का। ( ग ) भिन्न २ वाक्यांशों के द्वारा—'धर्मात्मा कहला कर' तुम नीच काम

करते हो। 'धन जन से परिपूर्ण' होने पर भी तुम सुखी नहीं हो। [ घ ] क्रियाद्योतक से—'हिलती डुलती' नाव डूब गयी। [ ङ ] संख्या और परिमाण से 'एक' रुपये में 'भर पेट' भोजन नहीं होगा। [ च ] सर्वनाम से [ निर्देश और प्रश्न]—'यह' काम नहीं तो 'कैसा' काम चाहते हो। ऐसे ही और तरह से भी उद्देश्य का विस्तार हो सकता है।

## विधेय या क्रिया (Verb)

जिस वाक्य में क्रिया अकर्मक हो उसमें विधेय के साथ ये सब आ सकते हैं।

[ क ] साधारण क्रिया—लड़का 'खेलता है'। [ख] संज्ञा-युक्त क्रिया—मोहन 'ब्राह्मण' है। [ ग ] सामान्य धातु-रूप-युक्त क्रिया—मैं 'पूछने' आता हूँ। [ घ ] क्रियाविशेषण-युक्त क्रिया—मैं 'वहाँ' गया। [ङ] विशेषणयुक्त क्रिया—वह बुद्धिमान' है। [ च ] विधेयार्थकपूरकयुक्त क्रिया—राधा 'कृष्ण' बन गयी। [ छ ] क्रियाद्योतक अव्यय वा विशेषणयुक्त क्रिया—मैं 'दौड़ते दौड़ते' थक गया। [ज] पूर्वकालिकक्रियायुक्त क्रिया—वह 'खाकर' सो गया। [झ] वाक्यांश युक्त क्रिया-मैं 'भूख के मारे' मर गया।

## विधेय के विस्तार (Adjuncts to Predicate)

[ क ] कर्म से—वह 'ग्रन्थ' पढ़ता है। [ ख ] क्रिया-विशेषण से—'धीरे' २ पढ़ता है। [ ग ] वाक्यांशों से—तुम 'इतनी रात गये' आये। वह 'अपने बाप के साथ' आया। [ घ ] अन्याय कारकों से—राम ने श्याम के लिये छुरी से कलम बनायी।

[ कर्म आदि कारकों के भी, जितने उद्देश्य के प्रकार और विस्तार बताये गये हैं, प्रकार और विस्तार हो सकते हैं। उद्देश्यविधेय के वर्द्धक भाग भी विशेषण आदि से बढ़ाये जा सकते हैं ]

## मिश्र वाक्य [Complex Sentence]

परस्पर सम्बन्ध रखते हुए प्रधान और अप्रधान वाक्यों के संयोग से जो पूर्ण वाक्य संगठित होता है वह मिश्रवाक्य कहलाता है। जैसे—यद्यपि वह देखने में दुबला मालूम होता है तथापि बड़ा बलवान है।

मिश्रवाक्य के अधीन जो वाक्य रहते हैं वे तीन प्रकार के होते हैं। संज्ञा-वाक्य, विशेषण-वाक्य और क्रिया-विशेषण-वाक्य।

## संज्ञा वाक्य [Noun Clause]

जो अप्रधान वाक्य [Subordinate clause] संज्ञा के समान व्यवहृत होते हैं वे संज्ञा-वाक्य कहाते हैं। संज्ञा-वाक्य इतने प्रकार के हो सकते हैः—

कर्ता—इससे ज्ञात होता है कि "ऐसा करना अच्छा न होगा"। कर्म--कौन कहता है कि 'तुम चोर हो'। उपयुक्त पद वा समानाधिकरण संज्ञा [Apposition]—उसका यह विचार कि 'मेरी ही जीत होगी' भ्रम सिद्ध हुआ। क्रिया पूरक—वह जानता है कि 'अकाल पड़ेगा'।

कहीं २ अधीन और प्रधान वाक्यों का सयोजक 'कि' लुप्त भी रहता है। जैसे, कौन बिना जाने कह सकता 'तुम्हारे मन में क्या है'? उसने कहा 'मैं न पढूँगा'।

## विशेषण वाक्य ( Adjective Clause )

जब अप्रधान वाक्य विशेषण-रूप में व्यवहृत होते हैं तब वे विशेषण वाक्य कहाते हैं। विशेषण वाक्य इतने प्रकार के हो सकते हैं:—

कर्ता—उसके पैर में एक चक्र है 'जो सौभाग्य का सूचक है'। कर्म—वह 'जो पाता है' वही खा जाता है। क्रिया-पूरक—मैं मोहन को अच्छी तरह से जानता हूँ 'जो सोहन का लड़का है'।

प्रधान वाक्य के साथ विशेषण-वाक्य, सम्बन्ध-वाचक सर्वनाम और क्रिया-विशेषण से संयुक्त रहते हैं। जैसे, जैसी संगति कीजिये तैसी उपजे बुद्धि। जो फरा सो झरा। जो बरा सो बुताना। जिसकी लाठी उसकी भैंस। जोई पिया को भावै सोई सोहागिन। जैसा देश वैसा भेस। जहाँ साँझ तहाँ बिहान।

## क्रियाविशेषण वाक्य ( Adverbial Clause )

जब अप्रधान वाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया के क्रिया-विशेषण होकर आते हैं तब वे क्रिया-विशेषण-वाक्य कहाते हैं। वे इतने प्रकार के हो सकते हैं:—

कालवाचक—'जब जाना था' तब चला क्यों न गया? स्थानवाचक—'जहाँ पानी रहता है' वहाँ कीच होता ही है। रीतिवाचक—वह मुझपर ऐसा झपटा 'जैसे कबूतर पर बाज'। कार्यकारणवाचक—वह परिश्रम इसलिये करता है कि 'पास हो जाऊँ।'

क्रियाविशेषण वाक्य प्रधान वाक्य से जब तब, जहाँ

तहाँ, ज्यों, जैसे, ऐसे, जो, यदि, तो इत्यादि शब्दों से जोड़े जाते हैं।

एक पूर्ण वाक्य के साथ दो तीन भी अपूर्ण वाक्य हो सकते हैं। जैसे. मोहन जो एक धनी का लड़का है, जिसे कल ही समझा दिया था आज भी बिना पूछे चला गया।

## संयुक्त वाक्य ( Compound Sentence )

जिस वाक्य में दो या अधिक साधारण या मिश्र वाक्य परस्पर निरपेक्ष होकर मिलते हैं वह संयुक्त वाक्य है।

संयुक्त वाक्य चार भागों में बाँटे जा सकते हैं। संयोजक, विभाजक, विरोध-दर्शक और हेतु-सूचक।

## संयोजक वाक्य ( Cumulative Sentence )

संयोजक वाक्य में केवल एक वाक्य दूसरे से जोड़ा हुआ रहता है। जैसे, राम जाता है और श्याम आता है। वह आगे बढ़ गया और तू पीछे रह गया। इसमें और, फिर, कभी २, इधर उधर आदि से वाक्य संयुक्त किये जाते हैं।

## विभाजक वाक्य ( Alternative Sentence )

वियोजक वाक्य में एक दूसरे के साथ व्यावृत्ति रहती है। जैसे—या तो मेरा कहा मानिये नहीं तो मुझसे लड़िये। मैं तुमको समझाता हूँ न कि बहकाता हूँ। इसमें नहीं तो, न कि, या तो आदि से वाक्य संयुक्त किये जाते हैं।

## विरोधदर्शक वाक्य( Adversative Sentence )

विरोध-दर्शक वाक्य में परस्पर विरोध रहता है। जैसे, वह पढ़ सकता है पर लिख नहीं सकता। प्रिय बोलना

चाहिये किन्तु असत्य नहीं। पर, वरन, तो भी, किन्तु आदि से इसमें वाक्य संयुक्त होते हैं।

## हेतुसूचक वाक्य (Illative Sentence)

हेतुसूचक वाक्य में एक से कारण और दूसरे से परिणाम सूचित होता है। जैसे, बड़ी वर्षा हो रही है 'इसलिये' मैं जा नहीं सकता। आठ बजे तक लौट आना क्योंकि सवा आठ में फाटक बन्द हो जाता है। इसमें क्योंकि, इससे, इसलिये, आदि से वाक्य संयुक्त होते हैं।

## संकुचित संयुक्त वाक्य (Contracted Sentence)

संयुक्त वाक्यों में जब उद्देश्य या विधेय की पुनरावृत्ति नहीं करते और अव्यय से काम चला लेते हैं तब वह संकुचित संयुक्त वाक्य कहाता है। जैसे-मैं उसे भोजन और कपड़ा दूँगा। उस पेड़ में न फूल थे न फल। मोहन पढ़ता है, लिखता है और खेलता भी है।

### अभ्यास ।

वाक्य किसे कहते हैं? वाक्यों के दो मुख्य अंग कौन २ हैं? वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उनके लक्षण क्या हैं? उद्देश्य और विधेय किसे कहते हैं? उद्देश्य कितने प्रकार के होते हैं और कितने प्रकार के विधेय? उद्देश्य का कितने प्रकारों से विस्तार होता है और कितने प्रकारों से विधेय का? प्रधान वाक्य और अधीन वाक्य किसे कहते हैं? अधीन वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? प्रत्येक के कितने उपभेद हैं? संयुक्त वाक्य के कितने भेद हैं और प्रत्येक का क्या लक्षण है?

नीचे लिखे वाक्यों के भेद बताओ। यदि वाक्य मिश्र हों तो उनके अधीन वाक्यों के भेद और प्रकार भी बतावो। यदि संयुक्त वाक्य हों तो उनके भी भेद बताओ—

कृपा करके इस गरीब लड़के को कुछ दान दीजिये। मैं आप से नम्रतापूर्वक प्रार्थना करता हूँ। कागज कैसे बनता है, मैं जानना चाहता हूँ। राम पहले दर्जे में पास होगा, ऐसी सबों की आशा थी। वह पटने जायगा या नहीं, तुम कह सकते हो? राम तुम्हारे साथ झगड़ा करेगा, यह असम्भव है। जो लकड़ा यहाँ आया था उसे तुम पहचानते हो? जो बालक सच बोलता है उसे सब कोई प्यार करते हैं? सूरज और चन्द्रमा पृथिवी की तरह गोल हैं। तुम उससे मिलना और घर आने को कहना। यदु ने तुम्हें गाली दी है और मारने के लिये धमकाया है। व्यास और वाल्मीकि दोनों भारतवर्ष के प्रसिद्ध कवि थे। उसने श्याम के साथ केवल झगड़ा ही नहीं किया है, उसे खूब मारा भी है। जो बड़ों की निन्दा करता है वही निरा दोषी नहीं होता, जो निन्दा सुनता है उसे भी दोष लगता है। यह लड़का बुद्धिमान है पर सुन्दर नहीं। हम जो कहते हैं वह सुनो, नहीं तो दुख पावोगे। राम या श्याम उसके साथ था। न वे बड़े धनी हैं और न गरीब। तुम जाओ या मैं जाऊँ, एक ही बात है। चाहे वह करे चाहे तुम। तुम मन से पढ़ा करना।

## वाक्य-विश्लेषण [Analysis]

**वाक्य के मुख्य भागों को अलग करना, जिनसे वह बना है और उन सब भागों का परस्पर सम्बन्ध बताना वाक्य-विश्लेषण कहाता है। वाक्य-विश्लेषण को कोई २ वाक्य-विग्रह, वाक्य-विभजन, वाक्य-विन्यास और वाक्य-पृथक्करण आदि भी कहते हैं।**

**वाक्य-विश्लेषण करने में सब से पहले वाक्य का प्रकार बताना चाहिये कि वह साधारण वाक्य है या संयुक्त या मिश्रित।**

**साधारण वाक्य हो तो उसके उद्देश्य और विधेय बतावो। यदि उद्देश्य के विशेषण हों और विधेय के पूरक, कर्म, आदि कारक विधेयार्थवर्द्धक या इनके विशेषण आदि हों तो उन**

सबों को भी अलग अलग बताते हुए उनका परिचय लिखना चाहिये।

यदि मिश्र वाक्य हो तो प्रधान वाक्य को अलग बता कर जितने अधीन वाक्य हों उन्हें भी बतलावो। फिर सरल वाक्य के विशेषण आदि के समान उनके प्रत्येक अंश का परिचय कराना चाहिये। इस बात का ध्यान रहे कि उद्देश्य के गुण वाचक आदि उद्देश्य के साथ और विधेय, विधेयार्थ-वर्द्धक आदि विधेय के साथ यथास्थान रहें।

संयुक्त वाक्य हो तो परस्पर निरपेक्ष वाक्यों को अलग २ बतावो। जिन अव्ययों द्वारा वाक्य संयुक्त वा वियुक्त हों उन्हें दिखलावो। फिर प्रत्येक वाक्य के सब अंशों को पहले ही के समान परिचय कराना चाहिये।

पृथक्करण में वाक्यों का यदि कोई अंश लुप्त हो तो उसे भी व्यक्त कर देना चाहिये।

पृथक्करण दो प्रकार से किया जाता है। एक सिलसिले वार और दूसरा कोष्ठक द्वारा शब्दों को रख कर के। कोष्ठक का ढंग ही काम में बहुत लाया जाता है।

### वाक्य-पृथक्करण के उदाहरण।

सिलसिलेवार रख करके वाक्य विश्लेषण।

#### साधारण वाक्य।

सुशील बालक पूज्य पिता की उचित सेवा तन मन से करने लगा।

वाक्य का प्रकार—साधारण वाक्य।

उद्देश्य—बालक (कर्ता)

उद्देश्य का विशेषण—सुशील।

कर्म—सेवा। [ विधेय का विस्तार ]

कर्म का विशेषण - उचित और विस्तार—पूज्य पिता की
विधेय—करने लगा।

विधेय का विस्तार—तन मन से।

कोष्टक द्वारा वाक्य-विश्लेषण।

| उद्देश्य | | विधेय | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| उद्देश्य वा कर्त्ता | कर्ता का विशेषण | विधेय वा क्रिया | कर्म विधेय का विस्तार | कर्म का विशेषण विस्तार | विधेय का विस्तार |
| बालक | सुशील | करने लगा | सेवा | उचित पूज्य पिताकी | तन मन से |

मिश्र वाक्य।

(क) जो दूसरे की सहायता के बिना आत्मोन्नति की चेष्टा करता है उसका सहायक परमेश्वर होता है।

वाक्य का प्रकार—मिश्र वाक्य।

प्रधान वाक्य—उसका सहायक परमेश्वर होता है।

अधीन वाक्य—जो दूसरे की ......चेष्टा करता है।

प्रधान वाक्य।

उसका सहायक परमेश्वर होता है।

उद्देश्य—परमेश्वर (कर्ता)

विधेय—होता है (क्रिया)

विधेय का विस्तार वा पूरक—उसका सहायक (विधेय-विशेषण)।

अधीन वाक्य।

जो दूसरों की सहायता के बिना आत्मोन्नति की चेष्टा

करता है—(प्रधान वाक्य के सम्बन्ध पद 'उसका' विशेषण।)

उद्देश्य—जो ( कर्ता )

उद्देश्य का विस्तार—दूसरे की सहायता के बिना ( कर्तृ-पद के विशेषण स्थानीय वाक्यांश)।

विधेय—करता है ( क्रिया )।

विधेय का विस्तार—चेष्टा ( कर्म )।

कर्म का विस्तार—आत्मोन्नति की।

(ख) पहले जिसका सम्मान गुरु-तुल्य किया अब उसका निरादर किस प्रकार कर सकता हूँ।

| वाक्य | वाक्य का प्रकार | उद्देश्य | | विधेय | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | उद्देश्य वा कर्ता | कर्ता का विशेषण | विधेय वा क्रिया | कर्म | कर्म का विस्तार | विधेय का विस्तार |
| अब उसका निरादर किस प्रकार कर सकता हूँ। | प्रधान वाक्य | मैं ( लुप्त ) | | कर सकता हूँ | निरादर | उसका | अब किस प्रकार (अव्यय) |
| पहले जिसका सम्मान गुरु-तुल्य किया | अप्रधान वाक्य | मैंने ( लुप्त ) | | किया | सम्मान | गुरु तुल्य जिसका | पहले (अव्यय) |

संयुक्त वाक्य।

(क) मैं आगे बढ़ गया और वह पीछे रह गया।

मैं आगे बढ़ गया—निरपेक्ष प्रधान वाक्य।

वह पीछे रह गया—निरपेक्ष प्रधान वाक्य।
और—संयोजक अव्यय।
मैं—उद्देश्य।
बढ़ गया—विधेय।
वह—उद्देश्य।
रह गया—विधेय।
आगे पीछे—विधेय-वर्धक (अव्यय)

(ख) वे अपने धर्म में सदा दृढ़ रहते हैं और अपना कर्तव्य पालन करते हैं।

| वाक्य | वाक्य का प्रकार वा मेल। | संयोजक वा वियोजक शब्द | उद्देश्य | उद्देश्य का विस्तार | विधेय | कर्म | कर्म का विस्तार | विधेय का विस्तार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वे अपने धर्म में दृढ़ रहते हैं | प्रधान वाक्य | | वे | | दृढ़ रहते हैं | | | अपने धर्म में |
| और | | और | | | | | | |
| अपना कर्त्तव्य सदा पालन करते हैं | प्रधान वाक्य | | वे (लुप्त) | | पालन करते हैं | कर्त्तव्य | अपना | सदा |

यह कोष्टक तीन प्रकार के वाक्यों के विश्लेषण में काम आ सकता है। इसी प्रकार पद्यों का भी विश्लेषण करना चाहिये।

## अभ्यास।

नीचे लिखे साधारण, संयुक्त और मिश्र वाक्यों का पृथक्करण करो—

हरिद्वार में गङ्गाजी के सोतों में बड़ी २ मछलियाँ दिखाई देती हैं। राम के बाग में बहुत से बड़े २ मेवे के पेड़ हैं: सिन्धुनद हिमालय से निकल कर अरब सागर में गिरा है। विद्यालय में जाने पर उनका दर्शन होगा। राम को लोकनिन्दा का भय था इससे उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया। वह देखने में दुबला है पर बहुत ही बलवान है। उसका मन कुछ तो धर्म की ओर प्रवृत्त होता है और कुछ स्वार्थ की ओर झुकता है। आप अभी जाइये नहीं तो गाड़ी न मिलेगी। साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। सूर्य का उदय हुआ और चिड़ियायें अपने २ घोसलों में चहचहाने लगीं। वह कौनसा आदमी है जिसने महाराणा प्रताप सिंह का नाम न सुना हो। मैं नहीं जानता कि इस घर में कौन रहता है। अब क्या वक्तव्य है सो मैं कहता हूँ। जब मैं बोलूँ तब मुझे कहना। जब तक सूर्य चन्द्र रहेंगे तब तक आप की यह अचल कीर्ति बनी रहेगी। उसको बल है पर हिम्मत नहीं है। सवेरे उठने से स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है। जो चोरी करता है उससे सभी घृणा करते हैं। इससे राम की बड़ी हानि होती है।

## विराम-चिन्ह-विचार ( Punctuation )

**वाक्य के उच्चारण करने के समय विच्छेदस्वरूप जो जिह्वा का विश्राम है उसे ही विराम कहते हैं। इन विच्छेदों के सूचक कई तरह के भिन्न २ चिन्ह हैं जिन्हें विराम-चिन्ह (Stops) कहते हैं। पाठ करने के समय इन चिन्हों से विश्राम का न्यूनाधिक्य और एक पद के साथ दूसरे पद का वाक्य में कैसा सम्बन्ध है, सूचित होता है।**

**पहले के लेखों में जहाँ कहीं पूर्ण विराम (।) के अतिरिक्त अन्यान्य चिन्हों का प्रयोग प्रायः देखा नहीं जाता। इसमें सन्देह नहीं कि पुराने लेखक अपने लेखों को विभूषित करने**

के लिये कुछ और चिन्हों के प्रयोग न करते हों, पर उनका कोई सम्बन्ध इन वर्णनीय चिन्हों से नहीं था।

अंग्रेजी की देखा-देखी आजकल हिन्दी में भी अंग्रेजी ही चिन्ह अधिकाधिक प्रयुक्त होने लगे हैं। पहले के जटिल से जटिल वाक्य क्यों न हों पर उनके लिखने का कुछ ढंग ही ऐसा था कि विना चिन्हों ही के उनका सहज ही बोध हो जाता था। यद्यपि आजकल ये चिन्ह बहुत प्रचलित हो रहे हैं तथापि इनका यथार्थ प्रयोग बहुत ही कम लोग करते हैं। विराम-चिह्नों का जितना कम प्रयोग हो उतना ही अच्छा। विराम-चिन्हों को विना दिये जहाँ अर्थ और सम्बन्ध की स्पष्टता न हो वहाँ ही इनका प्रयोग होना उचित है।

विराम-चिह्नों के प्रयोग में भिन्न २ वैयाकरणों के भिन्न २ मत हैं। उन्होंने अपने २ विचारानुसार इन चिन्हों के प्रयुक्त होने के स्थान लिखे हैं। पर उनमें अनैक्य है। इसका कारण भिन्न २ लेखसरणी ही है। क्योंकि 'मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना' के कारण हिन्दी की लेख-प्रणाली कोई ऐसी संगठित ही नहीं हुई कि जिसका अनुसरण सब करें और विराम-चिन्ह की भी तदनुसार स्थिरता हो जाय। जो कुछ हो, यहाँ इन चिन्हों के सम्बन्ध में कुछ लिखना आवश्यक है।

### अल्पविराम ( Comma )

यह चिन्ह [ , ] उच्चारण में अत्यल्प विराम सूचित करता है। यह नीचे लिखे हुए स्थानों पर प्रयुक्त होता है। जैसेः—

[क] जिन पदों, पदांशों वा वाक्यों में संयोजक या वियोजक अव्यय आता है उसके पूर्व में—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न परस्पर मिले। तुम, वह, चाहे मैं, कोई कहे। वह रोज आता है, काम करता है और चला जाता है।

[ख] वह, यह, तब, या आदि जहाँ लुप्त हो वहाँ—मैं जो कहता हूँ, कान लगा कर सुनो। उन्हें कब फुरसत होगी, कह नहीं सकता। जब करना ही है, कर डालो। कह दिया, करो, न करो।

[ग] पर, इससे, अतएव, क्योंकि, जिससे, वस्तुतः आदि शब्द यदि वाक्य के मध्य में प्रयुक्त हों तब इनके पहले—स्कूलों की किताबों की लिपियाँ जुदा जुदा चाहे भले ही हों पर भाषा उनकी उर्दू ही रहे। यह लड़का सत्यवादी है, इसीसे लोग इसे चाहते हैं। मैं वहाँ न जाऊँगा, क्योंकि वहाँ बड़ी भीड़ है। ऐसा काम करना, जिससे नाम बदनाम न हो। जो उसने कहा, वस्तुतः अक्षर २ ठीक है। उसने श्रम किया था, अतएव पास हो गया।

[घ] अपनी उक्ति कहने में—उन्होंने कहा, एक काम और कीजिये। मैं देखता हूँ, तुम दिन रात खेल करते हो।

[ङ] विशेष और विशेषण, कर्ता-कर्म और क्रिया, कोई पद और उसका सम्बन्धी अन्य पद, ये यदि बीच में किसी पद या वाक्यांश के आ जाने से दूर पड़ जाँय तो इनके पूर्व में और परे—उन्होंने तीन चार हजार रुपये की आमदनी, जो उन्हें बारिष्टरी से होती थी, छोड़ दी! मोहन, जो सब कुछ जानता है बड़ा गुणी है। मेरी विद्या-बुद्धि, भला तुमसे क्या छिपी है। एक दिन, जब मैं पुस्तक पढ़ रहा था, एक वाक्य पढ़कर बहुत विस्मित हुआ। मेरी बात, घर बाहर, कहीं नहीं सुनी जायगी।

[च] सम्बोधन के परे—प्रिय महाशय, आप से निवेदन है। 'राम नाम सुमरन कर, बुड्ढे, और काम से अब मुख मोड़'

[ छ ] अन्यान्य स्थानों में साधारण विश्राम, सम्बन्ध की स्पष्टता और विषय-बोध की प्राञ्जलता में—इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में प्रसिद्ध जैन विद्वान्, परलोकवासी, श्रीमद्विजयानन्द सूरि, उर्फ आत्माराम जी ने आपकी बहुत मदद की थी। वह बर्तन गोल, दो फीट लम्बा, एक फीट चौड़ा, और आठ इञ्च गहरा था। ४५ रुपये महीना, उस कोठी में रहने के लिये, भाड़ा देना पड़ता है। लेखक श्रीयुत दिलीप सिंह, मौजा गहरँदा, डाक खाना धुनहीं खेरा, जिला उन्नाव।

## अर्द्धविराम [ Semicolon ]

इस चिन्ह [;] से अल्पविराम की अपेक्षा अधिक विराम और एक वाक्य के साथ दूसरे वाक्य का दूर सम्बन्ध बोध होता है। जैसे, धर्मचिन्ता और ईश्वरचिन्ता में क्लेश नहीं है; बल्कि सुख ही है। एक तो यह कि वे बड़े विद्वान् हैं; उनको सभी विषयों का थोड़ा बहुत ज्ञान है। पर सरकार साहब हमारी चिट्ठी साफ हजम कर गये; डकार तक न ली। उन्होंने देखा कि उनके देशवासी वस्ती में रहने नहीं पाते; उनके पास बाजारों में दूकानें खोलने नहीं पाते; होटलों और रेलों में उनके साथ बैठने नहीं पाते। मैंने एक अपूर्व फल पाया है; इसके खाने से आदमी अमर होता है; यह फल आप ही के योग्य है; इसे ग्रहण कीजिये। मैं कहता हूँ; मान लीजिये। पृष्ठ-संख्या ३४०; आकार छोटा; जैनमित्र-कार्यालय, हीरा बाग, बम्बई से प्राप्य। छपाई और कागज उत्तम, जिल्द बँधी हुई; मूल्य १) रुपया।

## अन्यान्य कई चिन्ह ( Various marks )

'पूर्ण विराम' [ । ] [Fullstop] वाक्य सम्पूर्ण होने पर इस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे, यह बड़ी अच्छी पुस्तक है।

'प्रश्न चिन्ह' [ ? ] Note of Interrogation— प्रश्न-बोधक वाक्यों में इसका प्रयोग होता है। जैसे, किस कक्षा में पढ़ते हो ? तुम्हारा क्या नाम है ? कहीं ऐसे स्थानों पर नहीं आता। जैसे, तुम क्या पढ़ते हो, यह उसने पूछा।

विस्मयादि सूचक चिन्ह [!] Note of Admiration— यह चिन्ह विस्मय, शोक, हर्ष, भय आदि मन के आवेग प्रकाश करने के समय आता है। जैसे, वाह री वीरता ! हाय ! क्या अन्धेर हो गया ! वाह ! आज कैसी खुशी का दिन है ! सब लोग घबड़ा कर एक साथ बोल उठे क्या हुआ ! असम्भव और सम्बोधन में भी इसके प्रयोग दीख पड़ते हैं। जैसे, त्रिकालदर्शी [!] लेड बीटर। ऐ मेरे दोस्तो ! अरी चण्डालिन! सम्बोधन में कामा भी आता है।

'योजक' [-] Hyphen—समास और पद-विभाग में इसका प्रयोग होता है। जैसे, कवि-कुल-कमल-दिवाकर।

'निर्देशक' [—] Dash—यह चिन्ह और किसी वक्तव्य के भीतर दूसरा वक्तव्य प्रकाशित करने, किसी वाक्य के विवरण लिखने अथवा किसी विषय के उदाहरण देने आदि में प्रयुक्त होता है। जेसे, ईश्वर—आप उसे राम कहें चाहे रहीम—एक ही है। एक साप्ताहिक पत्र—आधा हिन्दी में, आधा अंगरेजी में—निकलता है। यह भारत के लिये—विशेष करके वङ्ग देश और वङ्ग भाषा के लिये—बड़े ही

गौरव की या बात है। रवि बाबू को—डाक्टर आफ लिटरेचर—नामक पदवी से पुरस्कृत करने का निश्चय किया है। वाक्य तीन प्रकार के हैं—सरल, मिश्र और यौगिक। इन दरजों में दो तरह की रीडरें पढ़ाई जाँय—अर्थात् उर्दू और हिन्दी की रीडरें जुदा जुदा रहें। यही बहुत है—सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। देखिये, आप ही के भाई बन्द आपकी—नहीं, हमारी—भाषा के विषय में क्या कहते हैं।

इस डेश को [ :—] इस रूप में होने से उसके आगे के कुछ वक्तव्य का बोध होता है—जैसे, वे लिखते हैं:—"राम बड़ा ही सुशील था।" नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करोः—इत्यादि।

"उद्धरण चिन्ह [ " " ] Quotation—दूसरे के वाक्यों को अविकल उद्धृत करने में यह चिन्ह प्रयुक्त होता है। जैसे, उसने मेरी घुड़की पर कहा कि 'यहाँ कोहँउ भतिया कोउ नाहीं।"

'बापावरण या बन्धनी' [ ] Brackets—किसी पद वा वाक्य का अर्थ स्पष्ट करने के लिये और कोई अन्य वाक्य लिखने के लिये यह चिन्ह प्रयुक्त होता है। जैसे, तुमने उस जटिल [ सब की समझ में न आने वाली ] भाषा का आशय क्या निकाला ?

' लोप-चिन्ह [⋯] Mark of Ellipses—वाक्य में यदि कुछ अक्षर अप्रकाश्य वा अनावश्यक हों, अथवा आगे कुछ वक्तव्य हो और वह न लिखा जाय तब यह चिन्ह प्रयुक्त होता है। "जैसे वह शब्द⋯मैं नहीं कह सकता। आगे⋯⋯ रघुराई। उसके बाद⋯⋯⋯

### अभ्यास।

नीचे लिखे गद्य-भाग को यथास्थान, यथायोग्य, विराम-चिन्हों को देकर फिर से लिखोः—

प्रेसिडेन्ट। मैं लोगों से नियत समय पर ही मुलाकात करता हूँ यदि किसी ने मुझसे दो बज कर बाईस मिनट पर मिलने की प्रतिज्ञा की है तो दो बज कर बाईस मिनट पर ही वह मुझ से मिल सकता है मुझे जिस से दो बज कर छब्बीस मिनट पर मिलना है उस से मैं उसी समय उसी मिनट मिलता हूँ।

कभी कभी प्रेसिडेन्ट साहेब के साथ निश्चित समय तक बात चीत कर चुकने पर कोई २ मुलाक़ाती कह बैठता है कि महाशय अब मुझे आप से कुछ अधिक गौरव युक्त विषय पर वार्तालाप करना है इस पर प्रेसिडेंट साहब जेब से घड़ी निकाल कर उससे कह देते हैं आपका समय होगया एक और सज्जन दरवाजे पर खड़े हैं मुझे खेद है मैं आप से और जियादह बात चीत नहीं कर सकता।

(सरस्वती से बिना चिन्ह के उद्धृत)

## छन्दोनिरूपण (Prosody)

छन्दोनिरूपण में छन्दों के नियम आदि बताये जाते हैं।

छन्द वह है जिसमें मात्रा या वर्ण की गिनती रहती है और उसमें प्रायः चार पाद या चरण रहते हैं। छन्द को पद्य भी कहते हैं। गद्य में मात्रा वा वर्ण की गिनती का कोई बन्धन नहीं रहता।

गुरु और लघु के विचार से वर्ण दो प्रकार के होते हैं। ह्रस्व या एकमात्रिक को लघु और दीर्घ वा द्विमात्रिक को गुरु कहते हैं।

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ ये सब स्वर और इनसे युक्त सब वर्ण दीर्घ कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त अन्यान्य स्वर अ, इ, उ, और इन से युक्त वर्ण ह्रस्व गिने जाते हैं।

छन्द में दीर्घ का चिन्ह टेढ़ी लकीर [ऽ] ड के समान होती है और ह्रस्व का चिन्ह सीधी पाई के समान [।] ऐसा होता है।

अनुस्वार और विसर्ग से युक्त ह्रस्व अक्षर भी दीर्घ ही गिने जाते हैं। जैसे, अं अः। संयुक्त अक्षर के पहले के ह्रस्व अक्षर की भी गणना दीर्घ ही में होती है। जैसे 'पक्का' इस शब्द में 'प' संयुक्त 'क' शब्द के आदि में होने के कारण दीर्घ है, इस से 'पक्का' शब्द में चार मात्रायें हुईं। पदान्तर में संयुक्ताक्षर होने से पूर्वपद के अन्त का ह्रस्व अक्षर दीर्घ नहीं समझा जाता। जैसे, 'की तुम श्यामल गौर शरीरा।' गुरु भी यदि लघु की रीति से पढ़ा जाय तो वह भी लघु ही होता है। जैसे, शरद जुन्हैया मोदप्रद करत कन्हैया रास! जिसमें वर्ण की गिनती रहती है वह वर्णवृत्त और जिसमें मात्रा की गिनती रहती है वह मात्रा-वृत्त कहाता है। वृत्त का अर्थ छन्द है।

वर्णवृत्त के आठ गण होते हैं। प्रत्येक गण में तीन २ वर्ण होते हैं। उनके रूप, नाम, देवता और फल इस प्रकार हैं। इनके नाम और रूप का अभ्यास रखना बहुत आवश्यक है।

गणों के रूप, नाम, देवता और फल।

| संख्या | रूप | नाम | देवता | फल |
|---|---|---|---|---|
| १ | ऽऽऽ | मगण | पृथ्वी | मंगल |
| २ | ।ऽऽ | यगण | जल | वृद्धि |
| ३ | ऽ।ऽ | रगण | अग्नि | मृत्यु |
| ४ | ।।ऽ | सगण | वायु | विदेश |
| ५ | ऽऽ। | तगण | आकाश | शून्य |
| ६ | ।ऽ। | जगण | भानु | रोग |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ७ | ऽ॥ | भगण | चन्द्र | कीर्ति |
| ८ | ॥। | नगण | नाग | सुख |

तीन गुरु का मगण, आदि लघु यगण, मध्य लघु रगण, अन्त्य गुरु सगण, अन्त्य लघु तगण, मध्य गुरु जगण, आदि लघु भगण और तीन लघु का नगण होता है। मगण, नगण, भगण और यगण ये चारों छन्द के आदि में शुभ हैं और शेष चारों अशुभ। मात्रा वृत्त के पाँच गण होते हैं। वे ये हैं:—

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | टगण | अर्थात् | छ | मात्रा | वाला | ऽऽऽ |
| २ | ठगण | ,, | पाँच | ,, | ,, | ऽऽ। |
| ३ | डगण | ,, | चार | ,, | ,, | ऽऽ |
| ४ | ढगण | ,, | तीन | ,, | , | ऽ। |
| ५ | णगण | ,, | दो | ,, | ,, | ऽ |

गण जानने से छन्दो-भेद के नियम समझने में सुगमता होती है। छन्दों के प्रस्तार, नष्ट, उदिष्ट आदि विस्तारभय से न लिखे गये। उनका यहाँ लिखना भी अनावश्यक है।

वृत्त के तीन भेद होते हैं। समवृत्त, अर्धसमवृत्त और विषमवृत्त।

### समवृत्त।

जिनके चारो चरण तुल्य होते हैं वे समवृत्त कहाते हैं। जैसे.

चौपाई।

जब जब मातु करिहिं सुधि मोरी।
होइहिं प्रेम विकल मति भोरी॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी।
सुन्दरि समुझायहु मृदु बानी॥ [ रामायण ]

इसके चारो चरणों में सोलह २ मात्रायें हैं।

## अर्द्धसमवृत्त।

जिनके दो चरण सम हों और दो चरण विषम अथवा जिनके दो से अधिक चरण समान न हों। जैसे—

### दोहा।

मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परे, श्याम हरित द्युति होय॥ [बिहारी]

इसके पहले और तीसरे चरणों में तेरह २ मात्रायें हैं और दूसरे तथा चौथे चरणों में ग्यारह २।

## विषमवृत्त।

जिसके चारों पद असमान होते हैं वह विषमवृत्त है। यह वृत्त हिन्दी में बहुत कम प्रयुक्त होता है।

२६ वर्ण से अधिक वर्ण वाले वृत्त दण्डक कहलाते हैं। इसके दो भेद हैं—१ गणबद्ध। २ मुक्तक। गणबद्ध दण्डक में वर्णों की संख्या गणों के अनुसार नियमित होती है। मुक्तक में केवल वर्णों की संख्या नियत होती है, गण नियत नहीं होते। और ३२ मात्राओं से अधिक मात्रा वाले छन्द मात्रिक दण्डक कहाते हैं। उदाहरण आगे यथा स्थान मिलेंगे।

## छन्दोभेद।

हिन्दी भाषा में बहुत प्रकार के छन्द होते हैं। परन्तु यहाँ हम उन्हीं मुख्य २ छन्दों का वर्णन करते हैं जो अधिक व्यवहार में आते हैं। विद्यार्थी यदि इन्हें सीख लेंगे तो पद्य-रचना में छन्दोभङ्ग की अशुद्धियाँ उनसे कभी नहीं होंगी।

पहले मात्रावृत्त के सोदाहरण नियम नीचे लिखे जाते हैं। इनमें मात्रा की गणना होती है। हिन्दी में कहीं २ दीर्घ को भी ह्रस्व उच्चारण से लघु ही मान कर एक मात्रा गिनते हैं।

समवृत्तों के चारों चरण एक समान होते हैं। कम से कम दो चरणों में अन्त्यानुप्रास [तुकबन्दी] होना उचित है। अनुप्रास रहित भी छन्दोरचना हो सकती है। पर, अनुप्रास रहने से पद्यों में एक प्रकार का लालित्य आ जाता है।

१३ मात्रा का "उल्लाला" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में १३ मात्रायें होती हैं।]

सेवहु हरि सरसिज चरण, गुणगण गावहु प्रेमकर।
पावहु मन में भक्ति को, और न इच्छा जानि यह॥
[ भानुकवि ]

१६ मात्रा का "चौपाई" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्रायें होती हैं। लघु गुरु और विश्राम के भेद से यह छन्द कई प्रकार का होता है।]

बरसहिं जलद भूमि नियराये। यथा नवहिं बुध विद्या पाये॥
बुँद अघात सहै गिरि कैसे। खल के वचन संत सह जैसे॥
( रामायण )

१६ मात्रा का "सुमेरु" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्रायें होती हैं और १२ तथा ७ मात्रा पर विश्राम होता है।]

बुरा है माँगना कुछ भी किसी से;
मनस्वी हैं दुखी जग में इसीसे।
दया उन पर बनाये पेट ! रहना;
न उनको भी पड़े अपमान सहना॥ ३॥ [रा० च० उ०]

२४ मात्रा का "रोला" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में २४ मात्रायें होती हैं। इसके भी कई भेद हैं।]

जहाँ परस्पर प्रेमलता है नहिं लहराती,
वहाँ ध्वजा है कलह कपट की नित फहराती।
प्रणय कुसुम में कीट स्वार्थ का जहाँ समाया।
वहाँ हुई सुख और शान्ति की कलुषित काया॥[अ०सि०उ०]

२६ मात्रा का "गीतिका" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में २६ मात्रायें होती हैं। इनके भी विश्राम-भेद से कई भेद होते हैं। ]

दासता में सुख किसीको हो नहीं सकता कभी,
किन्तु उसके शीस पर हैं दुःख आ पड़ते सभी।
वेच दी निज देह को जिसने धनाशा में अहो,
रात दिन परतन्त्रता का दुःख उसको क्यों न हो॥
[ रा० च० उ० ]

२७ मात्रा का "सरसी" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में १६–११ के विश्राम से २७ मात्रायें होती हैं। ]

मोपर कृपा करहु अब स्वामी, अन्तर्यामी आप।
ऐसे ही मनमाँहि विचारो, काटो मेरे पाप॥
तुम बिन आन दृष्टि नहिं आवे, कीजै जाको जाप।
तुमहि बतावो ध्याऊँ जाको, जो जारे मम ताप॥
[भानुकवि]

२८ मात्रा का "हरिगीतिका" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में २८ मात्रायें होती हैं। इसे लोग बहुधा 'हरिगीतिका' के स्थान पर केवल छन्द कहते हैं। सगण, दो जगण, भगण, रगण, सगण और एक लघु गुरु होने से भी यह छन्द बनता है। ]

केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिही निवारई।
मानहु सरोष भुअंग भामिनि बिषम भाँति निहारई॥
दोउ वासना रसना दसनवर मरमु ठाहरु देखई।
तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम कौतुक लेखई॥
[रामायण]

३० मात्रा का "ताटङ्क" छन्द।

(इसके प्रत्येक चरण में ३० मात्रायें होती हैं और १६ तथा १४ मात्राओं पर प्रायः विश्राम होता है। इसको कोई कोई "चौवोला" छन्द भी कहते हैं।)

भूपाज्ञा से राज्य छोड़कर आज राम वन जावेंगे;
सेंत मेंत में भारत के सम्राट् भरत वन जावेंगे।
इस कुमन्त्र को सुनकर लक्ष्मण शोकसिन्धु में मग्न हुए;
सभी मनोरथ उनके मन के पल ही भर में भग्न हुए॥
(रा० च० उ०)

(१०-८-१२ के विश्राम से भी इसमें ३० मात्रायें होती हैं। इसे "चवपैया" कहते हैं।)

भे प्रगट कृपाला, दीनदयाला, कौशल्या हितकारी।
हर्षित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप निहारी॥
लोचन अभिरामा, तन घनश्यामा, निज आयुध भुज चारी॥
भूषन वनमाला, नयन विशाला, शोभा सिन्धु खरारी॥
(रामायण)

३१ मात्रा का "वीर" छन्द।

(इसके प्रत्येक चरण में ३१ मात्रायें होती हैं। विश्राम प्रायः १६ और १५ मात्राओं पर होता है।

एकी समय हाय! हम दोनों मर जावें यदि मीत समीर,
करके अपना वज्र कलेजा तो फिर करना यह तदबीर।
मेरा भस्म और उसका भी किसी भाँति कर देना एक॥
इसी भाँति हा! पूरी होवे मिलने की यह मेरी टेक॥
(रा० च० उ०)

(८-८-१५ के विश्राम से भी यह छन्द ३१ मात्रा का होता है। इसे कोई २ "आल्हा" भी कहते हैं।)

सुमिरि भवानी, जगदम्बा का, श्री शारद के चरन मनाय।
आदि सरस्वति, तुम का ध्यावों, माता कण्ठ बिराजौ आय।
जोति बखानों, जगदम्बा कै, जिनकी कला बरनि ना जाय।
शरद चन्द सम आनन राजै, अति छवि अङ्ग अङ्ग रहि छाय॥
(भानुकवि)

(बहुत से लोग ३० और ३१ मात्रा वाले छन्दों के चरणों को मिला कर भी छन्द रचते हैं।

राह देखती हो जो मेरी खिड़की पर वह खड़ी उदास।
धीरे धीरे तुम भी निधरक जाना चले उसीके पास।
जो उसकी आँखों में आँसू हो तो तुरत सुखा देना,
तुम भी थके रहोगे प्यारे! अपनी प्यास बुझा देना।
(रा० च० उ०)

(बहुत से लोग ३० और २७ मात्रा वाले ताटङ्क और सरसी छन्दों के चरणों को मिला कर भी छन्द रचते हैं।)

सुनिये झार-खंड बनवासी, दया-शील हे वैरागी।
करके कृपा बता दो मुझको, कहाँ जले है वह आगी॥
मैं भटका फिरता हूँ बन में भूल गया हूँ राह।
जो तू मुझे वहाँ पहुँचा दे, यह गुण होय अथाह॥
(श्रीधर पाठक)

(७ मात्रा लेकर ४६ मात्रा तक के छन्द हो सकते हैं। इन में कुछ मुख्य २ प्रचलित ही छन्द लिखे गये हैं।)

नीचे कुछ ऐसे मात्रावृत्त लिखे जाते हैं जिनके सब चरणों में समान मात्रायें नहीं होतीं।

१२ और ७ मात्रा का "बरवै" छन्द।

(इसके विषम अर्थात् पहले तथा तीसरे चरणों में बारह बारह मात्रायें और सम अर्थात् दूसरे तथा चौथे चरणों में सात सात मात्रायें होती हैं।)

छात्रवृन्द ! प्रिय, हितकर, हिन्दी-प्रेम ॥
छोड़ेंगे न कभी यह, रक्खो नेम ॥

१३ और ११ मात्रा का "दोहा" छन्द।

(इसके पहले तथा तीसरे चरणों में तेरह २ मात्रायें और दूसरे तथा चौथे चरणों में ग्यारह २ मात्रायें होती हैं। इसके अनेकों भेद हैं।)

जे गरीब को आदरे, ते रहीम बड़ लोग।
कहां सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग ॥

(दोहा के उलटने से सोरठा हो जाता है। अर्थात् विषम चरण की मात्रायें सम में और सम की विषम में हो जाती हैं।)

जेहि सुमिरत सिधि होय, गणनायक करिवरवदन।
करहु अनुग्रह सोय, बुद्धिराशि शुभगुण सदन ॥
(रामायण)

रोला और उल्लाला मिश्रित "छप्पै" छन्द।

(आदि में रोला और अन्त में उल्लाला छन्द जोड़ने से 'छप्पै' बनता है।)

तेरी उन्नति मेघ ! देख कर हम सुख पाते;
चातक मोर कुरङ्ग आदि फूले न समाते।

सर, ऊसर, नद, नदी, और गिरि, गह्वर, कानन,
उन्मुख हो सोत्कण्ठ देखते तेरा आनन ॥
धन्य धन्य हे मेघ तू, शत्रु मित्र जिसके नहीं—
तेरे कर से विश्व में लाभ हुए किसके नहीं? ॥ (रा०च०उ०)

दोहा-रोला-मिश्रित "कुण्डलिया" छन्द।

( दोहे के अन्त में रोला छन्द जोड़ने पर कुण्डलिया बन जाती है। इसमें दोहे का आदि वाला पद अन्त में तथा दोहे का अन्तिम चरण रोले के आदि में रहता है। कहीं २ इनमें व्यतिक्रम भी हो जाता है।

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय ॥
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रंग काग सब भये अपावन ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो हे ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के ॥

विषम पद का आर्या छन्द।

( इसके पहले और तीसरे चरणों में १२ मात्रायें, दूसरे चरण में १८ मात्रायें और चौथे चरण में १५ मात्रायें होती हैं।

दुख सह कर भी सज्जन, पर दुख को वह न देख सकता है।
आतप सह कर भी तरु, छाया देता पथिक जन को ॥

( आर्या के पूर्वार्द्ध अर्थात् १२ तथा १८ मात्रा वाले प्रथम द्वितीय चरणों के समान उत्तरार्द्ध अर्थात् तीसरे और चौथे चरण भी हों तो वह गीति छन्द होता है और यदि उत्तरार्द्ध अर्थात् १२ और १५ मात्रा वाले तीसरे चौथे चरणों के समान पूर्वार्द्ध अर्थात् प्रथम द्वितीय चरण हों तो वह उपगीति छन्द होता है।)

अब आगे वर्णवृत्तों के कुछ प्रचलित सोदाहरण नियम लिखे जाते हैं। इनमें गणना वर्णों से की जाती है।

८ अक्षर का श्लोक, अनुष्टुप् वा पद्य छन्द।

[इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर रहते हैं। इसी से इसकी गणना वर्णवृत्त में होती है। यह छन्द बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ तक कि इसके नाम से प्रायः सभी पद्य उच्चरित होते हैं। यह छन्द अपने ढंग का निराला है। इसमें अक्षरों के गुरु लघु होने का जो साधारण नियम है वह कभी मिलता है और कभी नहीं। यह अपवाद स्वरूप गिना जाता है।]

[इसके चारों चरणों में पाँचवें अक्षर लघु और छठे अक्षर गुरु होते हैं। दूसरे और चौथे चरण के सातवें अक्षर लघु और पहले तीसरे दीर्घ होते हैं। अन्य वर्णों के लिये कोई नियम नहीं है।]

काम जो करना हो तो, जी लगा करके करो।
छोड़ दो जी न चाहे तो, नहीं वे मन के करो॥

११ अक्षर का "शालिनी" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में मगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं।]

आके जाना चाहती है कहाँ तू।
बैठी मेरे चित्त में है यहाँ तू॥
लेती है क्या तू प्रतीक्षा-परीक्षा।
क्या ऐसी ही है प्रिये! प्रेम-दीक्षा॥ [मै०श०गुप्त]

११ अक्षर का "भुजङ्गी" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में तीन यगण और एक लघु और एक गुरु होते हैं।]

सुगंधै मलै ढंग सो लायकै।
सुखावे सिया केश को न्हायकै॥
मुखौ पै लसै तासु शोभा भली।
मनौ चन्द्र चूमै "भुजङ्गी" लली॥ [भाषाप्रभाकर]

११ अक्षर का "इन्द्रवज्रा" छन्द।

( इसके प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। )

क्या कौमुदी क्या मणिमञ्जु-माला।
है काँपती दीप-शिखा विशाला॥
जो सामने हो वह दिव्य बाला।
तो अन्ध भी देख उठे उजाला॥ [मै०श०गुप्त]

११ अक्षर का "उपेन्द्रवज्रा" छन्द।

(इसके प्रत्येक चरण में यगण, जगण और दो गुरु होते हैं।)

करो सदा यत्न दृढ़व्रती हो। परिश्रमी और यमी कृती हो॥
तभी तुम्हारा सब नाम लेंगे। तभी सभी कारज सिद्ध होंगे॥

११ अक्षर का "उपजाति" छन्द।

[ ऊपर के दोनों छन्दों के चरण मिलने से यह छन्द बनता है। ऊपर के दोनों छन्दों में केवल आदि के हीं गण भिन्न हैं। ]

सारी प्रजा को प्रहरी-स्वरूप।
है भारवाही बस भृत्य भूप॥
उसे नहीं योग विराम का ही।
है राज्यभोगी वह नाम का ही॥ [ मै०श०गुप्त ]

१२ अक्षर का "वंशस्थ" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में जगण तगण, जगण रगण रहते हैं]

अतीव उत्कण्ठित ग्वाल बाल हो,
सवेग जाते रथ के समीप थे।

परन्तु होते अति ही मलीन थे,
न देखते थे जब वे मुकुन्द को ॥ [अ० सिं० उ०]

१२ अक्षर का "इन्द्रवंशा" छन्द ।

[इसके प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और रगण होते हैं।]

योंही, बड़ा हेतु हुए बिना कहीं,
होते बड़े लोग कठोर यों नहीं।
वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,
ज्यों अद्रि अम्भोनिधि में प्रलुप्त हैं ॥ [मै०श० गुप्त]

१२ अक्षर का "भुजङ्गप्रयात" छन्द ।

[चार यगण का यह छन्द होता है।]

हुए राम सिंहासनारूढ़ जैसे,
वहाँ से मिटा दुःख का नाम तैसे।
स्वयं सर्वदा सौख्य सर्वत्र छाया।
मनो सत्य भी राम का लौट आया ॥[रा०च०उ०]

१२ अक्षर का "त्रोटक" छन्द ।

[इसके प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।]

जय राम रमा रमनं समनं।
भव ताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेश सुरेश रमेस विभो।
सरनागत माँगत पाहि प्रभो ॥ [रामायण]

१२ अक्षर का "लक्ष्मीधर" छन्द ।

[इसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं।]

अच्युतं केशवं राम नारायणं।
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिं॥
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं।
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे ॥ [स्फुट]

१२ अक्षर का "द्रुतविलम्बित" छन्द।

जनम से पहले विधि ने दिये:—
रजत, राज्य रथादि तुम्हें स्वयं।
तदपि क्यों उसको न सराहते,
मचलते चलते तुम हो वृथा॥ [रा० च० उ०]

१३ अक्षर का "मञ्जुभाषिणी" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होते हैं।]

सजि साज गौरि सदनै गई लिये,
कर पुष्प माल सिय माँगती हिये।
वर देहु राम जन तोष कारिणी॥
सुनि एवमस्तु वद मञ्जुभाषिणी॥ [भानुकवि]

१४ अक्षर का "वसन्ततिलका" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण दो जगण और दो गुरु होते हैं।]

ऐसे मनोरम विभामय काल में भी,
म्लाना नितान्त अवलोक सरोजिनी को,
थे यों व्रजेन्द्र कहते ललना सती को—
स्वामी बिना सब तमोमय है दिखाता॥ [अ०सिं०उ०]

१५ अक्षर का "मालिनी" छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में दो नगण एक मगण और दो यगण होते हैं।]

सर निकट अकेली क्या गई है नहाने?
डर कर मुझको ही या गई है बुलाने?
स्मरण कर उसे हा! शोक होता महा है,
वह विधुरुचि शाली भाववाली कहाँ है?॥ [रा०च०उ०]

१७ अक्षर का "शिखरिणी" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और एक लघु तथा एक गुरु होते हैं।]

बिना फूला ही जो यह सुमन था शुष्क करना,
न था पृथ्वी में जो सरस इसका गन्ध फरना।
विधे! तो क्यों ऐसा रुचिर इसको निर्मित किया,
लिया क्या तूने हा! श्रम विफल सारा कर दिया॥

[मै० श० गुप्त]

१७ अक्षर का "मन्दाक्रान्ता" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं।]

प्यासा प्राणी श्रवण कर के वारि के नाम ही को,
क्या होता है पुलकित कभी जो उसे पी न पावे।
प्यारे होता नहिं तरणि का नाम ही त्राणकारी,
नौका ही है शरण जल में मग्न होते जनों की॥

[अ० सिं० उ०]

१८ अक्षर का "चञ्चरी" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में रगण, सगण, दो जगण, भगण और रगण रहते हैं।]

री सजै जु भरी हरी गुण से रहे नित वाणि तू।
औ सदा लह मान सन्त समाज में जग माँहि तू॥
भूलि के जु विसारी राम हि आन के गुण गाइये।
चम्पकै सम ना हरी जन चञ्चरी मन भाइ है॥ [भानुकवि]

१९ अक्षर का "शार्दूलविक्रीडित" छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, दो तगण और एक गुरु होते हैं।]

ऊँचा शीश सहर्ष शैल करके, था देखता व्योम को।
या होता अति ही सगर्व वह था सर्वोच्चतादर्प से।
या वार्ता वह था प्रसिद्ध करता सामोद संसार में।
मैं हूँ सुन्दर मानदण्ड व्रज की शोभामयी भूमि का॥
[ श्र० सिं० उ० ]

२१ अक्षर का "स्रग्धरा" छन्द।

आता है जो जहाँ से विवश वह वहीं अन्त में लौट जाता,
सोचो तो बन्धनों में पड़ कर पशु सा कौन है शान्ति पाता?
आना जाना हमारा जब तक न मिटे, है कहाँ मुक्ति माता?
उद्योगी उद्यमी है पुरुष बस वही जो उसे है मिटाता॥
[ मै० श० गुप्त ]

सवैया।

सवैया के प्रत्येक चरण में २२ अक्षर से लेकर २६ अक्षर तक होते हैं। इसमें प्रायः सब गण एक से रहते हैं। आदि के और अन्त के गुरु लघु के नियम से इसके कुछ भेद होते हैं। इससे इसके चारों चरणों में आदि अन्त के अक्षर नियम से गुरु और लघु होते हैं। इसके कई सूक्ष्म भेद होते हैं।

२२ अक्षर का "मदिरा" नामक सवैया छन्द।

[ इसमें सात भगण और एक गुरु प्रत्येक चरण में है। ]

दान करो गुण गान गिरा, परनिन्दक निष्फल काम रहें।
दक्षिण देव गणेश रहें, बहु विघ्न न क्यों फिर वाम रहें॥
मा कमला अनुकूल रहे, धन-धान्य भरे सब धाम रहें।
भक्षक का भय है न हमें बस रक्षक राघव राम रहें॥
[ मै० श० गुप्त ]

२३ अक्षर का "मत्तगयन्द" नामक सवैया छन्द।

[इसमें सात भगण और दो गुरु प्रत्येक चरण में हैं। अङ्कित अक्षर दीर्घ हैं और छन्दोनियम और उच्चारण में ह्रस्व से हैं।]

सेस गनेस महेस दिनेस सुरेस हू जाहि निरन्तर गावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अछेद अभेद सुवेद बतावैं।
नारद से सुक व्यास रहें पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

[ रसखानि ]

२४ अक्षर का "किरीट" नामक सवैया छन्द।

[ इसके प्रत्येक चरण में आठ भगण हैं। अङ्कित अक्षर दीर्घ होने पर भी ह्रस्व से उच्चरित होते हैं। ]

मानुस हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बसु मेरो चरौं नित नन्द की धेनु मझारन॥
पाहन हो तो वही गिरि को, जो भयो ब्रज छत्र पुरन्दर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, उन कालिन्दी कूल कदम्ब के डारन॥१॥

[ इसके प्रत्येक चरण में सात सगण हैं। इसका नाम "दुर्मिल" छन्द है। यह भी सवैया का भेद है। ]

पद कंजनि मंजु बनी पन ही धनु ही सर पंकज पाणि लिये।
लरिका संग खेलत डोलत है सरयूतट चौहट हाट हिये॥
तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये।
न रते खर शूकर श्वान समान कहौं जग में फल कौन जिये॥

[ कवित्त रामायण ]

२५ अक्षर का "सुन्दरी" नामक सवैया छन्द।

[ इसमें आठ सगण और एक गुरु होते हैं। ]

सुख-शान्ति रहे सब ओर सदा अविवेक तथा अघ पास न पावें।
गुण-शील तथा बल बुद्धि बढ़ें हठ, बैर, विरोध घटें मिट जावें॥

सब उन्नति के पथ में विचरें रति-पुरुष परस्पर पुण्य कमावें।
दृढ़ निश्चय और निरन्थय होकर निर्भय जीवन में जय पावें॥
[ मै० श० गुप्त ]

२६ अक्षर का "सुख" नामक सवैया छन्द।

[इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और दो लघु होते हैं।]

सब बात सहें, कड़वी न कहें,
कुछ, मानस में अरु मैल न लावत।
पर के अपवाद, विवाद, वृथा हठ,
रंचक हूँ सपने नहीं भावत॥
सुन के अपनो गुण गान रहें चुप,
दोष छिपा सब के गुन गावत।
जिसमें गुण ये सब हों भरपूर,
वही नर साधु महान कहावत॥ ८॥

घनाक्षरी कवित्त वा मनहरन छन्द।

यह छन्द तीन प्रकार का होता है। क्रमशः इनके प्रत्येक चरण में ३१, ३२, ३३ अक्षर होते हैं। इनमें गुरु लघु का कोई नियम नहीं है। पर यह देखना आवश्यक है कि उच्चारण और विश्राम में शैथिल्य न हो। सोलह अक्षर पर पहला विश्राम होना चाहिये और उच्चारण धारावाहिक हो। ३१ में अन्तिम अक्षर दीर्घ और ३२ में लघु तथा ३३ में भी लघु होते हैं। प्रायः ३३ अक्षर के कवित्त में अन्तिम पद द्विरुक्त होते हैं।

३१ अक्षर का कवित्त।

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार वंशीवट पै।
कहैं 'पद्माकर' अखंड रास मण्डल पै,
मंडित उमड़ि महा कालिन्दी के तट पै॥

छिति पर छान पर छाजन छतान पर,
ललित लतान पर लाड़िली के लट पै
आई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहि,
पाई छबि आज ही कन्हाई के मुकुट पै
भ्रमर कदम्बन पै गान कै उड़ान लागे,
होत बलहीन बिरहीन तन थर थ
'ललित' हरित लहरान लागे तरुवर,
सीरी सीरी चलन समीर लागी सर स
दामिनि के जोर चहुँ ओरते लखान लागे,
चातक चकोर मोर सोरन के भर भ
झर झर धर धर धार बाँधि घूमि घन,
नभ में सघन घहरान लागे घर घ

३२ अक्षर वाला कवित्त ।

उमड़े हैं घन के घमण्ड घमसान घोर,
चपला चपल पुनि जात है फरकि फरकि
इन्द्र के धनुष राजे भेक बाजने से बाजे,
बकहू की पाँति उठि चली है खरकि खरकि
कवि 'अम्बादत्त' सोभा पावस की पूरी लसी,
बोलत हैं मोर अति आनन्द लरकि लरकि
धरकि धरकि उठी छाती विरही जन की,
नदिन की धार धाई चली है ढरकि ढरकि

शुभम्भूयात् ।

